

केनरा बैंक की  
द्विमासिक गृह पत्रिका  
अप्रैल 2024 – मई 2024 | 294



श्रेयस  
Shreyas

Canara Bank's  
Bimonthly House Magazine  
April 2024 - May 2024 | 294

## श्रेयस प्रतियोगिता – विशेषांक Shreyas Contest - Special Edition



### GET A FREE TOUR TO

- \* SINGAPORE
- \* MT. ABU
- \* RISHIKESH
- \* NANE GHAT

### AN INSIGHT INTO ENVIRONMENT, SOCIAL AND GOVERNANCE

TALES OF VULNERABILITY  
AND STRENGTH

WHEN REALITY  
MEETS HUMOUR: THE  
DAILY STRUGGLES  
WE ALL LAUGH  
ABOUT

### GRATITUDE UNBOUND

*Poems that celebrate life's blessings*

*From palette to perception*

*A glimpse into the artists' mind*

*Freezing moments in  
time - discovering beauty  
through the lens*



प्रधान कार्यालय में दिनांक 18.04.2024 को आयोजित एचआर ट्रांसफॉर्मेशन टूल लॉन्च इवेंट में प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री के सत्यनारायण राजु, कार्यपालक निदेशक श्री देबाशीष मुखर्जी, श्री अशोक चंद्र तथा श्री हरदीप सिंह अहलूवालिया एवं साथ में एचआर ट्रांसफॉर्मेशन टीम।

MD & CEO Sri. K Satyanarayana Raju along with EDs Sri. Debashish Mukherjee, Sri Ashok Chandra, and Sri Hardeep Singh Ahluwalia and the HR Transformation Team at the HR Transformation Tool Launch Event held at HO on 18.04.2024.



बेंगलूरु में आयोजित एमडी व सीईओ संपर्क कनेक्ट विद टुमॉरोज़ ट्रेंडसेटर्स कार्यक्रम में प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी श्री के सत्यनारायण राजु। कार्यपालक निदेशक, श्री अशोक चंद्र, श्री डी सुरेंद्रन, मुख्य महाप्रबंधक, मानव संसाधन विभाग, महाप्रबंधक श्री एम के रविकृष्णन एवं श्री अमिताभ चटर्जी, श्री शशिधर आचार्य सहायक महाप्रबंधक श्री राजीव कुमार सिन्हा, तथा एचआरओडी के स्टाफ सदस्य भी तस्वीर में नजर आ रहे हैं।

MD & CEO Sri. K Satyanarayana Raju at Sampark, MD & CEO Connect with Tomorrow's Trendsetters programme held in Bengaluru. ED, Sri. Ashok Chandra, CGM, HR Wing, Sri. D Surendran, GMs Sri. M K Ravikrishnan, Sri. Shreenath Joshi, Sri. Amitabh Chatterjee, DGM (D) Sri. Shashidhar Acharya, AGM Sri. Rajeev Kumar Sinha, and staff from HROD also seen in the picture.

## श्रेयस - SHREYAS

SINCE 1974

केनरा बैंक की द्विमासिक गृह-पत्रिका  
Bimonthly House Magazine of Canara Bank  
अप्रैल 2024 - मई 2024 | 294 / April 2024 - May 2024 | 294

### ADVISORY COMMITTEE

K Satyanarayana Raju  
Ashok Chandra  
S K Majumdar  
D Surendran  
T K Venugopal  
Ipsita Pradhan  
E Ramesh  
Someshwara Rao Yamajala  
Priyadarshini R  
Reenu Meena

#### EDITOR

Priyadarshini R

#### ASST. EDITORS

Winnie Panicker  
Vijay Kumar (Hindi)

सह संपादक (हिंदी)

रीनु मीना

#### Edited & Published by

Priyadarshini R

Senior Manager

House Magazine & Library Section  
HR Wing, HO, Bengaluru - 560 002.

Ph : 080-2223 3480

E-mail : hohml@canarabank.com  
for and on behalf of Canara Bank

#### Design & Print by

Blustream Printing India (P). Ltd.

#1, 2nd Cross, CKC Gardens,

Lalbagh Road Cross, Bangalore - 560 008.

Ph : 080-2223 0070 / 2223 0006.

The views and opinions expressed herein are not necessarily those of the Bank. Reproduction of the matter in any manner with the permission of the editor only. For private circulation only. Not for Sale.



श्रेयस प्रेयस मनुश्यमेत स्तौ संपरीत्य विविनक्ति धीरः//

(कठोपनिषद् II - 2)

Both good and pleasant approach us:

The wise on examining choose the good. (Kathopanishad II - 2)

### CONTENTS

- 2 प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश / MD & CEO's Message
- 4 संपादकीय / Editorial
- 5 New GMs Messages
- 8 A Journey through an Urban Wonder - Singapore - Safin Ahmed
- 12 यात्रा सूर्योदय से चंद्रोदय की - गौरव जोशी
- 15 ESG in Banking: An Ethical Journey to Sustainable Economic Growth - Deepthi Kishore
- 18 बैंकिंग-क्षेत्र में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन का प्रभाव - आशीष नैथानी
- 22 Fun corner
- 23 Home All - Bharathi D
- 26 मोबाइल फ़ोन के मनोरंजक किस्से - रोचक दीक्षित
- 28 Echoes of Thankfulness - Prashanth K
- 29 कृतज्ञता - अभिषेक गर्ग
- 30 Circle News
- 35 अंचल समाचार
- 38 Cartoon - Rasika N and Dheeraj Juneja
- 39 Wisdom Capsule
- 40 Business Plan Conference of select/first time CO/RO heads at Head Office, Bengaluru
- 42 Econ speak - Ipsita Pradhan
- 45 Happy Diwali! - Neha Chenani
- 48 अभयदान - विश्वनाथ प्रसाद साहू
- 50 Buzzed and Bitten - V Padmaja
- 53 गाय और गुलाब - मो. इमरान अंसारी
- 55 Impact of Environment, Social and Governance in the Banking Sector - Narinder Pal
- 58 बैंकिंग-क्षेत्र में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन का प्रभाव - प्रकाश माली
- 62 Graceful Thanks Symphony - Ankita Kumari
- 63 मैं कृतज्ञ हूँ - मोनालिसा पंवार
- 64 Winged Salvation - Gokilavani R.
- 66 पिता की सीख - धीरज जुनेजा
- 69 A Wintery Adventure: Motorcycle Journey to Mount Abu - Chitankumar Solanki
- 72 नयनाभिराम नानेघाट: उल्टा झरना - प्रकाश माली
- 75 Painting - Sankernath S and Murugan G
- 76 Sketch - Seema Sharma and Rasika N
- 77 Color Photography - Arjun K R and Rochak Dixit
- 78 Recipe Corner - Hagalakayi Ennegayi - S Vijaya
- 79 Book Review
- 80 Homage

प्रबंध निदेशक व  
मुख्य कार्यकारी अधिकारी  
का संदेश



MD & CEO's Message

प्रिय केनराइट्स,

सामूहिक प्रयास के प्रति व्यक्तिगत प्रतिबद्धता – यही वह चीज है जिसके माध्यम से एक टीम, एक संस्था कार्य करती है तथा एक समाज व सभ्यता आगे बढ़ती है  
– विंस लोम्बार्डी ।

मैं आपके अटूट समर्पण और कड़ी मेहनत के लिए आप सभी के प्रति गहन कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जिसने वित्त वर्ष 2023-24 में उत्कृष्ट निष्पादन हासिल करने हेतु बैंक को मजबूती और स्थिरता प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हमारे बैंक के मार्च, 2024 की वित्तीय स्थिति ने यह प्रदर्शित किया है कि एक कुशल कार्यबल कठिन परिस्थितियों में भी असाधारण उपलब्धियाँ हासिल कर सकता है।

हमारे बैंक के निवल लाभ में वर्षानुवर्ष 18.33% की वृद्धि हुई है, जबकि वैश्विक जमा वर्षानुवर्ष 11.29% बढ़ा है। मार्च, 2024 तक वैश्विक जमा राशि ₹13,12,366 करोड़ 11.29% (वर्षानुवर्ष) एवं वैश्विक अग्रिम (सकल) ₹9,60,602 करोड़ 11.34% (वर्षानुवर्ष) के साथ वैश्विक कारोबार 11.31% (वर्षानुवर्ष) बढ़कर ₹22,72,968 करोड़ हो गया। मार्च, 2024 तक बैंक की घरेलू जमा राशि 10.98% (वर्षानुवर्ष) की वृद्धि के साथ ₹12,14,951 करोड़ रही। मार्च, 2024 तक बैंक का घरेलू अग्रिम (सकल) 11.06% (वर्षानुवर्ष) बढ़कर ₹9,08,182 करोड़ हो गया। मार्च, 2024 तक खुदरा ऋण पोर्टफोलियो 11.68% (वर्षानुवर्ष) बढ़कर ₹1,56,414 करोड़ हो गया। मार्च, 2024 तक आवास ऋण पोर्टफोलियो सालाना आधार पर 10.81% बढ़कर ₹93,482 करोड़ हो गया तथा कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों के लिए अग्रिम राशि 18.69% (वर्षानुवर्ष) बढ़कर ₹2,53,206 करोड़ हो गई। हमारी सकल अनर्जक आस्तियाँ (जीएनपीए) अनुपात मार्च, 2024 में घटकर 4.23% हो गई, जो दिसंबर, 2023 में 4.39% तथा मार्च, 2023 में 5.35% थी। निवल अनर्जक आस्तियाँ (एनएनपीए) अनुपात मार्च, 2024 में घटकर 1.27% हो गया, जो दिसंबर, 2023 में 1.32% तथा मार्च, 2023 में 1.73% था। प्रावधान कवरेज अनुपात (पीसीआर) मार्च, 2024 में 89.10% रहा, जोकि दिसंबर, 2023 में 89.01% तथा मार्च, 2023 में 87.31% था। मार्च, 2024 तक हमारा सीआरएआर 16.28% (दिसंबर, 2023 तक 15.78%) रहा। जिसमें से टियर-ल 13.95% (दिसंबर, 2023 तक 13.38%), सीईटी1 11.58% (दिसंबर, 2023 तक 11.28%) और टियर-ल्ल 2.33% (दिसंबर, 2023 तक 2.40%) है। बैंक ने वित्त वर्ष 2023 के दौरान एटी-1 बांड के माध्यम से सफलतापूर्वक ₹3403 करोड़ की पूंजी जुटाई है। हमने क्रमशः 40% और 18% मानदंड की तुलना में मार्च, 2024 तक प्राथमिकता क्षेत्र में 46.08% तथा कृषि ऋण में एएनबीसी के 22.71% पर हमारा लक्ष्य प्राप्त कर लिया है। छोटे और सीमांत किसानों को दिया जाने वाला ऋण एएनबीसी का 16.08% रहा, जबकि मानदंड 10.00% था। कमजोर वर्गों को ऋण 12.00% मानदंड के मुकाबले एएनबीसी का 22.36% रहा। सूक्ष्म उद्यम को ऋण 7.50% मानदंड की तुलना में एएनबीसी का 9.92% रहा। गैर कॉर्पोरेट किसानों को दिया जाने वाला ऋण 13.78% मानदंड के मुकाबले एएनबीसी का 19.13% रहा। 31.03.2024 तक, 3103 ग्रामीण, 2751 अर्ध-शहरी, 1907 शहरी एवं 1843 मेट्रो शाखाओं के साथ बैंक की कुल 9604 शाखाएँ हैं तथा 10209 कुल एटीएम हैं।

हमारा बैंक नवोन्वेषी तथा सामरिक उत्पाद और सेवाओं की शुरुआत करने में सदैव

Dear Canarites,

*Individual commitment to a group effort-that is what makes a team work, a company work, a society work, a civilization Work*  
- Vince Lombardi

I want to express my deepest gratitude to all of you for your unwavering dedication and hard work, which have significantly contributed to the banks strength and stability to achieve excellent performance in FY2023-24. Our March 2024 financials demonstrated that a skilled workforce can accomplish extraordinary feats under demanding circumstances.

Our Net Profit was up by 18.33% YoY Global Deposit up by 11.29% YoY. Global Business increased by 11.31% (y.o.y) to ₹22,72,968 cr as at March 2024 with Global Deposits at ₹13,12,366 cr 11.29% (y.o.y) and Global Advance (gross) at ₹9,60,602 cr 11.34% (y.o.y). Domestic Deposit of the Bank stood at ₹12,14,951 Cr as at March 2024 with growth of 10.98% (y.o.y). Domestic Advances (gross) of the Bank stood at ₹9,08,182 Cr as at March 2024 grew by 11.06% (y.o.y). Retail lending Portfolio increased 11.68% (y.o.y) to ₹1,56,414 Cr as at March 2024. Housing Loan Portfolio increased 10.81% y.o.y to ₹93,482 Cr Advances to Agriculture & Allied grew by 18.69% (y.o.y) to ₹2,53,206 Cr as at March 2024. Our Gross Non-Performing Assets (GNPA) ratio reduced to 4.23% as at March 2024 down from 4.39% as at Dec 2023, 5.35% as at March 2023. Net Non-Performing Assets (NNPA) ratio reduced to 1.27% as at March 2024 down from 1.32% as at Dec 2023, 1.73% as at March 2023. Provision Coverage Ratio (PCR) stood at 89.10% as at March 2024 against 89.01% as at Dec 2023, 87.31% as at March 23. Our CRAR stood at 16.28% as at March 2024 (15.78% as at Dec. 2023). Out of which Tier-I is 13.95% (13.38% as at Dec. 2023), CET1 is 11.58% (11.28% as at Dec 2023) and Tier-II is 2.33% (2.40% as at Dec 2023). Bank has successfully raised capital during FY23 through: AT-1 Bonds: ₹3403 Cr. We have achieved our targets in Priority Sector at 46.08% and Agricultural Credit at 22.71% of ANBC as at March 2024, as against the norm of 40% and 18% respectively. Credit to Small and Marginal Farmers stood at 16.08% of ANBC, against the norm of 10.00%. Credit to Weaker Sections stood at 22.36% of ANBC, against the norm of 12.00%. Credit to Micro Enterprises stood at 9.92% of ANBC, against the norm of 7.50%. Credit to Non Corporate Farmers stood at 19.13% of ANBC, against the norm of 13.78%. As on 31.03.2024, the Bank has 9604 Number of Branches, out of which 3103 are Rural, 2751 Semi Urban, 1907 Urban & 1843 Metro along with 10209 ATMs.

अग्रणी रहा है। नए उत्पादों की शुरुआत के साथ नए वित्तीय वर्ष की सकारात्मक शुरुआत हुई है, जो उद्योग जगत में एक अनूठी पहल है। केनरा एंजेल, केनरा हील, केनरा रेडी कैश, केनरा माय मनी एवं केनरा एसएचजी। मैं सभी केनराइट्स से हमारे उत्पादों को प्रभावी ढंग से बढ़ावा देने तथा अधिक-से-अधिक कारोबार अर्जित करने हेतु अधिकतम ग्राहकों तक इसको पहुँचाने का अनुरोध करता हूँ।

मानव संसाधन निस्संदेह हमारे संगठन का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ है। हमने “प्रोजेक्ट आरोहण” की शुरुआत की है – जो कि एक मानव संसाधन रूपांतरण परियोजना है जिसका उद्देश्य बैंक के रणनीतिक लक्ष्यों को संरेखित करते हुए मानव संसाधन कार्य पद्धति की पुनःकल्पना और पुनर्गठन करना है। इस मानव संसाधन टूल का शुभारंभ कार्यकुशलता में सुधार लाने और हमारे कार्यबल को सशक्त बनाने की दिशा में हमारे निरंतर और समर्पित प्रयासों का प्रमाण है।

मैं अपने सभी केनराइट्स से अपील करता हूँ कि हमारे बैंक के बारे में सदैव सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए बात करें। आप बैंक को प्रतिबिंबित करते हैं। ग्राहक सेवा को सदैव प्राथमिकता दें। ग्राहकों के साथ आपसी संबंध स्थापित करने से संगठन के प्रति आपकी प्रतिबद्धता परिलक्षित होती है। अपने कार्य को अपनाते हुए अपनी जिम्मेदारियों को स्वीकारें। यह हमारे संगठन की सफलता तथा आपके व्यक्तिगत विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। आपको सौंपे गए कार्यों की न केवल जिम्मेदारी लें, बल्कि उन कार्यों से होने वाले परिणामों के लिए भी उत्तरदायी रहें। अपने तात्कालिक कर्तव्यों से परे विचार करें और समझें कि किस प्रकार आपकी भूमिका हमारे बैंक के बड़े लक्ष्यों और दूरदर्शिता के अनुरूप है। जब आप वास्तव में स्वामित्व की भावना से कार्य करते हैं, तो आप प्रतिक्रियात्मक होने के बजाय सक्रिय होते हैं। आप समस्याओं के उत्पन्न होने से पहले ही उनका अनुमान लगा लेते हैं तथा किसी दूसरे को उन्हें इंगित किए जाने का मौका दिए बगैर उनका समाधान तलाश लेते हैं। अपने काम के प्रति स्वयं जवाबदेह रहें। उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्ध रहें। उच्च मानक और गुणवत्ता के प्रति प्रतिबद्धता प्रभावी होती है जो दूसरों को भी उनका निष्पादन बेहतर करने के लिए प्रेरित करती है। एक टीम के खिलाड़ी के रूप में कार्य करें, जो सहकर्मियों का समर्थन करता हो, अपना ज्ञान साझा करता हो तथा सामान्य लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सहयोगात्मक रूप से काम करता हो। बैंकिंग उद्योग एवं हमारे संगठन में होने वाली नवीनतम विकासन से स्वयं को अद्यतन रखें तथा आप जो भी करते हैं उस पर गर्व की अनुभूति करें।

हम सभी एक महान उद्देश्य के अभिन्न अंग हैं। हमारी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति उत्साह, निष्ठा और स्वामित्व की भावना के साथ अपना योगदान दें। अपने दिए गए योगदान पर गर्व करें, भले ही वे कितने भी छोटे क्यों न हों। हमारे संगठन के भीतर प्रत्येक भूमिका महत्वपूर्ण है और आपका समर्पण ही हमें आगे बढ़ाता है। आपकी पहचान आपके कार्यों से होनी चाहिए। उत्कृष्ट सेवा प्रदान करना जारी रखें और सफलता स्वाभाविक रूप से आपके पीछे आएगी।

मुझे विश्वास है कि आपके समर्थन, प्रतिबद्धता और समावेशी भागीदारी के साथ, हम आने वाले दिनों में और भी बड़ी उपलब्धियाँ हासिल करेंगे। मुझे हेलेन केलर का एक उद्धरण याद आता है “अकेले हम जितना कम काम कर सकते हैं, साथ मिलकर हम उससे कहीं अधिक कर सकते हैं,” जो कि हमारे मूलमंत्र “रहें संग, बढ़ें संग” को परिभाषित करता है।

## आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं !!

मंगल कामनाओं सहित,

आपका,

के. सत्यनारायण राजु

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी

Our bank has always been at the forefront in bringing innovative and strategic products and services. The new financial year has begun in a positive note with launching of new products which is one of its kind in the industry, namely Canara Angel, Canara Heal, Canara Ready Cash, Canara My money and Canara SHG. I call upon all Canarites to promote our products effectively and ensure that it reaches maximum number customers to attract optimum business.

Human resources is undoubtedly the most crucial asset for our organization. We have launched “Project Aarohan” - A HR transformation project which aims at reimagining and redesigning HR functions to align with Bank's strategic goals. The launch of this HR tool is a testament to our continuous and dedicated efforts towards improving the efficiency and empowering our workforce.

I would appeal to all my Canarites to always speak positive about our bank. You are the face of the bank. Prioritize customer service. Recognising customers by their name demonstrates your commitment to the organization. Own your job and embrace your responsibilities. This is vital for the success of our organization and your personal growth too. Take responsibility not just for the tasks you are assigned, but for the outcomes of those tasks. Look beyond your immediate duties and understand how your role fits into the bigger picture of our Banks goals and vision. When you truly own your job, you are proactive rather than reactive. You anticipate problems before they arise and seek solutions rather than waiting for someone else to point them out. Hold yourself accountable for the work. Be committed to excellence. High standards and commitment to quality are contagious which could inspire others to elevate their performances as well. Be a team player who supports colleagues, shares knowledge and works collaboratively to achieve common goals. Keep yourself updated with the latest developments in the banking industry and our organization and take pride in what you do.

We are all a part of a larger mission. Our success depends on each of us doing our part with enthusiasm, integrity and sense of ownership. Be proud of your contributions no matter how small they seem. Every role within our organization is crucial and your dedication is what drives us forward. Let your actions speak for themselves. Continue delivering outstanding service, and success will naturally follow.

With your support commitment and inclusive involvement, I am confident that we will attain even greater milestones in the coming days. I am reminded of a quote by Heller Keller “Alone we can do so little, together we can do so much” which reiterates our mantra - “Together We Can”.

*Wish you all the very best*

With warm regards,

Yours sincerely

**K. Satyanarayana Raju**

Managing Director & CEO

## संपादकीय



## Editorial

प्रिय साथियों,

वर्तमान बैंकिंग परिदृश्य में – सटीकता, अनुपालन तथा जोखिम प्रबंधन अक्सर हमारी दैनिक गतिविधियों का अंग होती हैं। हालाँकि, इन संरचनाबद्ध प्रक्रियाओं के किसी कोने में हमारे स्टाफ सदस्यों की असीम रचनात्मकता की अपर्युक्त क्षमता स्रोत अंतर्निहित होती है। रचनात्मकता केवल एक विशेषता नहीं है; यह एक गतिशील शक्ति है जो हमारे जीवन को गहराई से आकार देती है। न्योन्मेष की भावना को प्रज्वलित करने से लेकर समस्या समाधान के कौशल को बढ़ावा देने तक, रचनात्मकता व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास की आधारशिला है। यह आत्म-अभिव्यक्ति का एक स्वरूप है – एक ऐसा साधन जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त करते हैं। कला, लेखन, संगीत या अन्य रचनात्मक विधाओं के माध्यम से व्यक्ति को समाज के सामने अपने अद्वितीय दृष्टिकोण को संप्रेषित करने के लिए मंच मिल जाता है। यह प्रक्रिया न केवल आत्म-जागरूकता बढ़ाती है, बल्कि संपूर्णता एवं हर्ष की भावना भी पैदा करती है। रचनात्मक गतिविधियों में तल्लीन रहने से मानसिक स्वास्थ्य और खुशहाली जैसे अनेक लाभ होते हैं। चित्रकला, लेखन या किसी अन्य कलात्मक प्रयास के माध्यम से रचनात्मक अभिव्यक्ति तनाव मुक्ति, भावनात्मक लेखन तथा स्वयं की देखभाल करने के लिए एक रास्ता प्रदान करती है।

प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाली श्रेयस प्रतियोगिता का उद्देश्य हमारे कर्मचारियों की कलात्मक एवं रचनात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने का मंच प्रदान करना है, जिसमें चित्रकला, स्केचिंग तथा मूल लिखित सामग्री आदि शामिल हैं। प्रतियोगिता में भाग लेना मात्र पहचान बनाना ही नहीं है; अपितु यह एक ऐसी संस्कृति को जन्म देगा, जिसमें नई सोच के साथ आगे बढ़ने की उमंग होगी तथा जिसकी चारों ओर प्रशंसा की जाएगी। अपने रचनात्मक प्रयासों को साझा करके, हम न केवल अपने कार्यस्थल को समृद्ध करते हैं बल्कि उन बहुमुखी प्रतिभाओं को भी दर्शाते हैं, जो केनरा बैंक को अविस्मरणीय बनाती हैं। हम भाग्यशाली हैं कि हमारे पास विविधतापूर्ण और प्रतिभाशाली टीम है, जिसका अद्वितीय दृष्टिकोण और नवीन विचारधारा हमारी सबसे बड़ी संपत्ति है।

इस संस्करण के माध्यम से, मैं प्रत्येक केनराइट की प्रतिभा को पुनः जागृत करने की आवश्यकता पर जोर देती हूँ। यह एक ऐसा माध्यम है, जहाँ कोई भी व्यक्ति नियमित दिनचर्या से विराम लेकर "मी-टाइम और स्पेस" का आनंद ले सकता है। अपने अद्वितीय कौशल और उत्साह को प्रदर्शित करने के लिए कुछ समय निकालें। आइए, हम इस पारंपरिक विचारधारा की बाधाओं को तोड़ते हुए इस धारणा को अपनाएँ कि रचनात्मकता और बैंकिंग साथ-साथ आगे बढ़ सकते हैं।

हम उत्सुकता से आपकी रचनात्मकता को प्रज्वलित होते देखने तथा हमारे बैंक द्वारा प्रदान किए जाने वाले आगामी रचनात्मक अवसरों में हमारी टीम के अविश्वसनीय योगदान की सराहना करने के लिए उत्सुक हैं। रचनात्मकता प्रकाशमान होती है, इसे प्रोत्साहित करें.....

एक रचनात्मक जीवन ही एक उन्नत जीवन है। यह एक वृहद, खुशहाल, विस्तारित एवं बहुत ही दिलचस्पी से जीने लायक जीवन है। – एलिजाबेथ गिल्बर्ट

आशा है कि आप इस विशेषांक को पढ़कर प्रसन्नचित होंगे। हमें आपकी प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा। कृपया केननेट पर हमारे गृह पत्रिका व पुस्तकालय के वेबपेज पर / या hohml@canarabank.com पर मेल के माध्यम से अपनी प्रतिक्रिया/टिप्पणी दें अथवा 080 – 22233480 पर हमसे संपर्क कर सकते हैं।

आगाध प्रशंसा तथा कृतज्ञता के साथ

प्रियदर्शिनी आर  
संपादक

Dear Colleagues,

"In the world of banking - precision, compliance, and risk management often dominate our day-to-day activities. However, beneath the surface of these structured processes lies a wellspring of untapped potential: the boundless creativity of our staff members. Creativity is not merely a trait; it is a dynamic force that shapes our lives in profound ways. From sparking innovation to enhancing problem solving skills, creativity is the corner stone of personal and professional development. It is a form of self-expression- a means through which individuals convey their thoughts, emotions and experiences. Whether through art, writing or music or other creative outlets, the individuals find voice to communicate their unique perspective to the world. This process not only enhances self-awareness but cultivates the sense of fulfilment and happiness. Engaging in creative activities has proved to have numerous benefits for mental health and well-being. Whether through painting, writing or any other artistic endeavours creative expression provides an outlet for stress relief, emotional catharsis and self-care.

**Shreyas Contest** which is held every year, is designed to showcase the artistic and inventive talents of our employees, from painting, sketching and original written content and beyond. Participating in the contest is not just about recognition; it's about nurturing a culture where innovative thinking is celebrated and appreciated. By sharing our creative endeavours, we not only enrich our workplace but also demonstrate the multifaceted talents that makes Canara Bank exceptional. We are fortunate to have a diverse and talented workforce whose unique perspectives and innovative ideas are our greatest assets.

Through this edition I urge that the talent pool of each and every Canarite needs to be rekindled and this is one platform where one can take a break from the regular routine and enjoy the "Me -Time and Space". Take a moment to reflect on your unique skills and passions. Let's break down the barriers of conventional thinking and embrace the thought that creativity and banking can go hand in hand.

We eagerly look forward to see your creativity shine and to celebrate the incredible contributions of our myriad workforce in the upcoming creative opportunities which our bank provides. Creativity is contagious. Pass it on.....

**A creative life is an amplified life. It's a bigger life, a happier life, an expanded life, and a hell lot of more interesting life.**

- Elizabeth Gilbert.

Hope you enjoy reading this special edition. As we love to hear from you, please drop in your feedback/ comments by visiting our HM&L Webpage in Cannaet / or as mail to hohml@canarabank.com / or you can always call us at 080 – 22233480.

With profound admiration and gratitude

Priyadarshini R  
Editor

My elevation to the position of General Manager marks a significant milestone in my professional journey. This is not only an honour, but a responsibility that I am eager to embrace. I wish to express my sincere gratitude to the Top Management and my colleagues for their unwavering support and confidence shown in me. As I step into this role, I am committed to upholding the values and shall strive to adhere to the mission and vision of our Bank while driving growth.



I feel that the key areas to emphasize in my role shall be : a) **Growth under CASA**: Our endeavour shall be to grow more under CASA. b) **Customer centric approach**: Enhancing our services and products to exceed customer expectations c) **Employees development**: Investing in our colleague's growth and development to build a more skilled and motivated workforce d) **Community engagement**: Strengthening our community ties and contributing positively to the society we serve for our sustainable growth.

I am excited about the opportunities ahead and confident that, "Together We Can", continue as the most preferred bank by all our stakeholders.

With warm regards,

**Ajit Kumar Mishra**  
General Manager

I feel honoured and humbled on my elevation to the post of General Manager of our esteemed organization. I am thankful to the honorable Top Management for having reposed confidence in me to shoulder the higher responsibilities.



I take this opportunity to thank my superiors and numerous colleagues whose support and encouragement, throughout my career, has made this possible.

I rededicate myself with great zeal and devotion to achieve all corporate goals and provide quality banking services with customer centric approach.

I promise to give my best and strive hard to take our esteemed bank to greater heights.

With warm regards,

**Vimala Vijaya Bhaskar**  
General Manager

I am indebted to our great organization for elevating me to the position of General Manager. I take this proud moment to extend my gratitude to the Top Management, all my mentors who groomed me and confided in me to take up greater responsibilities.



I am fully aware of the challenging nature of the role and the amount of hard work the designation entails. I want to assure that my efforts and dedication is only going to increase manifold and I will do my best to the designated post.

Bank has given me opportunities to work in different parts of the country which has enriched my knowledge and exposure. I always believe in team work, dedication, delegation of authority and sharing of responsibility. The need of the hour is to adopt new strategies and technology with focus on customer service and work with team spirit to achieve the goals to prove our Business Tagline "Together We Can".

Regards,

**Pravin D Kabra**  
General Manager

The moment I received the news of my promotion as General Manager, a whirlwind of emotions swept through me, leaving me exhilarated yet apprehensive, proud yet humbled. It was a milestone in my career journey, a culmination of years of dedication, hard work, and unwavering commitment to our Bank. As the initial rush of excitement subsided, a wave of pride washed over me. This promotion is not just a recognition of my abilities, but also an acknowledgement of my faith towards my bank. However, along with the pride came a sense of responsibility, a realization of the weight of expectations that now rested upon my shoulders. As I stepped into my new role, I wholeheartedly thank the Top Management of our Bank guided by our beloved MD & CEO, for blessing me with wonderful career opportunity. I was keenly aware of the trust placed on me by the Top Management as well as the expectations of my colleagues, clients and stakeholders. It was a humbling reminder that leadership was not about wielding power or authority, but about serving others with empathy, integrity and a genuine commitment to their success. Looking forward to new challenges and eager to bring more laurels to our Bank, which provided me status and stature in this competitive world.



Regards,

**Satyaprakash Singh**  
General Manager



First and Foremost, I would profoundly express my sincere & heartfelt thanks to our Top Management for reposing faith on me that I will do justice to the role assigned to me as General Manager and heading MSME Wing of the leading public sector bank in India.



I joined this great organisation 23 years back as an AEO and I have been blessed with unwavering support from our Can bank family, which led to my learning, career growth and invaluable experiences.

I sincerely thank each member of our profound Canbank family, who taught and supported me in each phase of banking journey and also my family members who rendered unconditional love, support and consideration are my pillars of strength at all times to achieve this in my professional endeavours.

I appeal to all Canarites, to work diligently with utmost commitment and dedication to achieve our Bank's Vision to be No.1 Public Sector Bank. Let's strive hard and excel in our capacities to achieve our Bank's Goal and commitments.

**Together We Can** work for Our Esteemed Bank with ample opportunities ahead in our life to serve the society and nation.

With warm regards,

**Sunil Kumar Yadav**  
General Manager

*“Productivity is never an accident. It is always the result of a commitment to excellence, intelligent planning, and focused effort.”*  
– Paul J. Meyer



Shreyas contest 2023  
English Travelogue  
1st prize

# A Journey through an Urban Wonder - Singapore

Safin Ahmed

SWO-A

Trichy Rly Junction



## Introduction

When my friends and I planned for a trip, one of our options was Singapore. However, we were very apprehensive to go ahead, since Singapore was the world's costliest city for two consecutive years. We did a thorough pre-planning and it gave us the reassurance that we can make it within our budget.

Singapore has some stringent visa application procedures. So we decided to apply the visa through a travel agency while planning the rest of the trip by ourselves.

Buckle up and join me on this virtual trip to the incredible city of Singapore. Let's dive right in!

## Day 0: Trichy - Malaysia - Singapore

We started off from Trichy airport around 11.00pm. We had a short layover at Malaysia, which gave us an opportunity to witness the Malaysian airport too. The connecting flight from Malaysia to Singapore is a short one of about an hour. The view of the harbour, ships and other landmarks was a treat to the eyes all the way along.

## Day 1: Changi Airport

We landed in Singapore Changi airport at about 9.30am. First thing that caught our eyes were that all the sign boards at the airport have instructions written in 3 languages - Malay, English and Tamil. Tamil was one of the official languages of Singapore and it was accorded a significant place there.

Our first item in the one week itinerary was the airport itself. It would take more than one day to fully experience all the attractions it offers.

"Jewel", a nature themed entertainment and retail complex, situated among the four terminals of the airport is the major attraction of the airport. We reached

Jewel from Terminal 4 via the free airport shuttle service. One can also access it by the free monorail between the terminals.

When we entered the Jewel, a huge indoor waterfall welcomed us - the Rain Vortex. It is the world's largest and tallest indoor waterfall. It also has many other attractions like canopy park, mirror maze, sky nets, Changi experience studio etc.



Rain Vortex - Changi Airport

We then went on to purchase the Singapore public transport card - the EZ link card. We can top up the card at any automated machines in MRT stations through cash or card. It can be used for both MRT (Mass Rapid Transit), which is Singapore's equivalent of metro and public buses.

We then got on a bus and proceeded to our stay, Ibis Budget Singapore Crystal at Lorong 18. The stay cost us around ₹16000 for 5 nights. It is a residential area with lot of convenience stores and restaurants with Indian food too.

After a short nap, we proceeded to Clark's Quay which is known for its breathtaking views by the riverside and vibrant nightlife. One can explore a variety of street food, bars, cafés and restaurants and are most lively during late nights. We took a stroll along the Singapore river, soothed by the gentle breeze amidst brilliantly lit tall buildings.

### Day 2: The Garden Rhapsody

On day two, we visited Gardens by the bay. It is an urban botanical garden of the future and a must visit in Singapore. It is one of the most surreal places we have ever visited. It is filled with surreal sights, paradise like places, and a variety of plants and flower species from all around the world. It was built with an aim to make Singapore, 'a city in a garden', to stress the point to stay in close vicinity with nature, for a better quality of life on Earth. We found different varieties of plantations, vegetation, and flowers ranging from tropical to tundra type of climates, under one roof.

It has the world's largest glass greenhouse, known as flower dome, encompassing a variety of exotic flowers, from different environments across the world. There is also another giant dome like glass structure, known as cloud forest dome. It was so magical that it felt like entering into a wild wet humid tropical jungle. What's unique about the huge glass domes are that these structures have been built without any interior support like columns.

Another iconic feature of the garden are the Super-trees. These are large steel frame tree like structures about 50 meters tall, encompassing a huge variety of plant species and functions as a vertical garden.



*Supergroove Trees - Gardens by the bay*

It even offers a magnificent birds-eye view of the Singapore Marina Bay and the garden from the top. There is a daily light and sound show in the evenings at the Super-tree Grove, where the trees are lit up brilliantly and lights dance with the rhythm of music which is a spectacular show to watch, known as Garden Rhapsody.

It also has many restaurants and souvenir shops within which makes it a great tourist attraction where you can spend half a day at ease.

### Day 3: Merlin park - Mandai Night Safari

On day three, we went to the iconic Merlion Park. Merlion is the official mascot of Singapore. It is a mythical creature which has the body of a fish, which denotes Singapore's origin as a fishing village and the head of a lion, which symbolizes 'Singa' in Singapore.

The words 'Singa' denotes lion and 'Pura' means city, which makes up Singapore.

The most prominent Merlion statue, which has a fountain with water flowing from its mouth all throughout the day, is located at the waterfront of the Marina Bay. We clicked the mandatory picture in front of the statue. There are many street food options nearby the park to explore. We had some bites and started exploring the area by walk. It was a Sunday afternoon and it was drizzling a bit making the scene lovelier.

Singapore is located just one degree north of the equator and experiences equatorial climate which is characterized by hot and humid conditions. The temperature is warm all year round and rainfall is almost a daily phenomenon, with brief showers mostly in the afternoons and early evenings, which is refreshing. So,



*Merlion*

it's better to have something handy, like an umbrella or a rain coat always in your backpack to prevent yourself from getting drenched.

The walk around the Merlion Park or Marina Bay sands area is very tranquil and gives us a glimpse of the city of Singapore. We can see multi-storied corporate buildings, hotels and malls.

After a refreshing walk along the Marina Bay, we then headed to the Mandai Wildlife Reserve, for our next itinerary, the Night Safari. Mandai Wildlife Reserve is the world's first nocturnal zoo. We can explore the zoo either through guided tram tour or on foot by various themed walking trails and enjoying a close encounter with the animals in their habitat-like environment. Its surely a unique experience and unlike the traditional zoos we visit during the day with animals enclosed in cages, here the animals are set free in their spaces. Except few dangerous ones, people are allowed to explore them in open spaces, with adequate safeguards. I would suggest one to take the guided tram tour first and explore some walking trails on foot to get an experience of exploring a dense tropical forest.

#### Day 4: Universal Studios

Today was one of our most packed days in Singapore - a trip to Sentosa Island and Universal Studios. Sentosa is the fun filled resort island off the southern coast of Singapore, which is home to pristine beaches, exciting fun filled adrenaline rush tourist attractions. We first got to the Vivo city shopping center from our stay by bus and from there we took the Sentosa express monorail to get to the island.



Universal Studios

We decided to tick off the Universal Studios in our bucket list. Universal Studios Singapore is one of the five such theme parks around the world. It is designed based on the movie/television characters and their world of the production house. It is divided into six zones based on the themes - Hollywood, New York, Sci-Fi city, Ancient Egypt, The lost world, Far Far away, features theme based rides and character meet and greets. The adrenaline pumping giant roller coaster - Battle Galactica, Transformers - the ride, where you will be fighting the Deceptions as one of the Autobots through 3D simulation technology. Revenge of the mummy - the ride, Jurassic Park Rapids Adventure - River rapids raft system ride through the Jurassic park where some T-Rex are let loose are some of the highlights of the theme park. We got to meet our favorite movie characters like Optimus Prime, Po, Tai Lung through meet and greet events. Be sure to reach early around the opening time and allot one full day to this place, to make the most out of it.



Universal Studios

After a long day at Universal Studios we headed to one of the beaches in Sentosa Island to relax and to watch the colorful light shows along the shore.



Sentosa Island

### Day 5: S.E.A Aquarium - The Giant swing

This was the last day of our trip. We planned for a number of small attractions. We first headed back to the Sentosa island to visit the S.E.A aquarium. It is one of the largest in the world, which has more than 1,000 species of sea creatures from all over the world. Navigating through the aquarium is pretty simple, there is one entry and exit and we have to follow the one way path to see all that the aquarium has to offer. First when we entered the aquarium, large chunks of shipwrecks were scattered underwater which made a beautiful habitat for the fishes. The next zone is the school of fish which showcases the ocean biodiversity of a variety of fishes. The next zone contains glowing sea creatures like photogenic jellyfish exhibiting vibrant light, which is a treat to our eyes. Next to them were the dolphins swirling around. The prime feature of this aquarium is the open ocean habitat, which is a giant single acrylic viewing panel, 36m long and 8.3m high. It contains some giant sea creatures. The main attractions in the open ocean tank are Reef Manta rays, Leopard Whipray, Giant bony groupers. We had a nice serene time there while enjoying it from the amazing giant viewing panel. We can watch these creatures overhead at the ocean dome too. We then proceeded to the shark tunnel, where you can watch a wide range of these apex predators.



S.E.A Aquarium

We then headed to try one of the many adventure activities, the island has to offer. We tried the Skypark Giant swing. The Birds Eye view of the Sentosa beach from the height of our ride was spectacular and the experience was really thrilling.

By evening we headed back to the mainland to visit the Marina Bay Sands skypark observation deck. It is one of

the must visit attractions in Singapore, offering a panoramic view of the cityscape. We went during the night, so, we were able to have a glimpse of the beautiful night view and towering tall structures sprinkling lights.

### Expenses

I have summarised the expenses per person to give a fair idea.

Ticket plus visa - Rs.25000/-

Stay (Ibis budget hotel- double sharing room) - Rs.15000/-

Activities and attractions entry free (We booked everything through klook app) - Rs.15000/-

Food - Rs.20000/-

Travel within Singapore - Rs.5000/-

Have some Rs.20000/- in buffer for some unforeseen expenses.

### Zaijian, Singapore!

We then checked out of the hotel the next morning taking with us a bunch load of experiences.

From feeling awestruck by witnessing the magnificent Changi airport for the first time and wandering along the Marina Bay while getting drenched in the rain to our fun filled day at the Universal Studios, Singapore gave us a truck load of memories to reminisce about. Until next time, Singapore. Zaijian!!



The stunning architecture, the friendly people and the vibrant streets sure made it an unforgettable trip. When I look back at the time we had in Singapore, I can only feel grateful for the memories I made there.

\*\*\*\*\*



Shreyas contest 2023  
Hindi Travelogue  
1st prize

## यात्रा सूर्योदय से चंद्रोदय की

गौरव जोशी

वरिष्ठ प्रबंधक  
एलडीसी, नागपुर



कक्षा ग्यारवीं में हमारी हिन्दी की किताब में आखिरी अध्याय था श्री राहुल सांकृत्यायन जी का लिखा हुआ 'अथातो घुमकड़ जिज्ञासा' जिसमें लेखक ने घुमकड़ी के बारे में अत्यंत गहन विचार अत्यंत सरलता से प्रस्तुत किए थे। सम्पूर्ण अध्याय तो नहीं लेकिन उन्होंने ख्वाजा मीर 'दर्द' के एक शेर को भी लिखा था जो हमारे जहन में हमेशा के लिए रह गया, कि

“सैर कर दुनिया की गाफ़िल ज़िंदगानी फिर कहाँ  
ज़िंदगानी गर रही तो ये जवानी फिर कहाँ”

बस ये ही पंक्तियाँ फिर से सुना कर हमारे परम मित्र, जो कि अपनी धर्मपत्नी के साथ हमारे एक अन्य मित्र की शादी में शामिल होने पुणे से दिल्ली आए थे, ने हमारे हाथ पर प्लास्टर होने के बावजूद हमें एक ऐसी यात्रा पर चलने को मजबूर कर दिया जहाँ हमारी धर्मपत्नी जी भी हमारे दिल्ली स्थानांतरण होने के समय से जाना चाह रही थी। यह जगह थी ऋषिकेश से 36 कि.मी. दूर स्थित कुंजापुरी देवी मंदिर। यह मंदिर उत्तराखंड में स्थित 52 शक्ति पीठ में से एक है, साथ ही साथ यहाँ से दिखने वाले सूर्योदय की सुंदरता का वर्णन हम अपनी धर्मपत्नी जी से अनेकों बार सुन चुके थे जो बाल्यावस्था में कई बार यहाँ आ चुकी थी व फिर से अपने सवा साल के सुपुत्र के साथ इस मनोरम दृश्य का नज़ारा लेना चाह रही थीं। चूंकि यह जगह ऋषिकेश के पास है तो योजना बनी कि हम ऋषिकेश में रुक कर अगले दिन सवेरे कुंजापुरी मंदिर के लिए निकलेंगे। कई लोग यहाँ ऋषिकेश से पैदल भी आते हैं जो 9 से 12 कि.मी. लंबा ट्रेक है और इसको पूरा करने में 4 से 5 घंटे का समय लगता है; हालांकि हमारी स्थिति में ऐसा करना उचित नहीं था सो हमने अपने

चारपहिया वाहन से ही ये यात्रा पूरी करना ज्यादा उचित समझा।

15 मई 2023 को हम अपने गाज़ियाबाद के निवास स्थान से दोपहर 2:00 बजे ऋषिकेश के लिए निकले। हमारे निवास स्थान से ऋषिकेश कि दूरी 223 कि.मी. जिसको पूरा करने में 4 घंटे का समय लगता। इस बार हम हाथ में फ़्रेक्चर होने के कारण सहचालक की भूमिका में थे व चालक हमारे परम मित्र थे। पीछे, हमारी पत्नी जी, हमारे सवा साल के सुपुत्र तथा हमारे मित्र की धर्मपत्नी जी अपना आयुर्वेदिक-अंग्रेजी-यूनानी सभी किस्म की दवाइयों का पोटला लेकर बैठे थे कि पहाड़ी यात्रा है कभी भी तबीयत खराब हो जाती है। हम लगभग 2:30 बजे दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर चढ़ चुके थे।

एनएच58 पर मेरठ, मुजफ़रनगर के बाहर से होते हुए 115 कि.मी. चलने के बाद हम रुड़की से थोड़ा पहले एनएच 334 पर आ गए व शाम 6 बजे हम हरिद्वार में प्रवेश कर चुके थे और अब गंगा नदी के समानान्तर चल रहे थे; पहली बार मुझे सहचालक की तरह यात्रा करने में लाभ महसूस हुआ, कि आप कितनी भी देर तक व कितनी भी दूर तक देखते रह सकते हैं, अपनी कल्पनाओं में खो सकते हैं, आप देख पाते हैं - घाट के उस पार बैठे दोस्तों को नदी में पत्थर मारते, आरती की तैयारियों में अपने घर से लायी थाली को सजाती हुई चाची जी को, पानी में अठखेलियाँ करते छोटे से बालक को व उसको हाथ से पकड़ कर उछालते उसके पिता को, उन दोनों को बाहर बुलाती बालक की चिंतित माँ को, जीवन की परेशानी से अकेले जूझते नवयुवक को जो कल-कल बहती जलधारा में सुकून तलाश रहा है, गंगा के किनारे धीरे-धीरे साइकिल ठेलते और दूसरे हाथ में गुब्बारा लिए

किसी सोच में डूबे चलते हुए एक बुजुर्ग को जिसको कल फिर निकालना है आने वाले कल का इंतजाम करने के लिए और फिर आप ईश्वर से उनके लिए प्रार्थना और अपने लिए कृतज्ञता व्यक्त करते हुए अपने वर्तमान में वापस आ जाते हैं, जहां पीछे बैठा आपका सुपुत्र अपनी बेबी-सीट से आपको लतिया रहा था, और हमें एहसास हुआ कि हम बिना रुके ही चले जा रहे थे सो कुछ 15-20 मिनट के लिए हम एक छोटी सी चाय की दुकान पर रुके और फिर चल दिए अपने आज के गंतव्य ऋषिकेश में स्थित होटल ग्रीन वन अर्थ की ओर।

हरिद्वार से ऋषिकेश जाने के लिए हमने राजाजी नेशनल पार्क की मोतीचूर रेंज से होते हुए, गंगा बैराज सेतु को पार करके पुनः राजाजी नेशनल पार्क में प्रवेश किया जहां चिल्ला रेंज का चेकपोस्ट था। वहाँ उपस्थित अधिकारियों ने कुछ पूछताछ के बाद व सतर्क रहने कि चेतावनी देकर हमें अंदर प्रवेश करने दिया।

इस समय शाम के 7 बज रहे थे और अभी-अभी गंगा घाट के भक्तिमय वाद्ययंत्रों की मनोरम ध्वनि सुनने के बाद अब इस तरह चीड़, शीशम, अमलतास के इस जंगल की पूर्ण नीरवता मन में संकोच एवं व्याकुलता उत्पन्न कर रही थी। बस यूं लग रहा था कि ये रास्ता बस किसी तरह खत्म हो जाए। अभी हमारा गंतव्य हो गया था एक नुक्कड़; वो नुक्कड़ जिस पर एक हल्की सी डबडबाती हुई स्ट्रीट लाइट के नीचे कमर पर हाथ लगाए व दीवार पर कोहनी टिकाए वो चार लोग दिख जाएं जो बात-बात पर बातें बनाते हैं, जिनको घर जाने की जल्दी भी है किन्तु समाज में क्या गलत हो रहा है उस पर गहन चर्चा भी करनी है और इसी पसोपेश में वो एक पैर साईकिल के पैडल पर और एक फुटपाथ पर टिकाए लगे रहते हैं तीन का पाँच करने में; उनको नहीं पता की घनघोर अंधेरे और सूनसान से जंगल में चलती हुई एक गाड़ी के भीतर बैठे सवा चार लोग उनको ही देखने की उम्मीद लिए चीड़ के जंगल को चीरते हुए चले आ रहे हैं। वो चार लोग नहीं जानते और उनको फर्क भी नहीं पड़ता, कि वो भी इस समाज के अस्तित्व का एक अभिन्न अंग हैं, जब तक

वो उस नुक्कड़ पर खड़े हैं तब तक बाज़ार में रौनक भी है और शहर में चहल-पहल भी।

चेक पोस्ट से एक्जिट तक का रास्ता कुल 25 मिनट का था लेकिन ये पच्चीस मिनट गाड़ी के अंदर व बाहर एकदम सन्नाटा था। हमारा सवा साल का पुत्र भी अब थक कर सो चुका था, और हम सब भी बस किसी तरह जल्दी से होटल पहुँच कर आज कि यात्रा पर विराम लगाना चाह रहे थे।

7:45 बजे थोड़ा रास्ते पूछते-पूछते हम अंततः अपने होटल ग्रीन वन अर्थ जा पहुँचे, चूँकि ये गर्मियों की छुट्टियों का समय था सो सभी होटल व धर्मशाला खचाखच भरे हुए थे, परंतु हमारे वहीं परिचित जो हमारे मूल-निवास से थे, वे एक संकट मोचक की तरह अवतरित हुए एवं किसी तरह हम सभी के लिए कमरों की व्यवस्था की।

दिन भर बैठे-बैठे भी थकान होती है इसका एहसास आपको सफर के बाद ही महसूस होता है, और इस थकान का हमारे लिए एक ही उपाय है, 'चाय' वो भी अदरक वाली। कुछ समय हाथ मुँह धो, और जलपान करने के बाद जब हम लोग नीचे रात्रि भोजन के लिए पहुँचे तो पता चला की खाने का समय अब समाप्त हो गया था तो हमें अब बाहर ही कहीं जाना पड़ेगा। अब चूँकि हमारे पुत्र भी जाग चुके थे और रात्रि में गंगा किनारे बैठने की लालसा भी हम सबके मन में थी तो लंबे-लंबे डग भरते हुए हम सभी तट की ओर चल दिए। इस समय रात का 10 .00 बज रहा था लेकिन ऋषिकेश की गलियाँ अभी भी गुलज़ार थीं, शिव जी के भजनों से, कुछ-कुछ दूरी पर बने मंदिरों में होते हुए शिव-पुराण के पाठ से, गाय-बछड़ों के गले में बजती घंटी से, चाय की टपरियों से उठती भाप से, कॉलेज की ट्रिप पर आए मित्रों की टोलियों से, और इस सब कोलाहल से दूर जब आप सीढियों से उतर कर गंगा तट पर जा कर बैठते हैं तो बस एक ही ध्वनि शेष रह जाती है गंगा जी के तेज़ बहाव की ध्वनि। यह ध्वनि उस सब मन की व्यथा, व्यवस्था, चिंता, शंका, मन में उठे हुए किसी भी द्वंद के ज्वालामुखी को बस शांत कर देती है; और मन शून्य में खो जाता है सुकून के शून्य में, ब्रह्मांड के शून्य

में। नदी के पास बैठकर जिस पवित्र शीतलता का अनुभव आप करते हैं वह अतुलनीय है, मानव निर्मित किसी भी आविष्कार से।

नदी किनारे कुछ आधा घंटे बैठ, अपने पुत्र को भरपूर तरह से पानी का आनंद ले लेने के बाद हम सब चले भोजन के लिए किसी अच्छे से भोजनालय की तलाश में, हम ऋषिकेश में रामझूला के पास थे एवं यहाँ कई अच्छे भोजनालय उपलब्ध हैं, मशहूर चोटीवाला होटल भी यहाँ है, लेकिन वहाँ पहले ही हाउसफुल होने के चलते हम जय गुरुदेव जलपान गृह में प्रविष्ट हुए व मन तृप्त होने तक भोजन ग्रहण किया। ऋषिकेश में अभी तक हमने जहाँ भी भोजन या जलपान ग्रहण किया है, सभी जगह एक चीज़ उभयनिष्ठ थी वह थी देसी-घी में बने भोजन का विशुद्ध स्वाद, जिसको सोशल मीडिया पर कहते हैं #औथेंटिका

भोजन का स्वाद लिए हम वापस अपने होटल की ओर चल दिए की तभी एक साईकिल पर कुछ अलग किस्म का फल लिए एक सज्जन खड़े थे, तो उत्सुकतापूर्वक हम सबने उनकी ओर कदम बढ़ाया, यह फल था यहाँ का प्रसिद्ध रामफल, जो श्रीमान यह फल बेंच रहे थे उन्होंने बताया की यह फल केवल यही ऋषिकेश में रामझूले के पास ही मिलता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार जब श्री राम रावण का वध कर के ब्राह्मण-हत्या के पाप का प्रायश्चित्त करने ऋषिकेश आए थे तब उन्होंने इस फल को ग्रहण किया था और इसी कारण इस फल का नाम रामफल पड़ गया। यह एक खट्टा-मीठा फल है जिसको एक नायाब स्वाद वाले चूरन के साथ खाया जाता है। इस खट्टे-मीठे फल का स्वाद लेते हुए हम चल दिए अपने होटल की ओर व रात्री 12 बजे अपनी आज की यात्रा को विराम दिया।

16 मई की हमारी सुबह प्रातः 3:45 पर हो गयी, चूँकि हमें कुंजपुरी मंदिर पहुँचने में लगभग डेढ़ घंटे का समय लगना था व सूर्योदय का समय प्रायः 5:30 के आस पास रहता है। हमने अपनी चौपहिया को मंदिर से कुछ पीछे छोड़ कर ऊपर पहाड़ी तक पैदल ही जाने का विचार किया था, यहाँ पहुँचने

का रास्ता सरल तो नहीं किन्तु इतना मनोरम ज़रूर था कि अपने सोते हुए बालक को गोद में लिए पहाड़ी पथरीले से रास्ते पर हमारी धर्मपत्नी जी भी अपने बचपन की यादों को ताज़ा करती एक बालक जैसे ही चली जा रही थी, उगते सूरज को सलाम करने। हालांकि यह मई का महीना था लेकिन ब्रह्ममूर्त में और पहाड़ों की वादियों में जो हल्की गुलाबी ठंडक महसूस होती है उसकी बात ही अलग है। सुबह 5:30 बजे शांत गहरे नीले आसमान में हिमालय की शिवालिक श्रेणी के पीछे से लाल फिर नारंगी और फिर अंततः पीले सूरज को देख मन में आया कि कोई अच्छी सी कविता कह दे लेकिन वहाँ हम अटक गए, कुछ याद ही नहीं आया। तभी हमारे मित्र ने इतराते हुए पूर्ण अभिमान के साथ श्री जय शंकर प्रसाद जी द्वारा रचित कुछ पंक्तियाँ कहीं जो इस प्रकार थीं:

“विमल इन्दु की विशाल किरणों, प्रकाश तेरा बता रही हैं।  
अनादि तेरी अनंत माया, जगत को लीला दिखा रही है”॥

हम मंत्रमुग्ध हो कभी अपने सामने के नज़ारे को, तो कभी अपने कौशल मित्र को देख रहे थे, कि अचानक विचार आया कि इन्दु तो चंद्रमा को कहते हैं न कि सूर्य को, उक्त पंक्तियों में कवि चंद्रमा की सुंदरता का बखान कर रहा है न की सूर्य की; बस पल भर में आस पास पसरी शांति हंसी के ठहाकों में बदल गयी और फिर मंदिर में जा कर माँ कुंजादेवी के दर्शन कर, मंदिर की सकारात्मक ऊर्जा को अपने अंदर समेटकर, बाहर उपलब्ध गरम चाय की चुस्कियों के साथ कविराय की खबर लेने का सिलसिला चला जो गंगा घाट पर डुबकी लगाने के तक चलता रहा। ऋषिकेश से वापस आते हुए शाम को हरिद्वार में हरि-की-पौड़ी पर एक घंटा रुक कर हमने वहाँ की सुप्रसिद्ध गंगा आरती के भी दर्शन किए और जाना कि कैसे प्रबल ध्वनि में भी आप अपने मन मस्तिष्क को साधकर ईश्वरीय शक्ति को खुद में प्रवाह होते महसूस करते हैं। हरिद्वार से वापस गाज़ियाबाद आते-आते हमें रात्री 11 बज चुका था, गाड़ी से उतरते हुए हमारे मित्र ने चाँद को निहारा और चुपचाप अंदर चल दिए।

\*\*\*\*\*





Shreyas contest 2023  
English Essay  
1st prize

## ESG in Banking: An Ethical Journey to Sustainable Economic Growth



**Deepthi Kishore**  
Manager  
Bengaluru CO

### 1. Introduction : DECODING ESG (Environmental, Social & Governance)

“Sustainable development is the pathway to the future we want for all. It offers a framework to generate economic growth, achieve societal justice, Exercise environmental stewardship and strengthen governance.”

– Ban Ki –Moon  
(Former Secretary General of United Nations)

Sustainable development: a topic which has been widely discussed and debated since last two decades. We all have understood it with the basic concept of “efficient utilisation of resources by ensuring its availability for the future generation.”

With the world becoming a global market and crossing boundaries, delimiting territorial and cultural bottlenecks, the concept of sustainable development has also widened to include **ecology along with economy with the empowered and well aware human capital under the guided principles of corporate governance.** ESG is the essence of what Mr. Ban-ki-Moon, has foresighted in his quote above.

Lets us understand it in very simple words: In general a revenue generating entity can be either: Product based or Service based or a combination of both. ESG is basically to understand and assess:



- What **IMPACT** does a company/firm bring through its operations/ practices/ procedures/ processes: on the Environment, How stakeholders are being affected and how efficient is governance structure within the organisation to take conscious and responsible decisions.
- Second aspect: it refers to a **set of principles/ standards** that guide towards generating income along with being Environmentally & Socially conscious, aware and responsible.
- Third Aspect: ESG specific data disclosures of a company to be used by investors/ consumers for evaluating enterprise value, sustainability related risk and opportunities associated with the organisation.

**For banking industry: ESG refers to incorporation of Environmental, social and governance factors in banking industry and evaluating impact of investments and operations on the environment, society and corporate governance practices.**

**There are 3 pillars of ESG:**

- Environment:** Climate Change, GHGs (Green house Gases) emission, Biodiversity loss, deforestation, pollution, energy efficiency, water management etc.
- Society:** Employee safety and health, working conditions, diversity, equity, inclusion, employee engagement and customer satisfaction etc.
- Corporate Governance:** Company's governance structure, practices, accountability, compliance, data security, risk management, preventing corruption etc.

### 2. ESG : HISTORY & EVOLUTION

- ESG reporting in India commenced in 2009 with the Ministry of Corporate Affairs (MCA) issuing

the Voluntary Guidelines on Corporate Social Responsibility. Ever since the reporting framework has come a long way with the introduction of Business Responsibility Reporting ("BRR") which mandated that the top 100 listed companies by market capitalisation file a BRR (later extended to the top 500 listed companies in 2015), Corporate Social Responsibility (CSR), National Guidelines on Responsible Business Conduct (NGRBC) and the newly introduced Business Responsibility and Sustainability Report (**BRSR**) (introduced through a SEBI circular dated 10 May 2021) by amending regulation 34 (2) (f) of SEBI (Listing Obligation and Disclosure Requirements) Regulation, 2015 ("LODR Regulations").

- The BRSR seeks disclosures from listed entities on their performance against the nine principles of the 'National Guidelines on Responsible Business Conduct' (NGBRCs) and reporting under each principle is divided into essential and leadership indicators. The essential indicators are required to be reported on a mandatory basis while the reporting of leadership indicators is on a voluntary basis.
- The BRSR is intended towards having quantitative and standardized disclosures on ESG parameters to enable comparability across companies, sectors and time. Such disclosures will be helpful for investors to make better investment decisions. The BRSR shall also enable companies to engage more meaningfully with their stakeholders, by encouraging them to look beyond financials and towards social and environmental impacts.
- Applicability of BRSR: With effect from the financial year 2022-2023, filing of BRSR has been made mandatory for the top 1000 listed companies (by market capitalization) and has replaced the existing BRR.
- With an aim to enhance ESG complaint business practices in India BRSR guide by disclosure of adequate policies and mechanism that a company implements to remain ESG-compliant.
- Since 2020 there has been an accelerating interest in overlaying ESG data with the SDGs

(Sustainable Development Goals) developed by United Nations.

### 3. INITIATIVES TOWARDS ESG IN INDIA:

The Indian government has been actively encouraging companies to adopt ESG practices through initiatives such as the Sustainable Development Goals, in conjunction with the UN and the National Action Plan for Climate Change, launched in 2008. We are also firmly committed to the 2070 Net Zero goals. In addition, there has been a growing emphasis on Corporate Social Responsibility (CSR) initiatives. In 2014, India became the first country to make CSR mandatory. India's Green Hydrogen mission is expected to be the world's largest such initiative and is targeted to help India reach its net zero carbon emission goal by 2070.

For the Indian banking sector RBI In its report on 'Climate Risk and Sustainable Finance', issued guidelines or suggestions for banks to assess and manage their ESG risks and ensure that their operations and strategies are in line with ESG principles. Banks must leverage this to identify and assess their ESG risks and set targets to reduce them.

### 4. NEED OF ESG IN BANKING SECTOR:

In the present era, one of the most pressing concerns is MAN MADE CLIMATE CHANGE. We all are neglecting negative impact of our so called growth and development of our environment. To tackle this challenge, governments and regulatory bodies across the world are driving an ESG transformation of the business world with great urgency. Same approach is needed in banking sector as well. As financial custodians of global economies, banks have a very significant role to play through their lending and investment activities. Banks have the potential to access various revenue streams driven by ESG principles.

Bank can create ESG impact in the following ways:

- a) By implementing ESG standards and goals in the bank's standards.
- b) By reflecting ESG consciousness in its policies, especially around lending and guiding borrowers to be more ESG-focused.

- c) By developing green and sustainable lending products and services in their lending framework.
- d) Exploring potential and opportunities of GREEN FINANCING by extending competitive ROI to such ESG compliant projects.
- e) Developing assessment and rating modules to identify clients based on their ESG performance, to ascertain their eligibility for green finance and incentives.

## 5. EFFECT OF ESG IN BANK

- **ESG: A WAY TO IMPROVE BRAND REPUTATION:** With steadily growing customer and investor awareness in choosing companies, including banks, that align to sustainability principles, companies that prioritise ESG factors are perceived more responsible, ethical and silent by customers/ investors. This also provides competitive advantage to such ESG ready banks in access of capital.
- **INCREASED CUSTOMER LOYALTY:** With time the consciousness and morality with respect to environment is increasing. As the deteriorating effects are quite visible ignoring ESG factors can create significant financial loss to investors and insurers. Banks with strong ESG framework may better enable to manage risks associated with social and environmental issues.
- **COMPETITIVE ADVANTAGE:** Banking sector is very competitive. In times when each bank is striving towards developing great products, seamless and quick digital products and services and enhanced customer service, ESG will serve as a key differentiating factor.
- **GUIDING LIGHT FOR OTHER INDUSTRIES:** Banking organisations are always believed to be more trust-worthy to common public as compared to other industries due to its strong policies, transparency, implementation of regulations and disclosures. Banks can serve as leaders in the growing field of attaining sustainability through ESG for the entire economy.

- **BETTER DECISION MAKING WITH EFFICIENT MANAGEMENT OF ESG BASED DATABASE:** In recent times, adapting to and mitigating climate change impact, inclusive growth and transitioning to a sustainable economy have emerged as major issue globally. There is an increased focus of investors and other stakeholders seeking businesses to be responsible and sustainable towards the environment and society. Thus, reporting of company's performance on sustainability related factors has become as vital as reporting on financial and operational performance. Also with data management it is imperative to ensure data security through data governance, then only ethical data accessibility can be ensured and implementation of data for portfolio development, investment, research, financial planning and regulatory reporting can be done efficiently.

- 6. **CHALLENGES:** Despite the increasing focus on ESG, the Indian banking sector is yet to make a significant impact in the implementation of ESG policies due to following challenges:

- a) Lack of awareness and understanding of the importance of ESG among banks.
- b) Lack of incentives and stringent regulations to adopt ESG practices.
- c) Pursuing ESG and digital transformation and profit generation together.

- 7. **CONCLUSION: Sustainable Operations Bring Better Economic Performance.**

ESG framework is the empowering tool for banking industry which makes us not only a consumer of sustainability but pioneers in bringing sustainability along with economic growth. ESG is generally perceived as a matter of compliance and regulation only but it is more about doing responsible, accountable and ethical banking subsequently a vital component of long term strategies. Its time to take jump from INTENT to IMPACT with respect to ESG and building ESG ready banks / organisations/ companies to take our country towards a sustainable future with ESG.

\*\*\*\*\*



Shreyas contest 2023  
Hindi Essay - 1st prize

## बैंकिंग-क्षेत्र में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन का प्रभाव

आशीष नैथानी

अधिकारी  
दिल्ली अं.का.



प्रस्तावना/पृष्ठभूमि:

वास्तव में, किसी बैंक या बैंकिंग क्षेत्र अथवा किसी भी व्यावसायिक क्षेत्र की प्रतिष्ठा और विश्वसनीयता के बारे में केवल संरचनात्मक और परिचालन दृष्टिकोण से विचार करना ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि वर्तमान विषयों, परिवर्तनों एवं बदलावों के संबंध में भी संवेदनशीलता होना और उन पर विचार करना अति-आवश्यक है।

वर्तमान में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन जैसे विषयों को गंभीरता से लिया जाना चाहिए। क्योंकि मानकों का यह समूह दिनोंदिन लोकप्रियता की सीढ़ियां चढ़ रहा है। वित्तीय सेवा क्षेत्र में तो इसकी व्यापक स्तर पर चर्चा हो रही है। आज पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन सा वित्तीय सार्वजनिक चर्चा का एक प्रमुख विषय बन गया है। बैंकिंग क्षेत्र के साथ-साथ संपूर्ण व्यापार जगत में भी यह तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। यद्यपि आरंभ में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन मानदंडों को इतना महत्व नहीं मिला। किन्तु, हाल के 4-5 सालों में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन एक सक्रिय आंदोलन के रूप में उभर कर सामने आया है।

आज यह धीरे-धीरे बैंकिंग क्षेत्र क्या प्रत्येक व्यावसायिक क्षेत्र के लिये महत्वपूर्ण हो गये है। आज का ग्राहक, हितधारक एवं निवेशक इतना जागरूक हो गया कि वह प्रत्येक संभावित निवेशों की जांच के लिए पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन के मानदंडों का उपयोग करने लगा है। क्योंकि पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन के कारकों/मानदंडों के माध्यम से निवेशकों के लिये किसी व्यावसायिक क्षेत्र का आकलन करना और उसके लिये यह

समझना आसान हो गया है कि यह बैंक बैंकिंग क्षेत्र अथवा व्यावसायिक क्षेत्र कितना टिकाऊ और कितना जिम्मेदार है। आज संपूर्ण विश्व जलवायु परिवर्तन, समावेशन, सामाजिक न्याय और संस्थागत जवाबदेही से जूझ रहा है। बैंकिंग क्षेत्र ने वर्षों से सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बैंकिंग क्षेत्र को एक बार पुनः एक स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ है कि वह पर्यावरण सामाजिक और अभिशासन को भविष्य की क्रांति के रूप में अपनाएं।

**पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन का अर्थ/परिचय:**

पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन निवेशकों द्वारा वित्तीय एवं अन्य व्यावसायिक क्षेत्रों की जांच जानकारी अर्थात मापने एवं भांपने के लिए उपयोग किये जाने वाले मानदंडों का एक समूह है। निवेशक तेजी से ऐसे क्षेत्रों को पसंद कर रहे हैं जो पर्यावरण-उन्मुख हो और जिनमें उच्च कॉर्पोरेट प्रशासनिक मानक हो। ईएसजी मानदंड किसी व्यावसायिक क्षेत्र के संचालन के लिए मानकों का एक दर्पण है। जिसका उपयोग सामाजिक रूप से जागरूक निवेशक संभावित निवेशों से संबंधित जांच एवं जानकारी के लिए करते हैं।



**पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन के उद्देश्य:**

पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन की भूमिका बैंकिंग क्षेत्र को व्यवस्थित और स्थिरता प्रदान करते हुए एक जवाबदेही सिस्टम और प्रक्रियाओं के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करना है। इसका मुख्य उद्देश्य एक जवाबदेही, उच्च प्रबंधन एवं कुशल व्यावसायिक रणनीतियों के आधार पर बैंकिंग क्षेत्र को भविष्य की घटनाओं, होने वाले बदलावों और परिवर्तनों के लिए जागरूक और मजबूत करना है।

**पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन की महत्वता:**

पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन के कारक, निवेशकों और उपभोक्ताओं को बैंकिंग क्षेत्र एवं अन्य व्यावसायिक क्षेत्रों की वास्तविक स्थिरता एवं उनके प्रदर्शन का व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन के कारकों पर विचार करके, निवेशक निवेश से जुड़े संभावित जोखिमों और अवसरों का मूल्यांकन कर सकते हैं। उपभोक्ताओं अथवा निवेशों द्वारा किसी व्यावसायिक क्षेत्र एवं संगठन में संभावित वित्तीय निवेश पर विचार करने से पहले पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन के कारकों को ध्यान में रखा जाता है। पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन का अनुपालन खुले तौर पर बैंकिंग क्षेत्र या किसी अन्य व्यावसायिक क्षेत्र एवं संगठन की प्रथाओं की वास्तविक प्रकृति को उजागर करता है। यह जागरूक उपभोक्ता और निवेशकों के लिए एक महत्वपूर्ण और मजबूत आधार प्रदान करता है।

**पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन के मानदंड:**

पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन मानदंडों का उपयोग व्यावसायिक क्षेत्रों और हितधारकों के निवेशों की स्थिरता और नैतिक प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। आज हर एक व्यावसायिक क्षेत्र कार्यात्मक दृष्टिकोण से पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। ईएसजी का प्रत्येक पहलू टिकाऊ और नैतिकता से परिपूर्ण प्रथाओं पर बैंकिंग एवं वित्तीय क्षेत्र के साथ-साथ अन्य व्यावसायिक उद्योगों का ध्यान आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। संक्षेप में पर्यावरण,

सामाजिक और अभिशासन के मानदंडों एवं नियमों का निम्नानुसार उल्लेख किया जा सकता है:—

**1. पर्यावरण:** पर्यावरणीय कारक किसी व्यावसायिक क्षेत्र एवं संगठन के पर्यावरणीय प्रभाव और जोखिम प्रबंधन प्रथाओं की व्याख्या करते हैं। इनमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन, प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन और भौतिक जलवायु जोखिमों जैसे: जलवायु परिवर्तन, बाढ़, आग, प्राकृतिक संसाधनों का असीमित दोहन, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, अपशिष्ट प्रबंधन, ऊर्जा दक्षता और जैव विविधता के खिलाफ व्यावसायिक क्षेत्र की समग्र कार्यशैली एवं विचार शामिल हैं।

**2. सामाजिक:** यह सामाजिक स्तंभ व्यावसायिक क्षेत्र के किसी संगठन के हितधारकों के साथ संबंधों को संदर्भित करता है। ईएसजी का सामाजिक पहलू लोगों और समाज पर संबंधित व्यावसायिक क्षेत्र के प्रभाव को शामिल करता है। इसमें श्रम प्रथाओं, कर्मचारी संबंध, विविधता, समानता और समावेशन, सामुदायिक जुड़ाव, ग्राहक संतुष्टि और मानवाधिकार जैसे कारकों का मूल्यांकन किया जाता है।

**3. अभिशासन:** कॉर्पोरेट प्रशासन से तात्पर्य है कि किसी वित्तीय क्षेत्र या अन्य व्यावसायिक क्षेत्र एवं संगठन का नेतृत्व और प्रबंधन किस स्तर का है। हितधारक की अपेक्षाओं और श्रेयधारकों के अधिकारों को कैसे देखा जाता है। नेतृत्व की ओर से पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देने के लिए किस प्रकार के आंतरिक नियंत्रण मौजूद हैं। अभिशासन उन प्रणालियों और संरचनाओं को भी



संदर्भित करता है जो किसी वित्तीय एवं अन्य किसी व्यावसायिक क्षेत्र के संचालन और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं का मार्ग प्रशस्त करता है। इसमें जैसे: शेरधारकों का अधिकार, पारदर्शिता, प्रतिस्पर्धी व्यवहार, जोखिम प्रबंधन, कानून एवं नियामक वातावरण का प्रबंधन शामिल है। इसमें एक सुशासित एवं स्थिर बोर्ड संरचना के साथ-साथ वरिष्ठ प्रबंधन को बनाए रखने और अपनी भविष्य की दिशा, व्यवसाय-वृद्धि के बारे में समझदारी भरा निर्णय एवं समयानुकूल उचित समय पर उचित निर्णय लेने की क्षमता रखना शामिल है।

### बैंकिंग क्षेत्र में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन का प्रभाव:

आज वित्तीय संस्थानों खासकर बैंकिंग क्षेत्र के पास एक सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए, अपने प्रभाव और संसाधनों के उपयोग करने का बहुत ही सुनहारा अवसर है। निवेश के अतिरिक्त किसी भी प्रकार की बैंकिंग, बीमा और अन्य वित्तीय उत्पादों में पर्यावरण, सामाजिक एवं अभिशासन (ईएसजी) के मानदंडों और विचारों को एकीकृत करके बैंकिंग क्षेत्र अपने ग्राहकों और निवेशकों की स्थायी प्रथाओं और रणनीतियों को बढ़ावा दे सकता है। इसके साथ-साथ सामाजिक कारणों का समर्थन करने और जिम्मेदार अभिशासन को बढ़ावा देने जैसे अपने दृढ़ संकल्पों को पूरा करते हुए लाभप्रदता हासिल करने और उसे बनाए रखने में सक्षम हो सकता है। बैंकिंग क्षेत्र अथवा बैंकिंग सेवाओं में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन को एकीकृत करने और उन्हें अपनाने से पड़ने वाले प्रभावों का उल्लेख निम्नानुसार किया जा सकता है:-

#### एक उभरता हुआ अवसर:

पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन के मानदंडों को अपनाने तथा समय-समय पर होने वाले परिवर्तनों को स्वीकार करना सदैव लाभकारी होता है। बैंकिंग क्षेत्र हो या कोई भी क्षेत्र हो जिसने अपने से समय के साथ-साथ बदलाव किया है, उसने स्थिरता और दीर्घकालिक सफलता प्राप्त की है। तदनुसार जिन बैंकों एवं वित्तीय संस्थानों ने

पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन के कारकी और रणनीतियों को दृढ़ता से अपनाया है या शामिल किया है, उन्हें पूंजी आसानी से प्राप्त हो रही है। वे निवेशकों को आकर्षित करने में सफल हो रहे हैं। फलस्वरूप ऐसे बैंक आज के प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में भी बैंकिंग क्षेत्र के अग्रणी बैंकों में गिने जा रहे हैं।

#### प्रतिष्ठा पर सकारात्मक प्रभाव:

पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन कारकों को प्राथमिकता देने वाले बैंकों एवं वित्तीय संस्थानों को ग्राहक अधिक जिम्मेदार और नैतिकतापूर्ण व्यवहार करने वाले संस्थानों की श्रेणी में रखते हैं। आज पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन जैसे कारकों को अपनाने का संकल्प लेने वाले बैंक, वित्तीय क्षेत्र के संगठन एवं संस्थान अपनी प्रतिष्ठा के साथ-साथ अपनी वित्तीय स्थिति को मजबूत करने में सफलता हासिल कर सकते हैं।

#### पूंजी हासिल करने में सक्षम:

आज यह स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होने लगा है कि जिन बैंकों ने पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन जैसे मानदंडों/कारकों को अपनाने के लिये एक कदम भी आगे बढ़ाया है, उन्हें हर एक निवेशक यानि चाहे वह व्यक्तिगत निवेशक हो और चाहे संस्थागत निवेशक हों, उनमें सभी बढ़-चढ़ कर निवेश कर रहे हैं। दूसरी तरफ उन बैंकों में निवेश करने से हिचकिचाते हैं जो पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन जैसे कारकों को नहीं अपना रहे हैं।

#### निवेशकों/ग्राहकों के विश्वास में वृद्धि

पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन से संबंधित जोखिमों को कम करने और अच्छे से प्रबंधन करने वाले बैंकों पर ग्राहक एवं निवेशकों का विश्वास मजबूत होता है और वे उन्हीं बैंकों में निवेश करना या उन्हीं से ऋण लेना अर्थात उन्हीं के उत्पाद एवं सेवाएं लेना चाहते हैं। अतः ग्राहकों एवं निवेशकों को आकर्षित करने और उनका विश्वास बनाये रखने में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन के मानदंड/कारक अहम भूमिका अदा करते हैं।

**जोखिम में कमी:**

ग्राहक यह भी मानते हैं कि जो बैंक पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन के कारकों को महत्व नहीं देते हैं, वे बैंक एवं वित्तीय प्रतिष्ठान निवेशकों एवं ग्राहकों को वित्तीय जोखिम में डाल सकते हैं। इसके विपरीत जो बैंक पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन के कारकों को अच्छी तरह से समझते हैं और उनका पालन करते हैं, वे जोखिमों से जुड़े मुद्दों का प्रबंधन करने के लिए व्यवस्थित एवं सुदृढ़ स्थिति में भी होते हैं।

**प्रतिस्पर्धात्मक लाभ:**

बैंकिंग क्षेत्र एक प्रतिस्पर्धी क्षेत्र है। पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन के कारकों के साथ बैंकों का संचालन अन्य बैंकों एवं वित्तीय संस्थानों अर्थात् अपने प्रतिस्पर्धियों से हटकर कुछ अलग से अच्छी रणनीतियों को अपनाते हुए जोखिमों को कम करना, एक टिकाऊ और सतत विकास के क्षेत्र में, बैंकिंग क्षेत्र क्या किसी भी वित्तीय संस्था को अग्रणी बना देता है।

**हितधारकों/निवेशकों को आकर्षित करना:**

वर्तमान में बैंकिंग क्षेत्र को एक स्थिर और सामाजिक जिम्मेदारी के साथ संचालन करने के लिए ग्राहकों, निवेशकों और नियामकों के बढ़ते दबाव का सामना करना पड़ रहा है। पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन के मानदंडों को अपनाने से बैंकिंग क्षेत्र की प्रतिष्ठा में सुधार के साथ-साथ सामाजिक रूप से जागरूक निवेशकों को भी आकर्षित किया जा सकता है।

**दीर्घकालिक मूल्य निर्धारण:**

बैंकिंग क्षेत्र अपनी परिचालन संबंधी गतिविधियों में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन के कारकों और उसके विचारों को एकीकृत करके समाज पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं और सतत विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। इसके अतिरिक्त सभी हितधारकों के लिए दीर्घकालिक मूल्यों का निर्माण करते हुए, सतत विकास

के लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं।

**प्रतिभा को आकर्षित करना:**

पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन के मानदंडों को अपनाने से बैंकिंग क्षेत्र प्रतिभाशाली मानव-शक्ति को आकर्षित कर सकता है। आज जागरूक और प्रतिभावान मानव-शक्ति भी उन क्षेत्रों में जाना पसंद करती है, जो स्थिरता के साथ सतत विकास एवं समाज कल्याण के पति प्रतिबद्ध हैं।

**निष्कर्ष:**

वास्तव में, किसी बैंक या बैंकिंग क्षेत्र अथवा किसी भी व्यावसायिक क्षेत्र की प्रतिष्ठा और विश्वसनीयता के बारे में केवल संरचनात्मक और परिचालन दृष्टिकोण से विचार करना ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि वर्तमान विषयों, परिवर्तनों एवं बदलावों के संबंध में भी संवेदनशील होना और उन पर विचार करना अति-आवश्यक है। भविष्य की रणनीतियों और परिवर्तनों के लिये सदैव तैयार रहना बैंकिंग क्षेत्र की स्थिरता और सफलता के लिये आवश्यक है। पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन के सिद्धांतों को सक्रिय रूप से अपनाकर, व्यवसाय आगे रह सकते हैं और दीर्घकालिक सफलता के लिए खुद को स्थापित कर सकते हैं।

पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं को शामिल करना, विविधता को बढ़ावा देना और विकसित नियमों के बारे में सचेत रहना भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकते हैं पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन को अपनाकर, बैंकिंग क्षेत्र एवं कोई भी व्यावसायिक क्षेत्र संस्थान सामाजिक रूप से जागरूक उपभोक्ताओं और निवेशकों को आकर्षित कर सकते हैं और अपनी वित्तीय संभावनाओं में सुधार कर सकते हैं। पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन को प्राथमिकता देने कोई भी व्यावसायिक क्षेत्र उभरते व्यावसायिक परिदृश्य में प्रतिस्पर्धी बने रहने के साथ-साथ एक स्थायी और उज्ज्वल भविष्य की नींव डालने में सक्षम हो सकता है।

\*\*\*\*\*

----- SU-DO-KU -----

To solve a su-do-ku puzzle, every digit from 1 to 9 must appear in each of the nine vertical columns, in each of the nine horizontal rows, and in each of the nine boxes.

5	3			7				
6			1	9	5			
	9	8					6	
8				6				3
4			8		3			1
7				2				6
	6					2	8	
			4	1	9			5
				8			7	9



----- FIGURE-IT-OUT -----

□	□	□	□	□	□	□	= 7
9	7	4	5				
□	□	□	□	□	□	□	= 8
4	2	6	4				
+	-	x	÷				

Place the four numbers in the 1st, 3rd, 5th and 7th boxes and whatever operators you want to use in the 2nd,4th, and 6th boxes in the correct order to get the answer. Use the numbers only once. Operators can be repeated.

When you curtail a word, you remove the last letter and still have a valid word. You will be given clues for the two words, longer word first.

See example to help you solve the riddle.

Low-lying wetland -> A Planet

Ans: Marsh -> Mars

Here you go!

1. A large group of people -> A bird
2. To stick something -> Something that is over
3. Loose rock fragments -> Serious



Answers to the Fun Corner on page No. 68



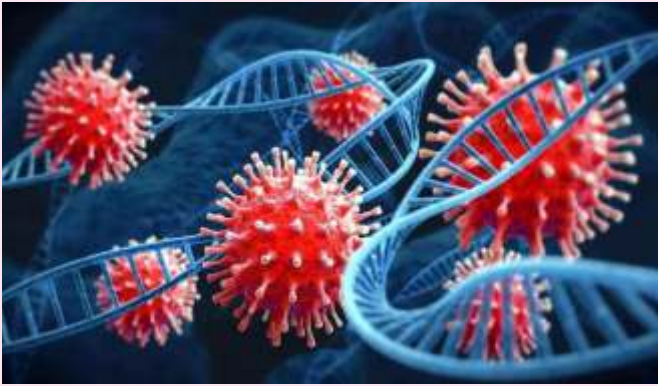


Shreyas contest 2023  
English Humorous Article  
1st prize

# HOME ALL



**Bharathi D**  
SWO-A  
Zonal Inspectorate  
HO, Bengaluru



“What genre is covid which can evoke laughter even in face of death” as I wonder, I hear loud thud of a book on my table. “Enough of day dreaming? Go, fetch some groceries and veggies for breakfast” my wife tells eyeing me suspiciously. She suspects me of day dreaming and she's justified in doing so as there were days when I had lured her into marrying me assuring that I would be a millionaire soon. But, now I can take her to a mill through polluted air in a suburb ...precisely mill-n-air. Yes, I am into a start-up and hunting for investors. Due to covid lockdown, my family and I are staying at home.

I look at her blankly, “the groceries I fetched sometime back, are they all over?”

She says, “Oh! You mean during the first lock down? You purchased groceries and processed food as if stores would never open again. The Milkmaid tins and maggi packets are still lying there. Their expiry dates are fast approaching and I don't know what to do with them”.

I ridicule her, “You proudly claim to make several delicacies even out of spoiled milk. Please extend your expertise here too. Then to exhibit my expertise I suggest, “Shall we sprinkle salt or turmeric to extend their shelf life? And now for breakfast, let's have maggi with milkmaid,” I blurt out.

She shoots a weird look at me and nodding her head in disbelief walks into the kitchen. Both my kids lift their heads from their most prized possession (mobile phones) and shout in unison, “Mummy, we can't eat that combination”. Rarely do they look away from their phones and I am happy that my dialogue has struck a chord. I am sure my kids will forever remain indebted to Corona for its unabated support, be it the phones they got without asking for, exams they passed without writing or attendance they got while their grandparents attended online classes. They indeed call the virus “Corona Deva” (God). And when their exams are approaching, they worship and invite the virus with all devotion and when he finally arrives, the jubilation is beyond description.

I follow my wife into the kitchen, “Then what's for breakfast, Jaanu?”. Words like jaanu, sweetheart are long lost in our decade long marriage. So my eight year old daughter immediately senses it and says “Maa, papa is trying to butter you.” And she's absolutely right as my survival purely depends on this. My already deprived tongue craves for roadside vadapav, paani puri and golgappa and if I don't use these cuddling words, I might not get even plain poori and paani (plain water).



But I admit and appreciate my wife's passion for food preparation. It's only that spices / powders / salt slip off her fingers in wrong quantities and create disasters!! Well, she blames her hectic office schedule for

non- realisation of her long cherished culinary interests and now against all our pleas, has decided to wing her aspirations. She has spent a fortune on new utensils, kitchen accessories, rarest of rare spices and exotic flavouring agents and has literally tried out all dishes from Masterchef. But on tasting them, her expression is always “not-all-that-good” and then consoling herself, “May be they only look good in cookery shows, but might taste ordinary even there”. And I dare not contest that, for its better to eat something than starve!

“Fetch groceries quickly while I mop the floor”, she says. Now I receive a call from an investor and as I move around answering it, I hear her music, “Don't you see that I am mopping and the floor is wet yet”. On hearing this,



I immediately switch to tip-toeing, but she's not ready to forego my minor mistake “Look at those foot prints, I can't take this. Henceforth you clean the floor”, she orders. It looked like she has been waiting for an opportunity to get rid of this job forever. I truly miss my maid who never complained. Now, I try to find a middle path, “Baby, I do the vessels while you do the floor, okay?” She doesn't agree. “See, you always wanted to slim down. Gym, walk, exercises never helped. But you are almost there now! What made this possible? Sweeping and moping!!” I declare with open arms gesturing the announcement of a winner in a contest. She shoots back “You too fancy Hrithik Roshan, but look at your pot belly. So, henceforth you mop and get back to shape!” she says. Middle path failed and it seemed like end of path for me. As regards my pot belly, I blame it solely on waist belts for they assure to hold in place bigger pants I buy to provide for my ever growing belly. I admit that my wife too has made several efforts to reduce my belly by buying super foods like tofu, broccoli, fox nuts, oats etc. But due to their weird taste, these are

stealthily given away by me to my maid. Now, my wife figures out the secret behind my maid's perfect figure.

After the call, I take a bag and leave. “Don't fetch maggi and leave the bag in the balcony once you return” my son says. The groceries lie in the balcony for 24 hours while veggies undergo intensive cleaning as per covid norms. As I give these vegetables a bubble bath, I wonder how they are way luckier than my kids. As if reading my mind, my wife snaps, “It's all Karma - what goes around comes around. You never helped me with the kids when they were young. Hence this covid and see, you are washing these vegetables”. I am shocked. Is she holding me responsible for occurrence of covid. How did that lab in China get so lucky to escape all blame?

My shrewd wife calculates, “You are saving on the salary of a maid and cook. It must be a huge sum by now” I immediately become defensive, “I bought kids their mobiles out of that saving.” She retorts, “But they are basic models equal to just one month's salary. What will you do with the remaining money?” When I am about to say I want to buy shirts, she tells, “You buy me jewellery, okay!”

Now we retrieve to our rooms for work, and kids to their rooms for online classes. And lunch is gala time as we huddle up in front of the TV. But a major part of it is lost discussing what to watch. None of us concur on a single topic and it is confusion always. With this, thirty minutes break flies and we retrieve to our rooms. Then I slowly sneak out and watch a movie for 30 minutes. My one hour lunch break is kept a secret. But my 5 year old son soon unveils the shrouded mystery of why all movies show either “resume” or “watch again”. And now I have to battle fiery glances hurled at me.

To feel connected in an otherwise disconnected world created by the pandemic, we participated in the initiative of lighting a lamp and ringing a bell. But, my family goes overboard in everything. We lit several rows of lamps making it look more like Diwali than pandemic!! And each one of us banged a huge steel plate with a heavy spoon sounding very much like a parade that the reverberations must have traversed the cosmos and reached Varuna Deva, The Raingod. For the very next day, the sky rumbled and it showered.

Birds swirled and played in puddles of rain water.

Flower-beds, plants rejoiced, “Just one species (human) is imprisoned and we are enjoying an unpolluted environment with timely rains. May this lockdown continue forever”, they seemed to exclaim. I envy my neighbours who stroll out on pretext of taking their pets for a walk. But my two pets (son and daughter) are not competent enough for that. But, I must admit that they are more disciplined now, for just one sight of a policeman with lathi at far end of road is enough to keep my son at home. Covid achieved what parents couldn't!!

Corona barged in without giving a clue. Or I would have had a start up in sanitizers, gloves, masks and my dream of a millionaire would have been realised easily. For the sudden, relentless and thumping entry it gave, it finally had to surrender to women and their preference for beauty over the virus. Now, the virus itself does not what to do!! For women use sanitizers as perfumes and even choose their flavour!! My wife likes orange while my daughter goes for strawberry. N95 masks are thrown aside as they come in only two shades. They buy masks that match their outfits. Infact my wife and daughter search for dresses with in-built masks. Branded masks are preferred just for flaunting. Their X-ray eyes first scan dresses, then shift to masks keenly searching for their brand tags. They also insist that I buy shirts fitted with masks. And if I ever forget to wear a mask, my wife mocks that I am trying my best to spread the virus far and wide to bring in herd immunity, thus contributing my little to humanity.

With beauty parlours closed for lock down, beauty care is under the able guidance of our well-established tutor, **You-Tube**. The chiller tray in my refrigerator now looks



like housing a rainbow, with bottles of colourful face packs, orange (orange peel paste), red (strawberry paste), green (cucumber paste), yellow (besan flour in curds), white(rice flour scrub), translucent gel (aloe vera). There's one huge bottle containing a multicolour paste, basically a hair mask made of mehndi, hibiscus flower, hibiscus leaves, beetroot and onion. Plants in my garden are continuously sacrificing their leaves to provide for these hair masks. My son makes spikes on his head with this paste and calls himself Pokemon. All faces in my house have one colour or other on them. The whole family looks funny sometimes and fearful several times. Sanitizers, face packs and hair masks, all used at one time emit a pungent smell which I fear might be a bigger cause for death than the virus. One day, around 9 pm, there was a power cut. It was pitch dark and I saw a white, circular, fearful thing with three dark spots emerge from darkness and slowly move towards me. I was scared to death. When power resumed I saw it was my wife with a face-pack on. I seriously hope and wish for parlours to reopen at the earliest.

We take Vitamin-C supplements to develop immunity, but my son pops them up like toffees. Our daily health care regime of green tea with several medicinal herbs in addition to breathing exercises and steam inhalation had made our air tracts so clear that the virus could directly enter our lungs. My wife was the first to be affected and as per government norms went into 14 days quarantine. Defying all our fears of the deadly virus, we could hear only giggles and laughter from her room as she watched her favourite movies, reality shows and season episodes. She fixed daily targets, meticulously accomplished them and even cleared all backlogs. With timely supply of nutritious food, sufficient rest and entertainment she appeared healthier than ever. Post quarantine, she literally cried out, “I miss my quarantine days. It was my best ME ever.” Now each one of us is secretly wishing for corona virus to bestow on us our most wanted “ME” time.

Excess togetherness has left us craving for some exclusive time for ourselves. We no longer complaint on missing each other. Tonight we all are huddled up to watch the movie “Home Alone”. As we watch, each of us is envying the boy who is alone in his house. The only complaint now is that we are not as lucky as him.

\*\*\*\*\*



Shreyas contest 2023  
Hindi Humorous Article  
1st prize

## मोबाइल फ़ोन के मनोरंजक किस्से

रोचक दीक्षित

प्रबंधक

सेवा इकाई अनुभाग, प्र.का.



आज कई सारे छात्र अपने महाविद्यालय के एलुमनी सम्मेलन में मिल रहे थे। कुछ लोग केवल ढक्कन खुलने का इंतजार कर रहे थे, कुछ केवल तस्वीरें लेने में व्यस्त थे और अधिकांश लोग बातें कर रहे थे। लड़कों का एक छोटा समूह चाय की चुस्कियों के साथ अपने वर्तमान जीवन के बारे में बात कर रहा था।

“जब से मोबाइल फोन आए हैं, जिंदगी नर्क बन गई है।” इतना कहकर गौरव ने सभी के दिलों के तार छेड़ दिए और यहीं से किस्सों का सिलसिला शुरू हुआ।

“अब मोबाइल फ़ोन, फ़ोन रहा ही कहाँ! कॉल लगने के अलावा सारे काम होते हैं इसमें।” शशांक ने कहा।

“मेरी सुनो, मैं एक बार ऑफिस से सीधे जिम चला गया तो घर पहुंचने में देरी हो गई। बीवी को मैसेज भेजा कि जिम में हूँ, ऑटोकरेक्ट हो गया कि जेल में हूँ और उसके बाद फोन बंद हो गया।” नितिन ने कहा।

“फिर?” अंकित ने पूछा।

“होना क्या था, एक घंटे बाद घर पहुंचा तो देखा आधे से ज्यादा रिश्तेदार घर पर खड़े थे। आज भी लोगों को लगता है कि उस दिन मुझे पुलिस पकड़ कर ले गई थी और मैं घूस देके वापस लौट आया था।”

“हाँ, ऑटोकरेक्ट से तो मैं भी परेशान हूँ। भैया लिखो, पहिया बन जाता है। काला लिखो, नाला बन जाता है। दिल लिखो, बिल बन जाता है। बड़ी समस्या है। उस दिन बॉस का मैसेज आया क्या कर रहे हो। मैंने लिखा खाना बना रहा हूँ, बन गया बहाना बना रहा हूँ।” चित्रांश ने बताया और सभी ज़ोरों से हंसने लगे।

“मेरे बॉस को तो नया शौक लगा है, केवल इमोजी में बात करने का। एक बार मैंने पूछा कि उन्होंने मेरी छुट्टी मंजूर की या नहीं, जवाब में उसने एक आंख और चार बकरियां बना दी।” “मतलब?” गौरव मुझसे पूछा

“मैंने भी पूछा, तो बोले मतलब ‘आई फॉरगॉट’। नितिन ने बताया और हंस पड़ा।

“मेरे दोनों बच्चों को भी यही बीमारी है। मैंने बेटी को स्कूल फीस के पैसे दिए थे। शाम को मैंने पूछा फीस भर दी, उसने पौधे का इमोजी बना के भेज दिया। ऑफिस के एक नए कर्मचारी ने बताया, उसका मतलब है ‘पेडा’। शशांक ने अपना अनुभव बताया। रोहित बड़ी देर से शांत था और सारी बातें सुन रहा था। “रोहित, तुम्हारे साथ ऐसा कोई किस्सा नहीं हुआ?” अंकित ने उससे पूछा।

“किस्सा तो तब हो भाइयों जब फ़ोन आराम से चले। कभी कोई ऐप अपडेट होता रहता है, कभी सॉफ्टवेयर अपडेट होता रहता है, इतनी फरमाइशें तो मेरे घर वालों की नहीं होती मुझसे जितनी इसकी है।” रोहित ने अजीब चेहरा बनाके कहा और आगे बताया, “और क्या! और जब कुछ अपडेट नहीं होता, तब पता नहीं कौन-कौन सी सूचनाएं आती रहती हैं!”

“सूचनाओं का ही तो सारा रोना है। पूरे दिन मेरे परिवार के चैट ग्रुप में गुड मॉर्निंग, गुड इवनिंग चलता रहता है। हर रोज़ किसी का जन्मदिन या शादी की सालगिरह होती है। पूरे दिन उसकी सूचनाएं बजती रहती हैं। केक की तस्वीरों में भी प्रतियोगिता सी होती है। फिर किसी को शुभकामनाएं दो और कोई रह जाए तो मुसीबत।” शशांक ने कहा।

“मेरी पत्नी तो खुद मेरे फ़ोन से अपने जन्मदिन पर केक के साथ अपनी चुनी हुई तस्वीर और एक लंबा संदेश भेजती है। और अगर मुझे शांति से जीवन जीना है तो मैं इससे इनकार

नहीं कर सकता।” नितिन ने बताया।

“मेरी माँ ने तो सेल्फी खींचना सीख लिया है। जब देखो मेरी और अपनी उल्टी सीधी तस्वीरें खींचती रहती हैं और इंटरनेट पर डालती रहती हैं।” गौरव अंदर से बोला।

“कुछ दिनों पहले मुझे हल्का बुखार सा था, मेरी माँ ने कहा – और दिन भर फोन चलाओ! बच्चों के सामने, बताओ! अब मैं अपने बच्चों को किस मुँह से मना करूँ!” रोहित ने कहा।

“और ना जाने क्यों अब हर कोई वीडियो कॉल पर ही बात करना चाहता है! कभी-कभी ठीक है मगर दिन भर की थकावट के बाद घर जाओ, मुँह हाथ धो कर जैसे ही खाना खाने बैठो, पहला निवाला मुँह में रखते ही किसी ना किसी रिश्तेदार का वीडियो कॉल आ जाता है।” मयंक ने कहा।

“जब भी हम कुछ खाने के लिए बाहर जाते हैं, तो मेरा बड़ा बेटा सबसे पहले भोजन की सभी कोनों से दर्जनों तस्वीरें लेता है और हम भोजन को छू ही नहीं पाते। बाद में मेरी पत्नी शिकायत करती है कि खाना ठंडा है और वेटर से इसे दोबारा गर्म करने के लिए कहती है। मैं हमेशा इन दोनों के बीच पिसता रहता हूँ।” नितिन ने अपने दिल की बात कही।

“मेरी छोटी बेटी ने तो एक बार मेरा फ़ोन दाल के भगोने में छुपा दिया था। अब चार साल की बिटिया से क्या कहता? उसी दिन तनखाह आई थी, लग गया फटका।” मयंक ने कहा।

“मेरी बेटी को अपने जन्मदिन पर वो मशहूर एक लाख वाला फ़ोन चाहिए। बचपन में मैंने अगर ये अपने माता-पिता से कहा होता, तो मुझे एक लाख जूते ज़रूर पड़ते।” गौरव ने हँसते-हँसते बताया।

“मित्रों, ध्वनि संदेश बनाने का विचार किसका था? और क्यों! क्या तुम लोग भी गलती से ध्वनि संदेश गलत लोगों को भेज देते हो?” शशांक के कहा।

“अरे हाँ! मेरी पत्नी बताती रहती है कि घर की काम-वाली को जब छुट्टी चाहिए हो, वो ध्वनि संदेश भेज के फ़ोन बंद कर देती है, पूछने का चक्कर ही नहीं।” प्रमोद ने कहा और हँस दिया।

“मैं तो यार इसे चार्ज कर-कर के परेशान हूँ। बैटरी की संख्या बढ़ती जा रही है और उपयोग का समय घटता जा रहा है। जब

ज़रूरत हो तब बैटरी दो चार प्रतिशत से ज्यादा हो ही नहीं सकती और आज कल फ़ोन बंद हो जाए तो लगता है दुनिया ही खत्म हो गई हो।” प्रमोद ने अपनी टिप्पणी दी।

“हाँ, यह तो है। पुराने छोटे फ़ोन कितना चलते थे ना! चार्ज करो और बस भूल जाओ। और अब तो भूलने की ज़रूरत ही नहीं, दो कमरे के घर में ही रोज़ खो जाता है मेरा फ़ोन।” मयंक ने पुराने दिन याद करते हुए कहा।

“क्या तुम लोगों को भी दिन भर ऋण, संपत्ति और अन्य प्रकार की बिक्री के लिए दर्जनों कॉल आते रहते हैं?” गौरव ने पूछा।

“हाँ भाई, ज्ञात कॉल एक आता है और स्पैम कॉल दसा। मना कर लिया, अनुरोध किया कि कॉल न करें, चिल्ला लिया मगर वो मानते ही नहीं! नंबर ब्लॉक कर दो, तो दूसरे नंबर से कॉल करते हैं।” प्रमोद ने भी अपनी व्यथा बताई। उसका चेहरा देख कुछ दोस्त हँस रहे थे तो कुछ को तरस भी आ रहा था, लेकिन सहमत सभी थे।

“यही कारण है कि मैं अपने फ़ोन को साइलेंट मोड पर रखता हूँ। पहले मैं इसे वाइब्रेशन मोड पर रखता था। लेकिन जब भी मैं किसी ज़रूरी बैठक में होता था और मोबाइल वाइब्रेट करता, ऐसा लगता था जैसे भूकंप आ रहा हो।” शशांक ने कहा।

“क्या तुम लोगों को भी किसी महिला के ‘हैलो’ ‘हैलो’ बोलने की आवाज़ आ रही है?” रोहित ने सभी से पूछा।

सभी एक दम से शांत हो गए और ध्यान से सुनने लगे। आवाज़ तो आ रही थी, सुनाई भी दे रही थी। कुछ देर में एहसास हुआ कि आवाज़ नितिन के पैंट की जेब से आ रही थी। लगता है आज फिर एक बार नितिन के फ़ोन से जेब में रखे-रखे उसकी पत्नी को कॉल लग गया था। यह भी एक जादू है, इंसान जिसकी बुराई कर रहा हो, गलती से फ़ोन भी उसे ही लगता है। जैसे ही उसने फ़ोन कान से लगाया, पत्नी जी ने ऊंचे स्वर में चीखते हुए कहा – मैं कब कहती हूँ तुम्हें मेरे जन्मदिन पर पोस्ट डालने के लिए? आशा है नितिन के घर लौटने पर सच और झूठ का फैसला अहिंसक तरीके से ही हो और प्रभु नितिन की रक्षा करें।

\*\*\*\*\*



Shreyas contest 2023  
English Poetry  
1st prize

## “Echoes of Thankfulness”

In the tapestry of existence, woven with threads unseen,  
A melody of gratitude, a hymn serene.  
Not borrowed, but born from the heart's own grace,  
A timeless dance, an authentic embrace.

Beneath the canvas of celestial skies,  
Illuminated by thankfulness that never lies.  
No borrowed prose, no stolen verse,  
Only genuine whispers, a universe.

Gratitude, a sun that warms the soul,  
No shadows cast, no hidden toll.  
Original echoes of appreciation's song,  
A symphony of sincerity that can't go wrong.

In the garden of life, where seeds of kindness grow,  
Untainted blooms of gratitude, an eternal glow.  
Not plagiarized petals, but uniquely sown,  
A mosaic of emotions, beautifully known.

With each sunrise, a gift to behold,  
An untold story, authentically told.  
No mimicry of sentiment, no mimicry of grace,  
Just a heartfelt journey, a genuine embrace.

Gratitude, a river that freely flows,  
No borrowed currents, no borrowed woes.  
An unscripted dialogue with the cosmos,  
A dance of thankfulness, where authenticity shows.

So let the pen of appreciation write,  
An uncharted script, bathed in the purest light.  
No borrowed ink, no stolen quill,  
Just an original narrative, serene and still.



**Prashanth K**  
Officer  
RAH, Puttur



Shreyas contest 2023  
Hindi Poetry - 1st prize

# कृतज्ञता

अभिषेक गर्ग

प्रबंधक

वित्तीय प्रबंधन विभाग, प्र.का.



जीवन के इस अनमोल सफर में,  
चाहें सुख-दुःख हो या हो सफलता।  
मिला है हर दम साथ जिन लोगों का,  
करता हूँ व्यक्त उनके प्रति **कृतज्ञता**॥

जमाने गुज़र गए जमाने के साथ चलते,  
बीत गए दिन कभी रोते तो कभी हँसते।  
हर हालात में मिलते गए **राही साथ चलते**,  
कृतज्ञ रहूँगा सदैव यादों में याद करते॥

जन्मदाता हैं जो इस तन- मन- जीवन के,  
पाला है जिन्होंने सभी इच्छा पूरी करके।  
**माता-पिता** के रूप में साक्षात **ईश्वर** हैं वो,  
कृतज्ञता बहुत छोटा शब्द है सम्मान में उनके॥

पढ़ना-लिखना जिन्होंने है हमें सिखाया,  
किताबों का ज्ञान जिन्होंने है कराया।  
कृतज्ञ हूँ उन प्रिय **अध्यापकों** के प्रति,  
ज्ञान का दीपक जिन्होंने मन में जलाया॥

करता हूँ प्रणाम **अन्नदाता किसान** को,  
करता हूँ प्रणाम देश के **वीर जवान** को।

कृतज्ञ हूँ इस देश की **पावन धरा** के प्रति,  
करता हूँ प्रणाम भारत के **संविधान** को॥

चलता है घर मेरा जिसके सहयोग व साथ से,  
मिलता है सम्मान समाज में जिसके प्रताप से।  
कृतज्ञ हूँ मैं अपनी कर्मभूमि **केनरा बैंक** का,  
सदैव बेहतर करता रहूँगा सर्वोत्तम प्रयास से॥

मोल नहीं है एक दूजे के साथ का,  
मोल नहीं है परस्पर विश्वास का।  
कृतज्ञता तो बस जरिया है **जीवनसाथी**,  
अन्यथा मोल नहीं तुम्हारे अनमोल साथ का॥

स्वार्थ की भावना से सदैव परे रहकर,  
निःस्वार्थ सहारा सदा जिनका है मिला।  
ऐसे **मित्रों** को भी करता हूँ कृतज्ञता से प्रणाम,  
जीवन में जिन्होंने दिया खुशियों का सिलसिला॥

चाहे जीवन में ऊंचाइयों के छू लूँ मैं शिखर,  
चाहे जीवन में कितनी भी आए मुश्किल डगर।  
अपनों के साथ का सदैव रहा है सहारा,  
करता हूँ व्यक्त कृतज्ञता **अपनों के साथ** परा॥

## HEAD OFFICE

ED Sri. Debashish Mukherjee visited GTPC Wing, Manipal on 29.05.2024. He was welcomed by Shri R. Krishna Prasad, GM (D) GTPC Wing. A presentation on the organogram, functions, performance of GTPC Wing was made. The ED appreciated the performance of the Wing in terms of TAT and fee based income earned.



## BANGALORE

An Orientation Programme for all newly joined executives in Bengaluru CO was conducted on May 18, 2024, at LDC, Bengaluru. Smt. Shikha Mehta, AGM, CO Bengaluru, welcomed Sri Bhavendra Kumar, ED, Shri. U S Majumder, CGM, RM Wing, Shri Mahesh M Pai, GM & Circle Head, Regional heads and other executives. In his keynote address, ED, Sri Bhavendra Kumar emphasized the importance of understanding local traditions, culture, and language to engage with customers effectively. He urged the Branch-In-Charge to stay proactive and highlighted the contemporary significance of customer service in the banking landscape.

## CIBM

The Jury council of The Golden Globe Tigers Awards and World HRD Congress awarded CIBM, Manipal with "The Golden Globe Tigers Award 2024". The award was received by Sri Abinash Behera, SM & Faculty, CCoE, Gurugram on 08.05.2024.



## BHUBANESWAR

Sri Shreenath Joshi, General Manager & Chief Learning Officer, signed the MoU for "Joint Certification of Canara Bank employees in AML, KYC & Compliance", on behalf of Canara Bank. Sri LVR Prasad, Director (Training) signed the MoU on behalf of IIBF, Mumbai on 6th May, 2024.





Bhadrak RO held Branch Managers' Review meeting on 03.05.2024. Shri. Jagadish Chander, GM, Shri. Rama Naik, DGM, Shri. P Balasubramanian AGM, Shri. V Agilan AGM & RO Head and Branch Heads were present in the meeting. During the review, a detailed discussion was made about Canara Premier League and its scoring matrix.



ED, Shri. Bhavendra Kumar, visited Bhubaneswar CO on 19.04.2024, Performance review of COs, ROs, VLB and ELB branches was conducted. Shri Jagdish Chander, GM, Shri P Thakur Naik, DGM, Shri Netra Mohan Patra, and Sri. Rama Naik DGM(D), other executives and staff of the Circle Office were present. Four new products Canara Angel, Canara Heal, Canara My Money and Canara Ready Cash were re-launched aiming at enhancing customer experience and smoothening banking operations.

## CHENNAI

The 133rd Birthday celebration of Dr. B.R. Ambedkar was celebrated in co-ordination with Canara Bank SC/ST Employees' welfare association, Chennai Unit at Chennai Circle office on 26.04.2024. The function was presided over by Sri. Purushothama Dass, Founder and Chairman of CBSCSTEWAs and Sri. NA. Durai Bhaskar, Central committee member CBSCSTEWAs in the presence of C. Tilak, Chennai Circle Secretary CBSCSTEWAs. Sri. M. Punitha Pandiyam, Vice Chairperson, Tamilnadu State Commission for SC/STs graced the function as Chief Guest. Sri. Nair Ajit Krishnan, CGM, Chennai CO was the Guest of honour.



Chennai CO felicitated Grandmaster Sri. Gukesh D, for his outstanding achievement at the FIDE Candidates Tournament 2024 being the youngest winner of the tournament. Sri. Shankar Y, DGM and Sri. Harendra Kumar, AGM visited his residence with Gifts and greeted and appreciated for his achievements.



Sri. Hardeep Singh Ahluwalia, ED visited Chennai CO on 09.05.2024 and 10.05.2024 for meeting Hon'ble



DRAT Chairperson and DRT Presiding Officers at DRT Chennai and for review of select ARM Branches. Performance review of select ARM Branches of Chennai, Coimbatore, Madurai, Vishakapatnam and Kadappa was done. During the Review, ED stressed the importance of Filing of IA for declaration of assets, PIRP, Wilful defaulter notices, look out circular, and SARFAESI sale for effective Recovery.

Sri. S K Majumdar CFO&CGM, FM Wing presided the Business Review meet held at Chennai CO on 24.05.2024. Sri. Nair Ajit Krishnan, CGM, Chennai CO welcomed the participants and delivered the inaugural address along with presenting the comparative analysis of our bank's performance with other PSBs. He emphasized on the urgency for improving customer connect by effectively using the CROs. Smt. K A Sindhu, CGM(D) presented the highlights of the Circle's Performance during the previous financial year and during past two months. The presentation covered various aspects including the comparison of our Bank's market share vis-à-vis other banks. SWOT analysis of the Circle and the Focus areas were also highlighted. Sri. Rajesh Kumar Verma, DGM was also present during the meet.



## HYDERABAD

Customer Relationship Officers review meeting was conducted by RO Hyderabad North on 06.05.2024.

The meeting was chaired by Sri K Balakrishna, DGM. Sri B Suresh Kumar, DM, explained the product features of newly introduced products. He advised the team to effectively utilize Analytical Leads like Cross Sell360, Customer360 and Data in a box to identify prospective customers, canvas business and urged to make use of the knowledge repository & marketing materials effectively.



OL Section, CO Hyderabad organised Library Day on 01.04.2024. Books pertaining to different categories such as Health, Children's Books, Literature (novels and stories), Motivational books, Banking and, Books related to official language, JAIIB, CAIIB, were displayed for borrowing.



## LUCKNOW

Smt. C S Vijayalakshmi, GM, RLFP Wing, visited Lucknow CO on 04.05.2024. During her visit, a review meet of Circle on recovery parameters was held in the presence of Sri Ranjeev Kumar, GM, Sri Sanjay Kumar,

DGM, Sri Pradeep Kumar R, AGM, Sri Naveen Pandey, DM and Sri. Kunwar Amogh, DM.



ED, Sri Debashish Mukherjee visited Lucknow CO on 15.05.2024 for review of ROs and branches. After the welcome address by Sri. Sanjay Kumar, DGM, Lucknow CO, Sri. Ranjeev Kumar, GM & Circle Head, Lucknow CO, highlighted the performance of the CO under various parameters. ED, Sri Debashish Mukherjee in his keynote address emphasized on Four Points - CASA contribution, Market Share of our Bank, Slippage Management which starts with SMA management and profitability & income.



## MADURAI

Customer Service Meeting for the month of April 2024 was conducted on 24.04.2024 at Madurai CO. Customers attended the meeting and interacted with Executives of our Circle Office. Madurai, Theni & Tiruppur Regional Offices joined the meeting through V.C.



## MUMBAI

A MoU was signed between Canara Bank and Society for Innovation & Entrepreneurship, (SINE) IIT Bombay on 03.04.2024 for extending financial assistance to Start-ups. With the signing of the MOU, our bank will provide need based financial assistance to Start-ups which are selected by SINE and provided with seed fund support under SINE's Incubation Program. The Signing Ceremony was held in the presence of Sri Ashok Chandra, ED. The program was graced by Sri Purshottam Chand, CGM, CO, Mumbai, Dr. V K Rao, Deputy Director Finance, IIT Bombay, Sri Santhosh Gharpure, Professor In-charge, IIT Bombay and other Executives of Canara Bank and SINE. The MOU was signed by Sri Ranjeet Kumar Jha, DGM, CO, Mumbai (On behalf of our Bank) and Sri Shaji Verghese, CEO (on behalf of SINE).



ED, Sri. Ashok Chandra, visited our Mumbai CO on 17.05.2024 to review the business performance of Regional Offices and ELB/ VLB branches. Sri. Purshottam Chand, CGM & Circle Head, along with

Sri. Alok Kumar Agarwal, GM and other executives welcomed the ED. Welcome address was given by Sri. Purshottam Chand, CGM and highlights of Circle Business performance for FY 2023-24 and current quarter was presented.



## PATNA

Sri Bhavendra Kumar, ED, visited Muzaffarpur RO on 30.04.2024 for Business review of RO, RAHs, MSME Sulabh and Branches. In his keynote address, the ED emphasized upon the present trend in the Banking arena. He briefed about the rising need for improving liability & asset portfolio of the Bank to have positive impact on the NIM of our Bank.



## PUNE

ED, Sri Hardeep Singh Ahluwalia visited Pune CO 16.05.2024 for review of CRM Sections, Recovery Sections and Digital Sections of the CO and ROs. This was followed by Review of 6 selected ARM Branches. Smt Leena Peter Pinto, DGM, Pune CO gave the

welcome address. Shri Pramod Kumar Singh, Circle Head & GM highlighted the performance of the Circle under various business parameters for the pervious FY 2023-24. ED Sri H S Ahluwalia Sir in his keynote address emphasized on the contribution of each and every employee towards CASA enhancement, Market Share of our Bank in their respective area of operation, slippage management which starts with SMA management and profitability & income.



## TIRUPATI

Smt. Mamatha A Joshi, GM (D), PC Wing, visited Tirupati CO on 09.05.2024 for Review of selected AEOs, Agriculture potential branches and ACCs of Tirupati Circle Office. The review meeting was presided by Circle Head Sri I P Mithanthaya, GM(D). In his address, he discussed about strategies to be adopted by the AEO's and Branches in order to achieve 15% y-o-y Growth. Smt. Mamatha A Joshi, GM(D), PC Wing in her keynote address emphasized upon the present trends in the Banking arena. She briefed about the rising need for Agriculture portfolio of the Bank.



## आगरा

दिनांक 25.04.2024 को अंचल कार्यालय आगरा के परिसर में आस्ति वसूली प्रबंधन शाखाओं एवं साख-समीक्षा निगरानी अनुभाग हेतु समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक के मुख्य अतिथि व समीक्षक के तौर पर श्री हरदीप सिंह अहलूवालिया, कार्यपालक निदेशक उपस्थित रहे। इसके साथ ही अंचल प्रमुख श्री जोगिन्द्र सिंह घनगस एवं अन्य कार्यपालकगण तथा शाखा/अनुभाग प्रमुख भी उपस्थित रहे।



## चंडीगढ़

दिनांक 03.05.2024 को पंजाब सिविल सचिवालय-II, सेक्टर-9, चंडीगढ़ द्वारा एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर को अंचल कार्यालय चंडीगढ़ द्वारा प्रायोजित किया गया। रक्तदान शिविर का शुभारम्भ पंजाब सिविल सचिवालय-II के मुख्य सचिव श्री अनुराग वर्मा, आई.ए.एस. द्वारा किया गया। इस अवसर पर डीसी मोहाली,



इशिका जैन, आई.ए.एस., गृह सचिव, गुरकीरत कृपाला सिंह, आई.ए.एस., अंचल कार्यालय चंडीगढ़ के अंचल प्रमुख व महाप्रबंधक श्री मनोज कुमार दास, उप महाप्रबंधक श्री वेद प्रकाश व अन्य कार्यपालकगण एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

## दिल्ली

दिनांक 17.04.2024 को श्री देवाशीष मुखर्जी, कार्यपालक निदेशक की अध्यक्षता में अंचल कार्यालय, दिल्ली की कारोबार समीक्षा व कार्यनीति बैठक का आयोजन किया गया। अंचल प्रमुख श्री राजेश कुमार सिंह, महाप्रबंधक व अन्य कार्यपालकों द्वारा कार्यपालक निदेशक का स्वागत किया गया तथा अंचल के कार्यनिष्पादन पर प्रकाश डाला गया। अंचल कार्यालय तथा सभी क्षेत्रीय कार्यालयों के कार्यपालक, 46 ईएलबी/वीएलबी शाखाओं के प्रमुख, 7 खुदरा आस्ति केंद्रों के प्रमुख, 7 सुलभ प्रमुख बैठक में उपस्थित रहे, जिनके कार्यनिष्पादन की समीक्षा की गई।



## कोलकाता

दिनांक 25.04.2024 को कोलकाता दौर पर आए कार्यपालक निदेशक श्री देवाशीष मुखर्जी की गरिमामय उपस्थिति से कोलकाता अंचल गौरवान्वित हुआ। सभी क्षेत्रीय कार्यालय प्रमुखों, आरएच, एमएसएमई सुलभ, ईएलबी तथा वीएलबी शाखा प्रमुखों के साथ समीक्षा बैठक की शुरुआत हुई। इसके बाद अंचल प्रमुख श्री कल्याण मुखर्जी द्वारा अंचल के निष्पादन पर संक्षिप्त प्रस्तुति दी गई। कार्यपालक निदेशक श्री देवाशीष मुखर्जी ने अपने मुख्य भाषण में सभी प्रतिभागियों

को व्यवसाय विशेषकर कासा, रैम और वसूली में सुधार करने के लिए प्रेरित किया।



### लखनऊ

दिनांक 04.05.2024 को श्रीमती सी एस विजयलक्ष्मी, महाप्रबंधक, वसूली विधि व धोखाधड़ी निवारण विभाग, प्र.का. द्वारा अंचल कार्यालय लखनऊ का आधिकारिक दौरा किया गया। इस अवसर पर वसूली मापदंडों पर अंचल की समीक्षा बैठक आयोजित की गई और यह बैठक महाप्रबंधक श्री रंजीव कुमार, उप महाप्रबंधक श्री संजय कुमार, सहायक महाप्रबंधक श्री प्रदीप कुमार आर, वसूली अनुभाग के मंडल प्रबंधक श्री नवीन पाण्डे, श्री कुँवर अमोघ, मुख्य प्रबंधक एवं एआरएम वसूली टीम की उपस्थिति में आयोजित की गई। बैठक में उठाए गए मुद्दों का समाधान करने और अंचल स्तर पर एनपीए प्रबंधन में सुधार करने के लिए चर्चा की गई रणनीतियों को प्रभावी ढंग से लागू करने के निर्देश के साथ बैठक संपन्न हुई।



### मणिपाल

दिनांक 24.05.2024 को अंचल प्रमुख एवं महाप्रबंधक श्री जयप्रकाश सी की अध्यक्षता में जून तिमाही की ग्राहकों की त्रैमासिक स्थायी समिति की बैठक का आयोजन किया गया। अंचल के सहायक महाप्रबंधक श्री रविप्रसाद भट्ट सी ने उपस्थित सभी ग्राहकों का स्वागत किया। अंचल के अधीन आनेवाले सभी 7 क्षेत्रीय कार्यालयों की संयुक्त ग्राहक सेवा स्थायी समिति की बैठक में उडुपि-1 के क्षेत्रीय प्रमुख व उप महाप्रबंधक श्रीमती शीबा सहजन, उडुपि-11 के क्षेत्रीय प्रमुख व सहायक महाप्रबंधक श्री के श्रीजित उपस्थित रहे। शेष 5 क्षेत्रीय कार्यालय वीसी के माध्यम से बैठक में शामिल हुए। बैठक के दौरान ग्राहकों द्वारा उठाए गए विभिन्न मुद्दों पर अंचल प्रमुख द्वारा स्पष्टीकरण दिया गया। इस अवसर पर अंचल प्रमुख द्वारा उपस्थित ग्राहकों को सम्मानित भी किया गया।



### पटना

पटना गोला रोड के ग्राहकों की बेहतर सुविधा के लिए गोला रोड में केनरा बैंक की नई शाखा का उद्घाटन किया गया। शाखा का उद्घाटन अंचल कार्यालय पटना के महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख श्री अरुण कुमार मिश्रा के कर कमलों द्वारा किया गया। कार्यक्रम में अंचल कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालय पटना से सहायक महाप्रबंधक श्री ई विजय शंकर सहित बैंक के अन्य अधिकारीगण ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। कार्यक्रम में उपस्थित अंचल कार्यालय पटना के अंचल प्रमुख श्री अरुण कुमार मिश्रा ने कहा कि यह शाखा तमाम प्रकार के आधुनिक बैंकिंग से लैस होगी और यह केनरा बैंक के मॉडल शाखा के

रूप में कार्य करेगी। शाखा में अत्याधुनिक डिजिटल बैंकिंग व्यवस्था होगी एवं यह बैंक के कारोबार के बेहतर केंद्र के रूप में विकसित होगी। अंचल कार्यालय पटना के अंतर्गत यह 301वीं शाखा होगी।



### पुणे

दिनांक 12.04.2024 को कार्यपालक निदेशक श्री भवेन्द्र कुमार का पुणे अंचल में आगमन हुआ। इस अवसर पर पुणे अंचल के क्षेत्रीय प्रमुखों, खुदरा आस्ति केंद्र प्रमुखों, एमएसएमई सुलभ प्रमुखों, चुनिंदा शाखा प्रमुखों एवं अंचल कार्यालय के कार्यपालकों के साथ कारोबार संबंधी समीक्षा बैठक आयोजित की गई। पुणे अंचल प्रमुख एवं महाप्रबंधक श्री प्रमोद कुमार सिंह की उपस्थिति में इस बैठक की अध्यक्षता कार्यपालक निदेशक ने की। अंचल प्रमुख श्री प्रमोद



कुमार सिंह द्वारा पुणे अंचल के कारोबार प्रोफाइल एवं उपलब्धियों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की गई। श्री भवेन्द्र कुमार, कार्यपालक निदेशक ने उपस्थित कार्यपालकों को संबोधित करते हुए कहा कि वर्ष 2024-25 में हमारे बैंक का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र बिंदु होगा बैंक के कासा को बढ़ाना। कार्यपालक निदेशक ने कहा कि नई पीढ़ी के ग्राहकों अर्थात एक्स, वाई एवं जेड श्रेणी के ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए बैंक द्वारा विभिन्न नए उत्पादों जैसे - केनरा एंजेल, केनरा हील का शुभारंभ किया गया है।

### राँची

दिनांक 16.04.2024 को कार्यपालक निदेशक श्री भवेन्द्र कुमार द्वारा अंचल कार्यालय राँची का दौरा किया गया। इस दौरे का उद्देश्य क्षेत्रीय कार्यालयों, वीएलबी, खुदरा आस्ति केंद्रों और एमएसएमई सुलभ के कार्य-निष्पादन की विस्तृत समीक्षा करना था। बैठक में 4 क्षेत्रीय कार्यालय के प्रमुखों, 11 शाखा प्रमुखों और 8 इकाई प्रमुखों ने भाग लिया। इस समीक्षा का मुख्य विषय रहा- दिनांक 12 अप्रैल 2024 की तुलना में दिनांक 31 मार्च 2024 तक हमारी शाखाओं और इकाइयों के कार्य-निष्पादन का आंकलन करना और यह सुनिश्चित करना था कि कॉरपोरेट उद्देश्यों को जमीनी स्तर पर कार्यावित हो। श्री भवेन्द्र कुमार ने प्रमुख कारोबारी मापदंडों के आधार पर सभी शाखाओं और इकाइयों की गहन समीक्षा की। उन्होंने सशक्त ग्राहक संबंध बनाने के महत्व पर बल दिया तथा शाखा प्रमुखों और कर्मचारियों को व्यक्तिगत सेवाएं प्रदान करने के लिए अपने उत्पादों से संबंधित ज्ञान को बढ़ाने हेतु प्रोत्साहित किया।





WAITING FOR SETTLEMENT BE LIKE...



Shreyas contest 2023  
Cartoon - 1st prize

Refer to "drawer" by:  
**Rasika N**  
Officer, Srirangam



Shreyas contest 2023  
Cartoon - 2nd prize

Refer to "drawer" by:  
**Dheeraj Juneja**  
Officer, Surat RO





# The Wise Old Owl Story

In a dense forest, there stood a tall, sturdy oak tree. In this tree lived a wise old owl, known for his thoughtfulness and judicious advice.

One day, a group of lively forest animals gathered beneath the oak tree. A curious squirrel, eager for conversation, turned to the owl and asked, "Mr. Owl, why do you sit so quietly? Why don't you join our chatter?"

The owl, opening his eyes wide, replied in a calm, measured tone, "Dear friends, In silence, I find the

wisdom to listen and learn. The more I hear, the more I understand."

A young rabbit, twitching his nose, burst out, "But Mr. Owl, how do you learn if you never speak?"

The owl nodded gently and explained, "I gather much knowledge by listening carefully to others. Talking less helps me to think and reflect on what I have heard."

A chatty magpie, fluttering her wings, chimed in, "But don't you ever get bored, just listening all the time?"

The wise old owl looked at her with kind eyes and said, "Not at all, my friend. Every voice in the forest has a story or a lesson that enriches my understanding.

Patience and silence gives me the space to appreciate them."

The animals fell silent, pondering the owl's words. The squirrel who was, thoughtfully listening, said, "I see your point, Mr. Owl. Maybe we should all try to listen more and speak less."

The wise old owl smiled and closed his eyes again, content that his message had been heard.

The take away from "The **Wise Old Owl**" story is: "Listening more and speaking less can lead to greater wisdom and understanding. "It highlights the importance of being observant and thoughtful, suggesting that wisdom often comes from careful listening and reflection rather than from speaking. It teaches the value of patience, attentiveness, and the willingness to learn from the world around us.



# प्रधान कार्यालय, बेंगलुरु में चयनित/पहली बार पदस्थ अं.का./क्षे.का. प्रमुखों का कारोबार योजना सम्मेलन Business Plan Conference of select/first time CO/RO heads at Head Office, Bengaluru



## The trends in Indian automobile sector and growth of vehicle loans



**Ipsita Pradhan**

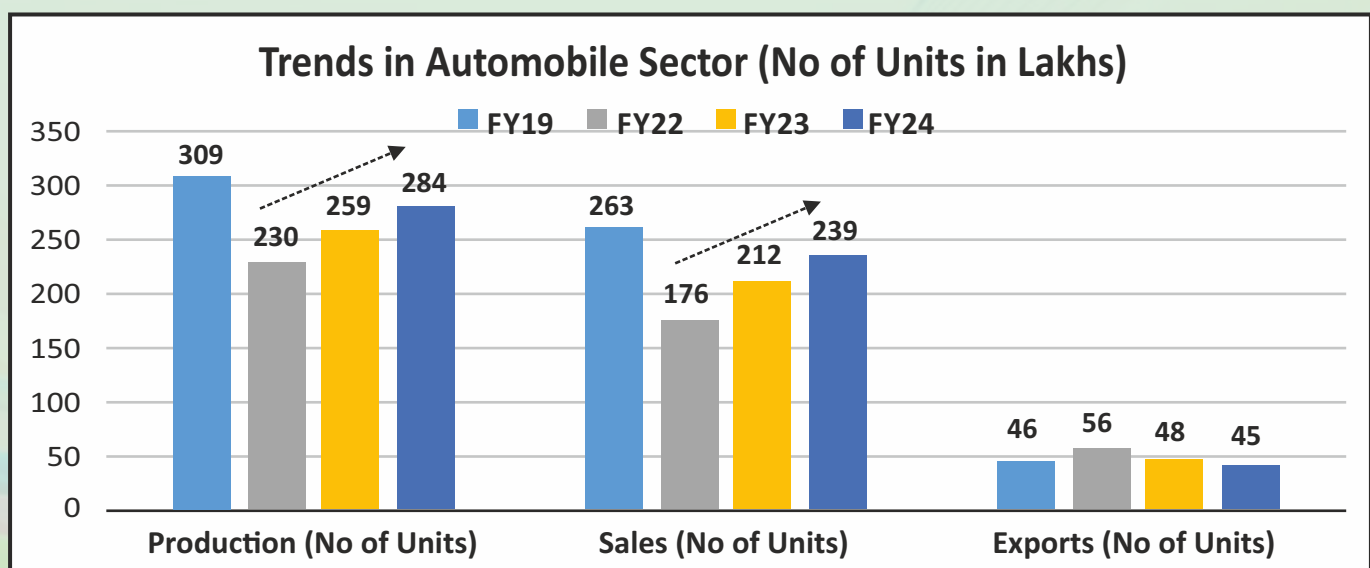
Senior Manager  
Economist, S & DA Wing  
HO, Bengaluru

### Executive Summary

- ❖ The automobile sector has recorded robust growth in the post-pandemic period of FY22 to FY24, with automobile production recording a robust growth of about 23% and automobile sales recording a growth of about 36%.
- ❖ The growth in automobile sales is mainly led by two wheeler segment, which recorded a growth of about 32% over the period FY22 to FY24- indicative of strengthening rural demand.
- ❖ As per RBI data, vehicle loans growth of SCBs increased from 9.3% y-o-y as on March 2022 to 24.8% y-o-y in March 2023, before moderating to 17.3% y-o-y as on March 2024 on base effect.
- ❖ Going forward, there is a positive outlook for the automobile sector, supported by robust growth momentum in the domestic economy, improving demand conditions and supportive Government policies. The outlook particularly remains positive for two wheeler and three wheeler segments, while some moderation may be expected in passenger vehicle segment due to high base effect.

The automobile industry is a critical component of Indian economy, contributing above 7% to Gross Domestic Product (GDP) and providing employment to millions. Over the years, the landscape of vehicle ownership has evolved substantially, driven by increasing disposable incomes, urbanization, and a growing aspirational middle class. This has led to sharp growth in automobile production and sales in the last three years.

### Robust growth momentum in the Automobile sector...



Source: Society of Indian Automobile Manufacturers (SIAM)

The automobiles production has recorded a robust growth of about 23% over the period FY22 to FY24, while automobile sale has recorded a growth of about 36%. However, global headwinds resulted in contraction of automobile exports during the same period.

The growth in automobile sales is mainly led by two wheeler segment, which recorded a growth of about 32% over the period FY22 to FY24- indicative of strengthening rural demand. Also, the two wheeler segment constitutes about 75% of total automobile sales. This is followed by three wheeler sales, which has recorded a growth of about 165% and passenger vehicle sales growth of 37% during the same period.

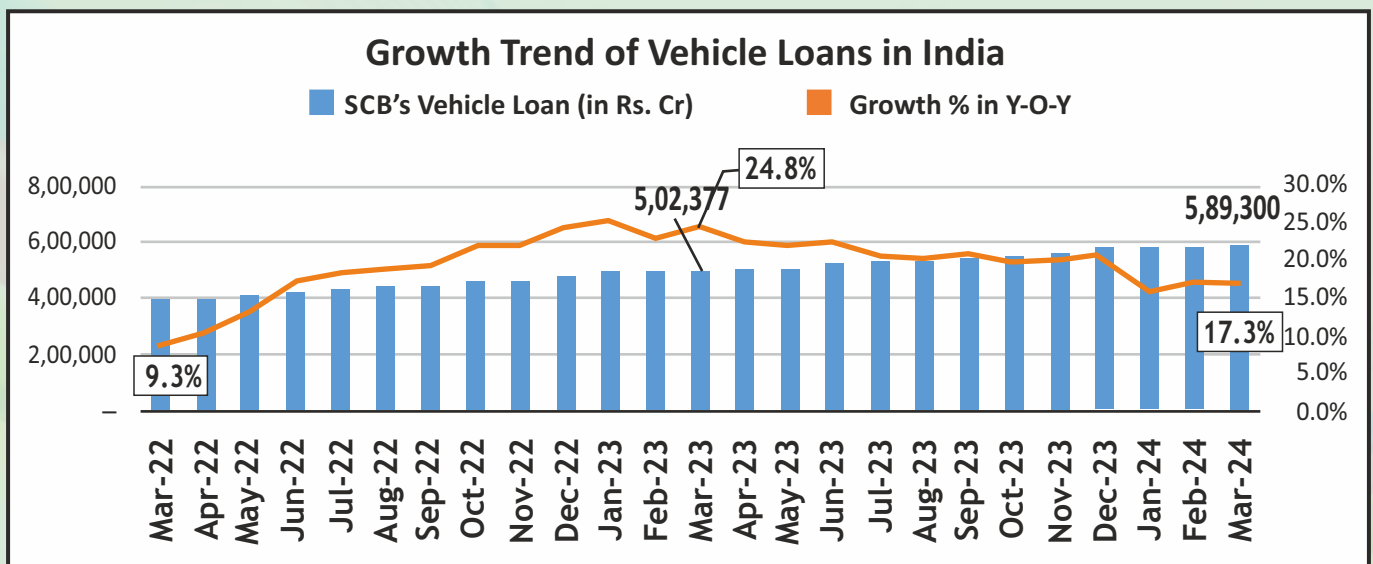
Trend in Automobile Sales (No. of units)							
Category	% Share in Total as on FY24	FY19	FY22	FY23	FY24	Y-O-Y Growth % FY24	Growth %FY24 over FY22
		(Pre-Pandemic Period)	(Post-Pandemic Period)				
Passenger Vehicle	17.7%	33,77,389	30,69,523	38,90,114	42,18,746	8.45%	37.44%
Commercial Vehicle	4.1%	10,07,311	7,16,566	9,62,468	9,67,878	0.56%	35.07%
Three-wheelers	2.9%	7,01,005	2,61,385	4,88,768	6,91,749	41.53%	164.65%
Two-wheeler	75.4%	2,11,79,847	1,35,70,008	1,58,62,087	1,79,74,365	13.32%	32.46%
Quadricycles	0.003%	627	124	725	725	0.00%	484.68%
<b>Total</b>	<b>100%</b>	2,62,66,179	1,76,17,606	2,12,04,162	2,38,53,463	12.49%	35.40%

Source: Society of Indian Automobile Manufacturers (SIAM)

Both production and sales data indicate robust trend in automobile sector in the domestic economy and it is worth noting that the production and sales level for two-wheelers, three-wheelers and commercial vehicles as on FY24 are still below the pre-pandemic levels of FY19- indicating scope of further growth in automobile sector in FY25.

**Strong growth in vehicle loan segment of SCBs ...**

This has led to robust growth in vehicle loans of Scheduled Commercial Banks (SCBs) in the last three years. As per RBI data, vehicle loans growth of SCBs increased from 9.3% y-o-y as on March 2022 to 24.8% y-o-y in March 2023, before moderating to 17.3% y-o-y as on March 2024 on base effect.



### Continued support from Government policies for Automobile sector....

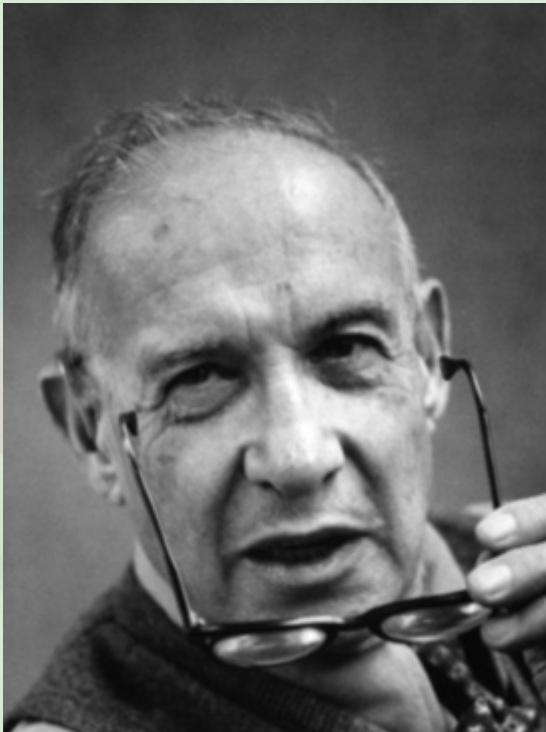
The automobile sector remains supported by Government's continued focus on Production-Linked Incentive (PLI) scheme, Make in India initiatives and futuristic vehicle technologies. Furthermore, the revamped Vehicle Scrapage Policy and the introduction of Bharat New Car Assessment Program (NCAP)- India's own vehicle safety assessment program, underscore the government's commitment to fostering innovation and sustainability in the automotive sector.

In addition to the above, in the interim Union Budget announced on 1st February 2024, the allocation to Production Linked Incentive (PLI) Scheme for Automobiles and Auto Components has been enhanced to ₹3,500 crore in FY25 from ₹484 crore in FY24. The allocation for PLI scheme for Advanced Chemistry Cell (ACC) and battery storage have also been increased from ₹12 crore to ₹250 crore in FY25. Finance minister has also announced that the government will expand the electric vehicle ecosystem by supporting charging and manufacturing infrastructure and focus will remain on greater adoption of electric buses for public transport networks through payment security mechanism.

### Going forward...

It can be said that the Indian automobile sector is on a promising trajectory, supported by robust growth momentum in the domestic economy, improving demand conditions and supportive Government policies. The outlook particularly remains positive for two wheeler and three wheeler segments, while some moderation may be expected in passenger vehicle segment due to high base effect. The synergistic relationship between vehicle demand and vehicle financing bodes well for the outlook for vehicle loan segment in the current financial year. Also, as the market continues to evolve with technological advancements, the opportunities for further credit expansion in the vehicle loan ecosystem are bound to expand in the coming years.

*Views/opinions expressed in this research publication are views of the research team and not necessarily that of Canara Bank or its subsidiaries. The publication is based on information & data from different sources. The Bank or the research team assumes no liability if any person or entity relies on views, opinion or facts and figures finding in this project.*



The ultimate resource in economic development is people. It is people, not capital or raw materials that develop an economy.

— Peter Drucker —



Shreyas contest 2023  
English Short Story  
1st prize

# Happy Diwali!



**Neha Chenani**  
Officer  
Delhi IASRI

Amidst the chaos of the jam-packed train platform, he found himself in a whirlwind, desperately clinging to his trolley bag above his head. This bag, like any other, had trusty wheels for easy maneuvering - except there was simply no space on the floor to gracefully drag it along. Why? Because it was Diwali! The festival where everyone eagerly heads home. But not Aditya. He had some other priorities to tend to.

In a dazzling display of human pinball, he zigzagged through the masses, mumbling apologies to everyone he bumped into along the way. Despite the odds, or perhaps due to sheer luck, he miraculously ventured forth and reached the compartment where his reserved seat awaited him.

“Finally!” he grumbled to himself as he slid his bag beneath the seat.

As he stretched his arms to unwind, an unintentional domino effect unfolded. Another passenger, burdened by his own bag, toppled over and landed on his back, triggering a chain reaction. It was a spectacle to behold, until the last person managed to cling onto the railings for dear life, refusing to be the next victim of this comedic calamity.

The entire compartment had their eyes glued to him like he was a mystical creature from another galaxy. Actually, being the flight-lover, he was practically a legend in the world of trains! Who else would voluntarily sign up for an assignment in a remote area just to snag a promotion they believed they rightfully deserved?

Feeling utterly annoyed by the chain of unfortunate mishaps that had plagued since morning, he gallantly assisted the distressed souls, grumbling a heartfelt

apology and neatly restoring their bags to their designated spots. Just as he put the finishing touch, the train sprung into motion, granting him the long-awaited opportunity to park himself on his seat.

On cue, his phone rang, causing him to release the deepest breath ever known to mankind before answering, “Mummy! I am on the train. The signal is weak. I will call...”

“Train? See, I told your Papa you will come home this Diwali!” His mother's excited voice rang through the line. “Mummy...I am going for the project I told you about. It's important. The promotion...”

“Promotion? Project? Aditya! It's been a whole two years since you've celebrated Diwali at home. And every time you come up with this 'project for the next promotion' excuse!” She practically screamed, desperately trying to hide her disappointment.

“Mummy, please! I already told you, I'll come around Christmas when I can take some time off. It's a US-based company. Please understand,” he huffed, clearly not thrilled with his mother's reaction.

“But you're working in India! Shouldn't they consider our festivals too?” His mother's voice now filled with dejection.

“Mummy, I promise to call you as soon as I reach. Okay!” With that, he abruptly hung up. Just as he was about to bury himself in his own world by plugging in his earphones, he noticed an elderly woman sitting next to him, observing him with a speculative eye.

The joys of train travel! Zero privacy and a front-row seat

to everyone's judgmental stares. No matter what you do, they're always watching. With an indifferent shake of his head, he focused on the latest chart-topping tune from Hollywood. The loud medley of instruments drowned out the murmurings and nearly gave him a one-way ticket to eardrum damage, prompting him to switch on his laptop.

Five more hours and he would finally escape this suffocating situation. But fate had other plans. Just as he fired up his laptop and activated his mobile hotspot, he discovered his phone had no network. Oh, how he longed to release a primal growl that could wake the ancient deities dwelling on this planet.

However, all he could muster was the laptop shutdown move, followed by a desperate music switch and a blissful eyelid closure. Sneaky as he was, he knew well there wasn't a single melody dancing in his eardrums. It was merely a strategic ploy to fend off the unwanted prying into his private life. He wasn't in the mood to snap at strangers who dared question his address, profession, or marital status. Talk about an invasion of privacy! It's like every random person on a train journey believes they've won the golden ticket to interrogate their fellow passengers. Spoiler alert: they haven't. But then again, who was he to deny people their Right to Free Speech?

Shaking his head at that thought, he closed his weary eyes and leaned back, enjoying the solitude filled with murmurs from around.

Little did he know that a few minutes later, the elderly lady seated by the window would unleash a tantalizing aroma from her food container, swiftly invading his nostrils and triggering a rebellious, hungry growl from his stomach. And then, the chaos began - the usual flurry of excitement that always comes with the unveiling of a container of delectable food on a train journey.

"Wow, aunty, this smells incredible! Is it bhindi?" a curious girl inquired.

Chuckling, the lady replied, "Absolutely! Want some?" as she offered a portion to the girl.

"Oh, no, auntie... I mean, the smell alone is amazing!" The girl politely declined, refusing to give in to the

temptation, aware of the generous portions in the container.

"I'm sure it tastes just as fantastic. I made plenty for my son; he's crazy about it," the lady shared.

Aditya, searching for his water bottle, caught sight of the lady rolling the roti filled with mouth-watering bhindi and handing it over to the girl. She hesitated for a moment before sinking her teeth into the irresistible roll. His own mouth instantly watered, and he chugged down his water before finally reaching for his sorry excuse of a sandwich in breakfast.

"Wow, this is absolutely mind-blowing!" The girl couldn't resist taking another bite and pleaded, "Aunty, please, you have to give me the recipe for this. Please!"

The lady smiled, asking, "You cook?"

With a wide grin, the girl shook her head and replied, "I'll just send the recipe to my mother. She can make it, and I'm confident it'll be ready before I even get home."

As Aditya savored his sandwich, memories of his mother's delicious cooking flooded his mind. He longed for her comforting meals now more than ever. Just two more years until he achieved his desired position, and he would bring his parents to Delhi with him.

"Are you going home for Diwali?" the lady asked the girl, who enthusiastically nodded, saying, "Of course! Who wouldn't?"

Aditya choked on his sandwich and coughed, prompting a caring pat from the lady. Concerned, she asked, "Are you alright?"

He nodded, but his attention shifted back to the conversation as the lady shared, "I'm also headed home for Diwali."

His eyes widened in astonishment, causing his head to whip to the right. Before he could gather his thoughts, the girl, equally taken aback, fired off a series of questions. "What does that mean? Do you have a job somewhere? Are you living away from home?"

A warm smile appeared on the lady's face as she replied, "I am actually going to meet my son to celebrate Diwali."

Aditya's interest was piqued, as it seemed the roles had switched in this situation. He completely forgot about his half-eaten sandwich and shifted in his seat, asking inquisitively, "But why? Isn't it usually the other way around?" Little did he realize he was channeling his inner democratic Indian, the very personality he was criticizing just an hour ago.

The lady arched an eyebrow, responding, "Why should there be a rule that parents can't visit their children?" Her words silenced any further inquiries Aditya may have had. He suddenly realized that he had crossed the very line he despised others crossing with him.

Nodding in agreement, Aditya returned to his now-forgotten sandwich, while the lady turned to the girl who questioned, "You go home every year?"

The lady shook her head, sharing, "I have two children. Every year they decide whose home we are meeting for Diwali and we go there."

"I don't mean to intrude, Aunt, but..." the girl hesitated, biting her lip before blurting out, "but you are too old to travel like this. I think your children should come to meet you."

Intrigued, Aditya eagerly awaited the response while the lady paused, pondering for a moment before finally sharing, "They used to come... at least, until my husband was alive..." Her voice trailed off with a tinge of sadness, causing Aditya to knit his brows in concern.

The girl wisely refrained from probing, but after a pause, the lady resumed, "It was my idea to follow this arrangement. Celebrating Diwali without him in our home wasn't something I could stand."

Gently wiping a tear from her eye, the lady whispered softly, "They couldn't come home on his last Diwali. It created a void within their hearts, filling them with guilt. Going over to their places is my way of telling them that it was okay!"

Aditya's hand froze in mid-air, the sandwich halfway to his mouth. Even the girl's roll-biting came to an abrupt halt. Not only them, but three other avid eavesdroppers were struck with silence as well.

With a tear-stained smile, the lady began her heartfelt tale, "They were always granted leaves for Halloween, Thanksgiving, etc. So absorbed in Angrezi culture, they barely made it home for Diwali and Holi. Little did we know, it would be my husband's last festival. Life is just too short to miss out on such precious moments with family. My children realized this too late, but I refuse to let them wallow in guilt. Life is too short for that too, isn't it?"

Wiping away her tears, she gathered her belongings and whispered, "I'm sorry for dampening the festive spirit. Wish you all a very happy Diwali," she said, rising to her feet and grabbing her bag. Her stop was up next.

However, right before she left, she gave Aditya's head a gentle pat, whispering, "Life is too short. Go home! Happy Diwali!"

Witnessing the moisture in her eyes, Aditya sensed the yearning gaze of his parents. The lady departed, leaving him with a heavy heart, his eyes shifting towards the ground. Just then, his phone buzzed with a notification from Google Photos. Memories from five years back!

A splendid smile adorned his lips as he stumbled upon a picture of himself wielding a broom, dusting away cobwebs under his mother's watchful eye. He swiftly brushed away the dampness that welled up in his own eyes.

The train stopped, putting an end to his wandering train of thoughts. Gobbling up the remaining sandwich, cramming his laptop and water bottle back into his bag, Aditya rose from his seat. Flashing a farewell wave to his fellow passengers, he cheerfully declared, "Happy Diwali!" before jumping off the train. His new destination? His home!

\*\*\*\*\*





Shreyas contest 2023  
Hindi Short Story  
1st prize

## अभयदान

विश्वनाथ प्रसाद साहू

प्रबंधक  
संबलपुर, क्षे.का.



गंगाधर शेट्टी अपने परिवार के साथ कापु नाम के कस्बे में निवास करता था। कापु दक्षिण भारतीय प्रांत कर्नाटक के उडुपि जिले के तहत आता है। वह एक सीमांत किसान है और पपीते एवं नारियल की खेती से जुड़ा है। इस क्षेत्र में धान के साथ-साथ पपीता, नारियल, सुपारी आदि की खेती प्रमुखता से होती है। इसके अतिरिक्त, यह कस्बा अपने दीप स्तंभ यानि लाइट हाउस एवं सुंदर समुद्री तटों (बीच) के लिए देश विदेश के पर्यटकों को आकर्षित करता है। पास में उडुपि में प्रसिद्ध कृष्ण मठ है, जो हर साल लाखों श्रद्धालुओं के लिए श्रद्धा का केंद्र है और देश के हर कोने से कृष्ण भक्त दर्शन के लिए आते हैं। वह अपने उत्पादों को मंगलूरु और उडुपि के बाजारों में बेचकर आजीविका अर्जित करता है। उसके परिवार में उसकी पत्नी राजेश्वरी, पुत्र गोपाल और पुत्री सुकन्या हैं। राजेश्वरी एक कुशल गृहणी हैं, पुत्री पढाई के साथ रसोई में भी हाथ बटाती है। पुत्र गोपाल एक मेधावी छात्र है जो महात्मा गांधी मेमोरियल कॉलेज, उडुपि में बी कॉम की पढाई कर रहा है और खाली समय में पिता के साथ पपीते की खेती में सहयोग करता है। एक हंसता खेलता परिवार, अपने समुदाय में प्रतिष्ठा, अच्छी आय के साथ वह एक सुखमय जीवन यापन कर रहा होता है। उसे भगवान कृष्ण पर अपार श्रद्धा है, यही कारण है कि उसने अपने पुत्र का नाम गोपाल रखा है। वह दान धर्म में भी विश्वास रखता है। रोज वह उडुपि कृष्ण के दर्शन करता और फिर अपना कारोबार आरंभ करता। जब से उसने होश संभाले यही उसकी दिनचर्या रही है। प्रतिदिन शाम को वह अपनी पत्नी को कमाए हुए पैसों में से कुछ घर खर्च और कुछ बचत के लिए देता था। वह अपने पुत्र और पुत्री को भी एक नेक इंसान बनाना चाहता था, इसलिए रोज रात को उन्हें श्रीमद् भगवत गीता के अंश सुनाया करता।

एक दिन सायं को जब वह पपीते बेच कर घर आ रहा था, तो रास्ते में एक व्यक्ति ने ईलाज के लिए उससे 200 रुपए मांगे उसने इस बात की चिंता किए बिना कि वह कैसे वापिस करेगा या नहीं पैसे दे दिए। गंगाधर उस व्यक्ति को नहीं जानता था। उसने

घर आकर अपनी पत्नी को 200 रुपए कम दिए और पूछने पर सारी बात बताई, राजेश्वरी ने इस बात के लिए उसे भला बुरा भी कहा। गंगाधर ने कोई उत्तर नहीं दिया, दरअसल उसका मानना था कि अगर हममें क्षमता है तो सभी की मदद करनी चाहिए यदि कोई मुसीबत में न हो तो भला क्या पैसे मांगेगा? दोनों की बातों को गोपाल और सुकन्या सुन रहे थे, एक अपनी मां के पक्ष में थी तो दूसरा अपने पिता के अच्छे कर्मों से सीख ले रहा था। हर हफ्ते गंगाधर किसी न किसी को पैसे दे आता। उसे इसमें आत्मसंतुष्टि मिलती थी। उसे लगता था कि भगवान उसके साथ हैं और सब देख रहे हैं।

उस वर्ष खराब मौसम के कारण उसकी फसल बर्बाद हो गई, उसकी आय का मुख्य साधन खत्म हो गया। नारियल के कारोबार में काफी प्रतिस्पर्धा थी जिसके कारण नारियल के कारोबार से पैसे कम आते थे जो केवल घर चलाने के काम आते थे और कभी-कभी उसके लिए भी जहोजहद करनी पड़ती थी। धीरे-धीरे वह बीमार पड़ता गया और नारियल का व्यापार भी बंद होने की कगार पर था। अब राजेश्वरी के चतुराई से बचाए हुए पैसों से घर चल रहा था, साथ में बच्चों की फीस के पैसे के लिए भी इन्हीं पैसों का सहारा था। ऐसे में पत्नी से दान में दिए हुए पैसों के लिए रोज ताने सुनने पड़ते। पर गंगाधर को भगवान पर पूरा भरोसा था, उसे विश्वास था कि कोई न कोई रास्ता निकल आएगा।

परिवार की खराब स्थिति को देखते हुए उसके पुत्र गोपाल ने कारोबार को आगे बढ़ाने का बीड़ा उठाया। कापु एक पर्यटक स्थल था मेधावी छात्र होने के कारण गोपाल उस स्थान से भौगोलिक एवं ऐतिहासिक रूप से भी अवगत था। उसने सुबह नारियल के ठेले के साथ-साथ छुट्टी के दिनों में गाइड के रूप में पर्यटकों को कापु एवं उडुपि की विशेषताओं से अवगत कराने का काम आरंभ किया। यह एक नए प्रकार का काम था जो पर्यटकों को खूब पसंद आ रहा था। वह पर्यटकों को उडुपि कृष्ण, अरब सागर, वहां के समुद्र मार्ग आदि के किस्से सुनाता।

देखते ही देखते उसने काफी प्रसिद्धि पाई। कापु में अब वह चर्चित नाम था। गोपाल मेहनती था इन सब के साथ उसने अपनी पढाई जारी रखी, साथ में सुकन्या को पढाने की जिम्मेदारी भी पूरी की। अपने पिता की ही भांति वह घर में दान-धर्म से जुड़ा रहा। कारोबार को फिर से खड़ा करने में कहीं न कहीं गंगाधर का मार्गदर्शन एवं उसकी हिम्मत का हाथ था। गंगाधर अब बिस्तर पर था एक भयावह बीमारी ने उसे जकड़ रखा था और उसके इलाज के लिए बहुत पैसों की जरूरत थी। गोपाल यह सब समझता था और अपने पिता को ठीक करने के लिए कड़ी मेहनत करके एक-एक पाई जोड़ रहा था। वह न तो दीवाली में पटाखे जलाता न ही कोई मेला देखने जाता। उसने इतने कम उम्र में ही जीवन का दर्शन देख लिया था।

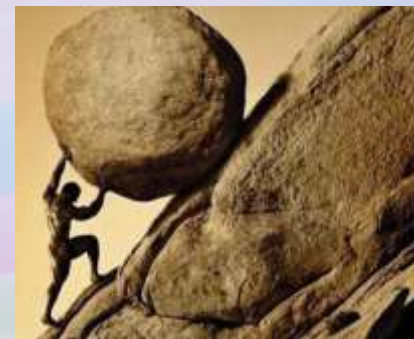
बारिश का मौसम आ गया था। रविवार के दिन पर्यटकों को कापु और उडुपि दर्शन करवाने के बाद वह अपनी दिनभर की कमाई लेकर घर आ रहा था, तब उसे भरी बारिश में बीच पर लगी बेंच पर एक महिला अकेली बैठी मिली। रात का समय था उसे थोड़ा अटपटा लग रहा था फिर भी वह बिना किसी हिचक के आगे बढ़ा। बारिश थोड़ी थम चुकी थी। पास जाने पर वह महिला उसे रोती हुई मिली, पूछने पर कुछ बताया नहीं, भला एक अनजान नवयुवक से कैसे अपना दुःख साझा करती। उस महिला ने उसे जाने के लिए कहा, पर गोपाल भी कहाँ हार मानने वाला था। अब उसे बारिश में आँसू पहचानना आने लगा था, उसका काम ही ऐसा था रोज सौ से ज्यादा लोगों के साथ उठना-बैठना था, कभी गाइड के रूप में तो कभी व्यापारी के रूप में। अंत में नवयुवक के जज्बात से वो प्रभावित हुई और अपने जीवन के बारे में बताया और कहा कि वह मुंबई से है और वहाँ उसका कपड़े का व्यवसाय है जो डूब गया, उसके घरवालों ने भी उसका साथ नहीं दिया, दोस्तों ने भी मुंह फेर लिया, बैंक का कर्ज भी चुकाना है ऐसे में वह अकेली है। उसने उडुपि कृष्ण के बारे में बहुत सुना था इसलिए वह दर्शन के लिए आयी थी और वहाँ से एकांत में समय बिताने के लिए यहाँ आई थी। गोपाल उस दर्द को समझ सकता था, और कहा बहनजी आप चिंता मत कीजिए और भगवान पर भरोसा रखिए वह सब कुछ देख रहा। कभी-कभी वो लोगों की परीक्षा लेता है यह समय आपकी परीक्षा का है। बस कोशिश कीजिए और अपने काम में मन लगाईए, ये सब मनुष्य के हाथ में है। ऐसा कहकर गोपाल ने उसने बिना किसी बात की फिक्र किए अपने दिन की कमाई जो लगभग ₹5000. थे, उसे दे दिए और कहा अभी मेरे पास इतने ही हैं, जीवन में

किसी अन्य चीज की आवश्यकता हो तो याद करना, मेरा नाम गोपाल है, मैं आपकी हर संभव मदद करने की कोशिश करूंगा। वैसे तो मैं यहाँ टूरिस्ट गाइड हूँ और नारियल का व्यापार भी करता हूँ। एक नवयुवक की इस प्रकार की बातें सुनकर वह अचंभित थी। आज कल के नवयुवक दोस्तों यारों के साथ पार्टी और मौज-मस्ती में दिन काट देते हैं। वह सोचने लगी कि इस विषम परिस्थिति में जब मेरे घर के लोगों, करीबी रिश्तेदारों, दोस्तों ने मुझसे दूरी बना ली, तो यह कच्ची उम्र का लड़का मेरी मदद के लिए फरिस्ता बन कर आया है। लड़के ने अपने दिन की कमाई मुझे दे दी, बिना-जाने बिना समझे। महिला वहाँ से उठी और यह सब सोचते-सोचते उडुपि रेलवे स्टेशन की ओर बढ़ी, उडुपि कृष्ण का सहृदय आभार व्यक्त करते हुए पूरे आत्मविश्वास से अपने कारोबार को फिर से जीवंत करने के लिए मुंबई रवाना हो गई।

एक साल बाद गोपाल के नाम एक लिफाफा आया, जिसमें 5 लाख रूपए का चेक था। यह पत्र आकांक्षा नाम की किसी अनजान महिला ने भेजा था। साथ लिखा था मुझपर भरोसा करने के लिए बहुत आभार। यह उन पांच हजार रूपए के बदले एक छोटी सी भेंट है।

गोपाल ने खुशी-खुशी सारी बात अपने घर में बताई, पहले तो राजेश्वरी इस बात से नाराज हुई फिर खुश थी, पर उसके पिता के मन में प्रसन्नता साफ झलक रही थी। गोपाल एक अच्छा बेटा, एक अच्छा भाई और एक अच्छा व्यापारी होने के साथ-साथ एक अच्छा इंसान था, मानवीय जीवन के सारे गुण उसमें समाहित हो चुके थे। अब उसके पिता निश्चिंत थे।

गोपाल ने उस महिला को अभयदान दिया था, दरअसल अभयदान के बारे में उसके पिता गंगाधर ने ही बताया था, जो महाभारत के प्रसंग में निहित था, जिसका अर्थ होता है भय से बचाना, निर्भय करना, शरण देना और रक्षा करना। श्री कृष्ण से



जब अर्जुन और दुर्योधन दोनों ही युद्ध के लिए सहयोग मांगने आये थे। दुर्योधन को कृष्ण ने अपनी चतुरंगिणी सेना दी और अर्जुन को अभयदान।

\*\*\*\*\*



Shreyas contest 2023  
English Humorous Article  
2nd prize

## Buzzed and Bitten



V Padmaja  
DM  
S & R Wing  
Bengaluru, HO



Life took an unexpected turn from the day I got the transfer orders, marking my initiation into rural service. I had to start a forced new social isolation, away from my busy metro lifestyle to a completely contrast life in a remote village. It was hard to wave goodbye to my colleagues and to the era of bustling traffics, shopping malls and the allure of multi-screen entertainments, the swift convenience of Ola or Uber transports and the luxury of being spoilt for choice with filling Swiggy or Zomato services. Though I missed my city life in the beginning, it did not take long for me to adapt to the new lifestyle. In fact, I had the most contented rural service as I won many commendable awards and recognition during my tenure there. Life would have been rosy if I did not have to deal with some annoying challenges. Let me narrate the story of my encounter with the most troublesome villains.

My posting was to a remote village with no proper amenities. Faced with limited options, I decided to rent a house that overlooked a river that, though once abundant, is now the size of a narrow stream. I shifted immediately as there were no working women's hostel or Lodges to stay..... even temporarily.

My transfer came in the month of May. The temperature at my place of posting soared to 42 degrees centigrade, resembling the intense heat of an oven, making it feel as

though we were being baked like cakes under the scorching sun. Adding fuel to the fire, there were extended bouts of power cuts to suffocate further.

The word of mouth spread in the adjacent villages that I have joined the branch. I learnt that it is quite customary for them to come and greet the new Manager. After a demanding day at the branch, where I dealt with a high volume of villagers, filled hundreds of challans for the literate and illiterate alike, processed numerous transactions, and explained our products in the midst of relentless heat, I returned home thoroughly exhausted. Following a refreshing break, I settled into meditation to regain my composure. However, my tranquillity was abruptly interrupted when the first unexpected guest of the evening arrived. At first I heard a sound which I thought was a distressed radio signal. Annoyed by my lack of attention towards the guest, I received a sharp sting on my right hand that was so intense; I screamed with pain. Startled, I opened my eyes only to realize it wasn't just one guest but many, surrounding me with the intent to feast. To my horror, there were hundreds of mosquitoes, not ordinary winged nuisances; but they belonged to the heavyweight division of the insect world, boasting a considerable size that could rival even the most audacious contenders in the mosquito dominion.



That was my first official meet with the unofficial acrobat of the insect world. It is undeniably the winged prankster of the insect realm! Armed with a tiny but noisy propeller and a needle-sharp trunk, this little daredevil is always ready for an airborne adventure. I felt a few miniature aviators buzzing around, dressed in their crafty stripes, seeking a blood donation like tiny vampires on a mission. These tiny whiners turned a peaceful night into a symphony of high-pitched opera.

Thus, from that day of my life, mosquitoes have woven themselves into my very existence. My evenings to mornings have emerged as battles. These villains have become the unwanted guests in my life. My journey began through the ups and downs, the itches and scratches, of my perpetual entanglement with these bloodthirsty buzzers.

Ah, summer—the season of power cuts, annoying sweats and the horrifying hum of mosquitoes preparing for their nightly concert. As the temperature rises, so does the mosquitoes enthusiasm for feasting on my unsuspecting limbs. It's as if they've been waiting all winter to indulge into their prey.

In my peaceful imagination, I painted a relaxing evening scene — soothing music of the flowing river, fireflies dancing amidst lush green fields, a soft breeze orchestrating nature's melody, and a melodious song gracefully setting the tone for the night. Shattering the idyllic picture I had imagined, reality was completely in contrast; instead a swarm of mosquitoes emerged from the shrinking river. In the evenings you can sight hundreds of mosquitoes soaring high, forming a cylindrical shape akin to a miniature airborne 'Tornado'. That horrifying scene had sent chills down my spine.



I rushed to get my ammunition. Eureka! I found my citronella candle that promises to repel mosquitoes within a 10-mile radius. With my ammunition in defence, Influenced by the film Magadheera, I felt like the protagonist Kala Bhairava (Ramcharan) and challenged the mosquitoes with great confidence and shouted - Don't come one by one, you blood suckers! If you dare, all of you attack me at the same time. I giggled to myself dreaming the fallout.

It was too late by the time I realised my mistake. The little bloodsuckers viewed citronella as a condiment rather than a deterrent. I was bitten mercilessly and the result was bumps & itches all over my face hands and legs.

I asked my Google assistant to help me battle with these villains. It gave me more Gyan about the 3600 species of mosquitoes and the diseases associated with their bites. The alarming details left me unnerved. It also recommended to google about more ways to encounter this menace. With some hope I asked my other virtual assistant Alexa too but there was not much help it could provide . I discovered that the mosquitoes can outsmart any defensive move we make. I purchased the most powerful liquid vaporiser (as claimed by the manufacturers) , anticipating that the mosquitoes would 'get out' but they seemed to relish as though I arranged the divine aroma therapy for their stress relief.

At sunset, the mosquitoes launch their airborne assault with the precision of a well-choreographed ballet. I dive under the covers, but these persistent performers execute twirls around the bedroom, seeking any exposed inch of skin. It's like a nightly dance-off, with me trying to outmanoeuvre them in a flurry of sheets and erratic arm flaps. May be they felt I was cheering them with my clapping to their impudent singing and got more energised to attack.

I tried the mosquito net – my knight in mesh armour. I've draped it over my bed with the hope of creating an impenetrable fortress. Do you think I was safe in my fortress? Nah! mosquitoes are surprisingly adept at finding the chink in my net-armoured defences. It appears they've taken crash courses in ninja mosquito tactics.

The aftermath of a mosquito feast is the irritating itches,

each bite a note in the grand composition of discomfort. There's an unwritten law in the mosquito kingdom: the itchier the bite, the more inconvenient its location. They perceive it as a Magnum Opus. Ever tried scratching the middle of your back with the finesse of a contortionist? Hmm! It's an art form, really.

I've invested in an arsenal of anti-itch creams, each promising relief but delivering only temporary solace. It's a vicious cycle – itch, scratch, apply cream and repeat. I sometimes suspect that mosquitoes are conspiring with the pharmaceutical industry, ensuring a steady demand for their bite-relief products.

One more angle of these sneaky little devils is they are experts in psychological warfare. It's not just about the bites; it's the incessant buzz near your ear, a taunting reminder of their presence. You could be in the midst of a Netflix binge, wrapped in a blanket burrito, but that high-pitched hum pierces through the audio of your favourite show challenging your concentration.

In my attempts to negotiate with these flying adversaries, I've tried reasoning with them – "Can we just coexist peacefully? Let's respect each other's space" I pleaded. Absolutely Not; mosquitoes are terrible negotiators; they only understand the language of blood. Armed with the determination of a mosquito avenger, I've delved into the world of DIY (do it yourself) bug repellents. Pinterest boards promised inventions with essential oils that would send mosquitoes fleeing. I welcomed my inner alchemist, blending oils with the hope of creating an elixir that would make me invisible to the mosquito radar.



As I dabbed my homemade potion on my skin, I could almost hear the mosquitoes chuckling in the background. Hmm I can hear you chuckling too as you guessed it right this time, they seemed to find my brews more alluring than repelling.

Well you all know, Desperation breeds innovation, and in my quest to reclaim my personal space, I've resorted to the great mosquito hunt. Armed with an electric swatter resembling a tennis racket, I've launched a mission to destroy mosquitoes out of existence.

The satisfaction of a successful swat is unparalleled. It's a brief moment of triumph in the on-going battle, a victorious cry against the tiny winged overlords. However, for every mosquito I execute, it seems like three more are rising to take its place. It's the Hydra of the insect world, and I am not P V Sindhu, but a weary warrior with my exhausted hands giving up the fight.

I wondered about the Mosquito Conspiracy Theories. In moments of mosquito-induced frenzy, I've invented elaborate conspiracy theories about their motives. Are they conducting scientific experiments to develop a new breed of super mosquitoes? Is there any secret mosquito society plotting world domination, one itchy bite at a time? Could be! I do not understand their thirst for blood. I've even considered the possibility of mosquitoes being extra-terrestrial beings sent to Earth for a research mission. Perhaps my blood is the key to unlocking the secrets of human existence. Whatever be the mysterious reason, they are just enjoying by annoying the daylights out of me. I was going almost crazy thinking of these creatures all the time.

For me, it was no less than the Battle of Panipat which I kept fighting each night. My fight took an interesting turn. The final day of the war has arrived. What do you think? I surrendered myself to these blood-sucking vampires? Never! I am not a person to give up that easily. Having fought three and a half years with these villains, I victoriously laughed and declared, "You losers! You have no power over me now, it is my day". Then I whispered gently scratching my itches "I am transferred to a new place - Find my successor"

\*\*\*\*\*



Shreyas contest 2023  
Hindi Humorous Article  
2nd prize

## गाय और गुलाब



मो. इमरान अंसारी

अधिकारी

क्षेत्रीय कार्यालय, अलीगढ़

‘हँसी’ मनुष्य को ईश्वर की एकमात्र वो देन है, जो उसने किसी अन्य जीव को प्रदान नहीं की है। कई बार आपके आस-पास कुछ ऐसे अजीबोगरीब किस्से घट जाते हैं कि उनके घटते वक्त उन पर जो एक हंसी का दौर शुरू होता है तो थामे नहीं थमता। गुजरते वक्त के साथ भी जब कभी उस किस्से की याद आ जाए तो हंसी अनायास ही फूट पड़ती है। जिंदगी अनोखी और रंगबिरंगी है और यहाँ हास्य बिखरा हुआ है। ऐसा ही एक किस्सा आपके सम्मुख प्रस्तुत है और इसका शीर्षक मैंने रखा है ‘गाय और गुलाब’। काफी अटपटा शीर्षक लग सकता है आपको कि भला ‘गाय’ और ‘गुलाब’ का क्या संबंध है। तो पाठकों इस किस्से में ‘गाय’ और ‘गुलाब’ का बड़ा गहन संबंध है दरअसल यही इस किस्से के मूल तत्व हैं, यहीं नायक भी हैं और खलनायक भी हैं। तो आइए शुरू करते हैं :-

यह बात शुरू होती है 21वीं सदी के पहले दशक के शुरुआती वर्षों में से एक वर्ष में जब हमारे एक मित्र हुआ करते थे, जिनका नाम था विकास। विकास हमारे हमउम्र ही थे और हम दोनों ही उस वक्त किशोरावस्था में थे। हाँ, वही किशोरावस्था जिसमें दुनिया की हर चीज़ रंगीन दिखाई देती है और आत्मविश्वास कूट-कूट के भरा होता है और साथ ही बचपन और जवानी के समय के बीच की बेवकूफ़ियाँ भी। आत्मविश्वास का अंदाज़ा आप इस बात से भी लगा सकते हैं कि किशोरों को लगता है कि अगर उन्होंने अपनी पूरी ताकत से दीवार पर घूँसा जमा दिया तो दीवार ढह सकती है और किशोरियों को लगता है कि यदि वे अपनी पूरी सजधज के साथ आईने के सामने जाएंगी तो आईना सौन्दर्य के अतिरेक से टूट जाएगा।

तो हमारी अवस्था उस समय 17-18 वर्ष की रही होगी। मनोविज्ञान के नियमानुसार यही वो समय होता है जब इंसान

के भीतर विपरीत के प्रति आकर्षण उत्पन्न होना शुरू हो जाता है। सो हम और हमारा मित्र भी अपवाद नहीं थे और इसी नियम के अनुकूल बढ़ रहे थे। मित्र विकास को अपने घर के ठीक सामने वाले घर की एक किशोरी के प्रति जबरदस्त आकर्षण का अनुभव होना शुरू हो गया। पहले तो वह उन्हें केवल ठीक-ठाक सी लगी, फिर कुछ सही फिर अच्छी और अंत में बढ़िया लगने लगी। आकर्षण का नियम अपने चरम पर लागू हो गया। परंतु वह किशोरी, जिसे हम सुविधा के लिए मोहिनी कह सकते हैं। न तो यह नाम ही असली है और न ही इसका अर्थ। तो सुविधानुसार चुने गए एक नाम मोहिनी के साथ हम किस्से को आगे बढ़ाते हैं। तो मोहिनी विकास के भीतर उपजे हुए इस आकर्षण के नियम से पूर्णतः अनभिज्ञ थी और अपने काम से काम रखने वाली किशोरी थी।

मोहिनी का घर विकास के घर के ठीक सामने वाले घर के दाहिने से दूसरा घर था। वह सुबह महाविद्यालय जाने के लिए घर से निकलती और दोपहर के करीब वापिस घर पहुँच जाती। इसके अलावा कभी-कभार ही उसका घर से निकालना होता था। उसकी माता एक अन्य महाविद्यालय में शिक्षिका थीं और पिता बेरोजगार थे, जो पूरे दिन घर पर या आसपास ही पाए जाते थे। अब प्रश्न यह था कि आकर्षण के नियम से अभिभूत विकास इसकी जानकारी मोहिनी तक पहुँचाए तो कैसे? वह तो नितांत अजनबी की तरह अभी तक इस बात से अनजान थी कि उसके घर के आस-पास रहने वाला एक मामूली शक्ल-सूरत वाला किशोर उसके प्रति आकर्षित है।

यहाँ यह याद दिलाना आवश्यक है कि यह समय 21वीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों का है और तब तक अभी तकनीक और समाज इतना उन्नत नहीं हुआ था। तब तक हर हाथ और जेब में मोबाइल फोन नहीं हुआ करता था। ‘मन की बात’ कहने का

कोई सरल उपाय उपलब्ध नहीं था। उस वक्त दूसरों तक अपनी बात पहुँचाने के सीमित साधन थे, जैसे चिट्ठी पत्री या किसी तीसरे को अपना दूत बनाकर उसके माध्यम से।

यहाँ यह बात भी गौरतलब है कि लेखक को अभी तक 'मोहिनी' के दर्शन पाने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था। विकास के माध्यम से केवल चर्चे ही सुने थे। एक दिन विकास ने बोला कि आपको यदि दर्शन लाभ लेना है तो आज दोपहर महाविद्यालय की छुट्टी के समय उपलब्ध हो जाना। सो हम समय से उपलब्ध हुए और दर्शन लाभ हेतु पहुँचे। महाविद्यालय उस समय का विधिवत कन्या महाविद्यालय था। छुट्टी होने पर ऐसा लगा जैसे बाढ़ आ गई हो, एक साथ 4-4 और 5-8 के समूह में किशोरियाँ इकट्ठी बाहर आने लगीं। वहाँ इस विशाल जनसमूह में किसी एक को पहचान पाना अत्यंत मुश्किल काम था। अतः दर्शनों कि अभिलाषा अधूरी रह गई।

कुछ दिनों बाद एक दिन शाम को विकास हमारे पास आए और कहा कि समय बीतता जा रहा है और कोई उपाय नहीं सूझ रहा है कि मन की बात कैसे की जाए? इस समस्या पर काफी देर तक चिंतन-मनन किया गया। परंतु अनुभवहीनता और सामाजिक भय के कारण दूर-दूर तक कोई उपाय सूझता ही नहीं था। आखिर में खुद विकास को एक उपाय सूझा और उसने उत्तेजित होते हुए बताया एक उपाय है जिसमें कुछ कहना भी नहीं पड़ेगा और मन की बात भी दूसरे के मन तक पहुँच जाएगी। मैंने विस्मय से पूछा ऐसा क्या है? उसने विस्तारपूर्वक समझाया कि ऐसा कैसे होगा। दरअसल उस समय भारत में फिल्म गीतों के अलावा पॉप गीतों का भी बोलबाला था, जिनमें 4-5 मिनट के गीत के साथ एक लघु फिल्म या वीडियो कह सकते हैं, होता था। उस समय के एक मशहूर गायक के एक गीत के वीडियो में दिखाया गया था 'नायिका' के जन्मदिन के अवसर पर नायक, जो अपने मन की बात कहने में असमर्थ है, वह एक गुलाब का फूल काफी देर हाथ में लिए रहता है ताकि नायिका उसे अच्छे से पहचान ले और फिर उसे एक सुविधाजनक स्थान पर रख देता है और नायिका सबकी नज़र से बचकर उस गुलाब को उठा लेती है, जिसे स्वीकृति का लक्षण मान लिया जाता है। मैंने इस पर आपत्ति दर्ज करते हुए कहा कि परन्तु ऐसा कोई अवसर तो है

ही नहीं और अगर होगा भी तुमको आमंत्रित कौन करेगा और इसके क्रियान्वयन में भी मुझे कठिनाई लग रही है। उसने कहा अवसर तो है महाविद्यालय से लौटने पर रास्ते में एक उपयुक्त स्थान है। कल दोपहर तुम मौजूद रहना मुझे नैतिक बल मिलेगा इससे।

लेखक उस घटना के प्रत्यक्षदर्शी के रूप में ज्यों का त्यों बता रहा है। नियमित समय पर उपयुक्त स्थान पर हम मौजूद थे। उपयुक्त स्थान सड़क का एक तिराहा सा हिस्सा था जिसके बाईं ओर एक गली मुड़ती थी और गली और सड़क के मुहाने पर एक सरकारी नल (हैंडपंप) लगा हुआ था, विकास के मुताबिक वह ही उपयुक्त स्थान था। योजना के अनुसार विकास गली के मुहाने पर नल के नजदीक हाथ में एक ताज़ा गुलाब लिए खड़ा था और लेखक साइकिल सहित सड़क के दूसरे किनारे पर बात के बनने-बिगड़ने का प्रत्यक्षदर्शी बनने के लिए मौजूद था। इतने में मोहिनी अपनी कुछ सहेलियों के साथ सड़क पर प्रकट हुईं। यह समय दिल कि धड़कनों को बढ़ाने वाला था। उत्तेजना अपने चरम पर थी। लेखक ने विकास को योजना पर पुनर्विचार करने के लिए कहा परंतु वह दृढ़ प्रतिज्ञ था। आखिर उसने अपनी ओर से गुलाब को मोहिनी को पूरी तरह प्रदर्शित करके सरकारी नल पर रख दिया। संयोग से दोपहर के समय सड़क सुनसान थी। लेखक ये नहीं देख पाया कि मोहिनी ने गुलाब को देखा या नहीं। अब गुलाब नल पर रखा है, उसके सिरे पर विकास प्रतीक्षारत है और सड़क के दूसरे किनारे पर लेखक मौजूद है। मोहिनी और उसका दल 10-15 कदम की दूरी पर है, उत्तेजना अपने चरम पर है। अचानक किसी दैवीय चमत्कार की तरह गली से एक गाय प्रकट होती है, उसकी नज़र नल पर रखे ताज़े गुलाब पर पड़ती है और वह तेज़ी से गुलाब को उठाकर मुँह में भरकर जुगाली करती हुई अपनी राह चल पड़ती है। लेखक और विकास एक-दूसरे का मुँह देखते रह जाते हैं। मंज़र से उबरने पर लेखक को हँसी का ऐसा दौरा पड़ता है कि वह साइकिल समेत सड़क पर गिर जाता है और देर तक पेट पकड़ कर हँसता रहता है और विकास का क्या हाल हुआ होगा, ये तो आप समझ ही सकते हैं।

\*\*\*\*\*



Shreyas contest 2023  
English Essay  
2nd prize

## Impact of Environment, Social and Governance in the Banking Sector

**Narinder Pal**  
Special Assistant  
Rampura Phul



The banking sector plays a pivotal role in the global economy, serving as the financial backbone of nations and businesses. However, the conventional approach to banking, which is primarily focused on profit maximization, often comes at the expense of environmental sustainability, social welfare, and ethical governance. In recent years, a paradigm shift has occurred, driven by the increasing awareness of the interplay between business operations and broader societal and environmental impacts. This shift has given rise to the incorporation of Environment, Social, and Governance (ESG) principles in the banking sector. ESG principles encompass a wide range of factors, from environmental sustainability and social responsibility to ethical governance. In this essay, we will delve into the profound impact of ESG in the banking sector, exploring its implications, benefits, and challenges.

The **"E" in ESG** represents the Environmental aspect, which focuses on a bank's commitment to ecological sustainability and its efforts to mitigate environmental harm. Banks, like other industries, have recognized the environmental challenges facing the planet, such as climate change, resource depletion, and biodiversity loss. Consequently, Banks have taken several steps to minimize their environmental footprint while also

contributing to global environmental goals.

One of the most notable impacts of ESG in the banking sector is the significant increase in funding for green initiatives. Banks are increasingly providing financial support for projects related to renewable energy, energy efficiency, clean technologies, and sustainable agriculture. By doing so, they not only align with global climate goals but also position themselves as responsible and forward-thinking institutions. Furthermore, ESG principles have led to a shift in the internal practices of Banks. To reduce their carbon footprint, Banks are adopting energy-efficient technologies, reducing paper usage, and implementing sustainable supply chain management practices. By embracing these practices, Banks not only reduce their environmental impact but also set an example for their clients and partners. In addition to these actions, Banks are incorporating environmental risk assessments into their lending decisions. They assess the potential impact of climate change on their borrowers, ensuring that they do not inadvertently contribute to activities that harm the environment. This proactive approach to environmental risk management demonstrates the banking sector's commitment to addressing global environmental challenges.

The **"S" in ESG** stands for the social aspect, which underscores a bank's responsibility to society at large. This dimension has had a profound impact on the banking sector by influencing not only their lending practices but also their internal corporate culture. One of the most significant impacts of ESG in the banking sector is the heightened awareness of the social consequences of their actions. Banks are now more concerned with ensuring that their loans do not contribute to social issues, such as inequality, discrimination, or human



rights abuses. For example, Banks are increasingly cautious when providing financial support to industries that may exploit labour or engage in unethical practices. Banks have embraced the concept of financial inclusion as a part of their social responsibility. They developed products and services specifically designed to reach underserved and marginalized communities. By doing so, Banks play a pivotal role in fostering economic empowerment and bridging the gap between different social strata. In addition to these external initiatives, the banking sector has made strides in promoting diversity and inclusion within their organizations. Recognizing that a diverse and inclusive workforce can better understand and cater to the needs of a wide range of clients, Banks are actively working to create an inclusive corporate culture. This aligns with ESG principles and positions Banks as responsible and ethical institutions committed to social progress.

The "G" in ESG represents governance, which entails the principles and practices that guide the internal operations and decision-making processes within a bank. Ethical governance is fundamental to maintaining trust and integrity, and it has far-reaching implications for the banking sector. One of the key impacts of governance within the banking sector is improved transparency and accountability. Banks are now under increased scrutiny to ensure that their governance structures are robust and corruption-free. This involves transparent reporting, stringent ethical guidelines, and accountability at all levels of the organisation. Transparency is not only a moral obligation but also a requirement in many regulatory frameworks. Regulatory bodies and stakeholders expect Banks to disclose information related to their governance structures, executive compensation, and risk management practices. This



transparency builds trust and credibility with clients, investors, and the broader public. Moreover, ESG has led to a shift in risk management practices within the banking sector. Environmental, Social, and Governance factors are now considered critical aspects of risk assessment and management. Banks must evaluate the potential risks associated with ESG factors, such as climate change, social unrest, or governance issues within their clients' operations. Failure to do so can lead to significant financial and reputational risks, as well as potential legal and regulatory consequences.

### CHALLENGES IN IMPLEMENTING ESG IN BANKING SECTOR:

While the impact of ESG in the banking sector is undeniably positive, it is not without its challenges. Implementing ESG principles can be complex, and Banks must navigate several hurdles:

- 1. Data and Reporting:** Gathering and reporting accurate ESG data can be a challenge, as it often involves numerous variables and metrics. Standardization and transparency in reporting are critical to ensuring that investors and stakeholders have access to meaningful information.
- 2. Risk Assessment:** Evaluating ESG-related risks can be complex, as these risks are often long-term and multifaceted. Banks must develop sophisticated risk assessment tools and models to adequately account for these factors.
- 3. Balancing Profit and Purpose:** While the social and environmental goals of ESG are important, Banks must also balance them with their responsibility to generate profits for shareholders. Striking this balance can be challenging, and Banks need to find a sustainable model that aligns financial returns with positive ESG impacts.





- 4. Regulatory Frameworks:** Different regions and countries have varying regulatory frameworks for ESG reporting and compliance. Banks operating across borders may face additional complexities in meeting the diverse requirements of multiple jurisdictions.
- 5. Public Perception:** Banks must manage public perception and maintain their reputation. Failure to adhere to ESG principles can result in reputational damage, which may negatively affect their client base and investor trust.

### BENEFITS OF ESG IN THE BANKING SECTOR:

The incorporation of ESG principles in the banking sector yields numerous benefits, both for the institutions themselves and for society as a whole:

- 1. Risk Mitigation:** ESG practices help Banks identify and mitigate long-term risks related to climate change, social issues, and governance challenges. By managing these risks, Banks can protect their financial stability and reputation.
- 2. Market Competitiveness:** Embracing ESG principles enhances the market competitiveness of Banks. Investors and clients are increasingly seeking ethical and responsible financial partners, and Banks that meet these expectations are more likely to attract and retain clients and capital.
- 3. Sustainability:** Banks that support green initiatives contribute to the transition to a sustainable economy. By funding renewable energy projects and environmentally responsible businesses, Banks

facilitate the global shift towards a low-carbon future.

- 4. Social Impact:** Banks that actively promote financial inclusion and invest in underserved communities contribute to economic development and social progress. This, in turn, can lead to increased economic stability and prosperity.
- 5. Ethical Leadership:** Banks that adhere to ESG principles set an example for other industries and organizations. They can influence the broader business landscape by demonstrating that profitability and ethics are not mutually exclusive.

Overall the impact of ESG principles in the banking sector is profound and far-reaching. Adopting ESG principles signifies a shift towards responsible and sustainable banking practices. It has transformed the way Banks operate, make lending decisions, and interact with society and the environment. ESG principles are not just a moral obligation but also a strategic imperative, positioning Banks for long-term success in an ever-changing financial landscape.

As Banks navigate the complexities of ESG implementation, they must address challenges related to data, risk assessment, regulatory compliance, and balancing profit and purpose. However, the benefits of embracing ESG far outweigh these challenges. Banks that integrate ESG principles into their operations not only contribute to a more sustainable and equitable world but also position themselves as leaders in an evolving industry. ESG has become a guiding compass for the banking sector, and its influence will continue to grow in the years to come. As a result, we can expect a banking sector that is not only financially robust but also socially responsible and environmentally sustainable.

In conclusion, the banking sectors embracing ESG principles is an essential step toward aligning the financial industry with the broader needs and values of society. It demonstrates a commitment to a sustainable and inclusive future while ensuring responsible governance. As Banks continue to refine their ESG practices, they will play a pivotal role in shaping a more ethical, equitable, and environmentally conscious world.

\*\*\*\*\*



Shreyas contest 2023  
Hindi Essay - 2nd prize

## बैंकिंग-क्षेत्र में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन का प्रभाव

प्रकाश माली

वरिष्ठ प्रबंधक  
क्षेत्रीय कार्यालय, मथुरा



### भूमिका :

भारतीय अर्थव्यवस्था आज 4 ट्रिलियन डॉलर की होने के कगार पर खड़ी है। इसमें बैंकिंग-क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है। अभी तक बैंकिंग-क्षेत्र परम्परागत तरीके से सभी प्रकार के उद्योगों और इकाईयों को ऋण उपलब्ध कराता रहा है। लेकिन आधुनिक समय में जलवायु परिवर्तन और उसके फलस्वरूप पर्यावरण पर पड़ने वाले गंभीर खतरों को देखते हुए बैंकिंग-क्षेत्र ने भी अपनी ऋण एवं निवेश-संबंधी संकल्पनाओं में परिवर्तन किया है। इसके परिणामस्वरूप ग्रीन-लैंडिंग (हरित-वित्त) की अवधारणा का आविर्भाव हुआ है। **संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के अनुरूप आज बैंकिंग-क्षेत्र आधुनिक सोच के साथ ऐसे उद्योगों और इकाईयों को ऋण देना पसंद कर रहे हैं**, जिनकी गतिविधियों से पर्यावरण, समाज और गवर्नेंस (अभिशासन) पर नकारात्मक असर न हो। अर्थात् बैंकिंग-क्षेत्र आज पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन संबंधी विभिन्न मुद्दों से बेहद प्रभावित है और इनके समाधान के लिए विभिन्न कदम उठा रहा है, जिनका समाज, पर्यावरण और अभिशासन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

### बैंकिंग-क्षेत्र में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन (ईएसजी) संबंधी दर्शन :

आज बैंकिंग-क्षेत्र पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन संबंधी विषयों को लेकर बेहद सजग है। संयुक्त राष्ट्र संघ का मानना है कि सभी क्षेत्रों में यदि पर्यावरण, सामाजिक एवं अभिशासन संबंधी वैश्विक मुद्दों को दरकिनार कर विकास की ओर बढ़ गया, तो वर्ष 2030 तक संयुक्त राष्ट्र विकास लक्ष्यों (SDGs) को हासिल कर पाना नामुमकिन होगा। साथ ही हम इस धरती को भावी पीढ़ी के लिए रहने योग्य स्थान बनाने में भी असफल हो जायेंगे। यदि हमें इन लक्ष्यों

की ओर बढ़ना है, तो समावेशी विकास करना होगा। यह समावेशी विकास, पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन संबंधी मुद्दों को नज़रअंदाज करके, कर पाना संभव नहीं है। अतः बैंकिंग-क्षेत्र ने भी इस क्षेत्र में काम करना आरम्भ कर दिया है।

आज बैंकिंग-क्षेत्र का दर्शन है कि- 'सभी हितधारकों के मूल्य को बढ़ाने के प्रति प्रतिबद्धता के साथ-साथ - 'समावेशी भागीदारी और समावेशी विकास' के आदर्श वाक्य के साथ, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक सशक्तिकरण और गवर्नेंस (अभिशासन) में वैश्विक मानकों का पालन करना।

### बैंकिंग क्षेत्र में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन (ईएसजी) के लक्ष्य :

बैंकिंग क्षेत्र व्यावसायिक रणनीतियाँ और व्यावसायिक नीतियाँ बनाते समय विशेष रूप से जलवायु-जोखिम, बड़े पैमाने पर समाज पर उसके प्रभाव और कॉर्पोरेट प्रशासन के उच्च मानकों को बनाए रखने के लक्ष्यों के साथ कार्य कर रहा है। वह सतत परम्पराओं के सम्मिश्रण के साथ समाज को अत्याधुनिक वित्तीय-सेवाएँ प्रदान करना चाहता है। जिसके लिए बैंकिंग-क्षेत्र ने निम्नलिखित लक्ष्य निर्धारित किए हैं :-

1. **उत्पादों की डिलीवरी और उत्तम ग्राहक-सेवा:** बैंकिंग-क्षेत्र आज के प्रतिस्पर्धी वातावरण में उत्कृष्ट बैंकिंग-उत्पादों की डिलीवरी करना चाहता है, ताकि ग्राहकों की उत्कृष्ट-उत्पादों की माँगों को पूरा किया जा सके। इसके लिए बैंकिंग-क्षेत्र ने अपनी उत्पाद-निर्माण, ग्राहक-सेवाओं एवं शिकायत निवारण प्रणाली में व्यापक परिवर्तन किया है। भारतीय रिज़र्व बैंक भी इस दिशा में

कार्य कर रहा है। भारतीय रिज़र्व बैंक की 'एकीकृत बैंकिंग लोकपाल योजना' इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

**2. सभी हितधारकों के लिए मूल्यवर्द्धन करना:** सभी हितधारकों द्वारा लगाई गई पूँजी का मूल्यवर्द्धन करना बैंकिंग-क्षेत्र का परम लक्ष्य है। जिसके लिए बैंकिंग-क्षेत्र लगातार अपने निवेश-पोर्टफोलियो में परिवर्तन करता रहता है। निवेश करते समय बैंक उसके पर्यावरणीय, सामाजिक और अभिशासन संबंधी प्रभावों को भी ध्यान में रखता है।

**3. परिचालनों के स्थायी तरीकों को अपनाना:** बैंकिंग क्षेत्र आज अपने परिचालनों के प्रति बेहद सजग है। वह ऐसी परिचालन-प्रणालियों को हतोत्साहित करता है, जिनसे पर्यावरण, सामाजिक एवं अभिशासन संरचना पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता हो। बैंकिंग-क्षेत्र आज अपने समस्त परिचालनों का डिजिटलीकरण कर रहा है। यह बैंकिंग-क्षेत्र ही है, जो डिजिटलीकरण को सर्वाधिक तेज गति से अपना रहा है। डिजिटलीकरण के कारण बैंकिंग के विभिन्न परिचालन-क्षेत्रों में पर्यावरण अनुकूलन हुआ है। डिजिटलीकरण से पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिलता है। इससे समय की बचत होती है और संसाधनों का इष्टतम उपयोग सुनिश्चित होता है।

**4. समकक्षों, नीति-निर्माताओं और विशेषज्ञों के साथ साझेदारी करना:** बैंकिंग-क्षेत्र पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन के विभिन्न पहलुओं पर समकक्षों के साथ विचार-विमर्श करते हुए तत्संबंधी नीतियों का निर्माण कर रहा है। वह इन क्षेत्रों के विशेषज्ञों की मदद लेते हुए अपनी बैंकिंग-रणनीतियाँ एवं कार्य-योजना बना रहा है।

**बैंकिंग-क्षेत्र में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन (ईएसजी) – अधोसंरचना :**

उपरोक्त सभी लक्ष्यों को हासिल करने के लिए बैंकिंग क्षेत्र ने अपने यहाँ एक सक्षम, प्रभावी और जवाबदेह आधारभूत ढाँचे का निर्माण किया है। आज सभी बैंकों ने पर्यावरण, सामाजिक एवं अभिशासन संबंधी विषयों पर निर्णय लेने के लिए ठोस कार्रवाई करते हुए स्पष्ट रणनीतियाँ बनाई है एवं

एक कारगर तथा जवाबदेह आधारभूत ढाँचे का सृजन किया है, जिसके निम्नलिखित स्तर हैं:-

1. निदेशक मंडल
2. जोखिम प्रबंधन समिति (आरएमसीबी) / बोर्ड की सतत विकास और सी.एस.आर समिति
3. ईएसजी समिति
4. ईएसजी कार्यबल-समूह
5. हितधारक विभागों में ईएसजी अनुभाग और ईएसजी टीम

**ईएसजी समिति और ईएसजी कार्यबल का गठन :** ईएसजी समिति, बोर्ड की उप समिति के बाद बैंक में ईएसजी और जलवायु-जोखिमों के कार्यान्वयन के लिए जिम्मेदार सर्वोच्च प्राधिकारी है। यह समिति हितधारक विभागों के मुख्य महाप्रबंधक/महाप्रबंधकों से मिलकर बनेगी। जोखिम प्रबंधन विभाग के मुख्य महाप्रबंधक/महाप्रबंधक बैठक की अध्यक्षता करेंगे और जोखिम प्रबंधन विभाग के उप महाप्रबंधक इसके संयोजक होंगे।

**ईएसजी कार्यबल :** ईएसजी समिति का एक सहायता बल है, जो नीतियाँ बनाने, प्रविधियों के विकास, क्षमता-निर्माण योजनाओं/जागरूकता आदि पर काम करेगा। यह बल/समूह में हितधारक विभागों के उप महाप्रबंधक/सहायक महाप्रबंधकों से मिलकर बनेगा। जोखिम प्रबंधन विभाग के उप महाप्रबंधक बैठक की अध्यक्षता करेंगे और जोखिम प्रबंधन विभाग के सहायक महाप्रबंधक इसके संयोजक होंगे।

उपरोक्त आधारभूत-ढाँचे के तहत कार्य करते हुए बैंकिंग-क्षेत्र ने पर्यावरण, सामाजिक एवं अभिशासन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं, जिनका इन क्षेत्रों पर व्यापक प्रभाव पड़ा है।

**बैंकिंग-क्षेत्र में पर्यावरण, सामाजिक एवं अभिशासन के प्रभाव :**

व्यापक तौर पर देखा जाए तो आज बैंकिंग-क्षेत्र के लक्ष्य

	परिचालन संबंधी प्रभाव	हितधारक-सहभागिता संबंधी प्रभाव	व्यावसायिक- जोखिमों का प्रबंधन और अवसरों संबंधी प्रभाव
पर्यावरणीय प्रभाव	<ul style="list-style-type: none"> <li>बैंक के भौतिक परिचालनों के पर्यावरणीय और जलवायु प्रभावों का प्रबंधन</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने और कार्बन पदचिह्न (फुटप्रिंट) में कमी लाने के लिए संगठनों के साथ भागीदारी करना।</li> <li>ग्राहकों, विक्रेताओं और सहयोगियों को, उनके साथ मिलकर काम करते हुए, बैंकों पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से होने वाले जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के प्रति संवेदनशील बनाना।</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>बैंक के ऋण और निवेश पोर्टफोलियो में जलवायु-संबंधी जोखिमों सहित, पर्यावरणीय जोखिमों का प्रबंधन।</li> <li>ऐसे वित्तीय समाधान एवं उत्पाद और सेवाओं का विकास करना, जो जलवायु परिवर्तन व कार्बन फुटप्रिंट्स को कम करने वाले कदम उठाने और अन्य सकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव उत्पन्न करने हेतु उत्प्रेरित करें।</li> </ul>
सामाजिक प्रभाव	<ul style="list-style-type: none"> <li>कर्मचारियों को एक सुरक्षित कार्यस्थल प्रदान करने के साथ-साथ विविधता, समानता और समावेशन को बढ़ावा देना तथा स्वास्थ्य और सुरक्षा से संबंधित घटनाओं की आवृत्ति को कम करना।</li> <li>मानवीय-पूंजी में निवेश करना और एक ऐसे कार्यशील वातावरण का सृजन करना, जो कर्मचारियों को क्षमताओं को विकसित करने में सहायता करता हो, जिसमें दिव्यांग भी शामिल हैं और एक स्वस्थ कार्य-जीवन संतुलन को सक्रिय रूप से बढ़ावा देते हुए, उनके समग्र व्यावसायिक विकास में योगदान देता हो।</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>नैतिकता और पारदर्शिता का पालन करते हुए, सभी हितधारकों के लिए समान अवसर उत्पन्न करना।</li> <li>उपभोक्ता-वित्तीय जागरूकता को मजबूत करना।</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>नवोन्मेषी वित्तीय समाधान विकसित करना, जो जीवन की गुणवत्ता में सुधार करते हों और सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा देते हों।</li> </ul>

अभिशासन संबंधी प्रभाव	<ul style="list-style-type: none"> <li>सततता-रणनीति अपनाते हुए एक मजबूत जोखिम और नियंत्रण का वातावरण तैयार करना और पूरे समूह में इसे कारोबार-रणनीति के साथ एकीकृत करना।</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>हमारे हितधारकों के लिए सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता और नैतिक-व्यवहार की संस्कृति को बढ़ावा देना, पर्यावरण संरक्षण और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के अनुकूलन और शमन के लिए क्षमता निर्माण में सहायता करना।</li> <li>गोपनीयता और साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करना।</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>गवर्नेंस (अभिशासन) जोखिमों की पहचान करना और उन्हें कम करना और बैंकिंग-व्यवसाय के सभी पहलुओं में सतत विकास के अवसरों का लाभ उठाना।</li> </ul>
-----------------------	--	--	---

एवं उद्देश्य हैं- आंतरिक और बाहरी रूप से एक संवहनीय वातावरण सृजित करना, जो सतत प्रथाओं को अपनाने और क्षेत्र के नीति-निर्माताओं, समकक्षों और विशेषज्ञों के साथ सहयोग के माध्यम से, सभी हितधारकों के लिए मूल्यवर्द्धन करना और अंततः पर्यावरण, सामाजिक एवं अभिशासन संबंधी रणनीति को संगठन के पारिस्थितिकी तंत्र में रूपांतरित करना।

इन्हीं लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु कार्य करते हुए बैंकिंग-क्षेत्र में पर्यावरण, सामाजिक एवं अभिशासन के विभिन्न क्षेत्रों पर व्यापक कार्य हुआ है, जिसके प्रभाव आज व्यापक रूप से परिलक्षित हो रहे हैं।

बैंकिंग-क्षेत्र में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन के प्रभावों का मोटे तौर पर निम्नलिखित रूप में वर्णन किया जा सकता है:-

**निष्कर्ष :** निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि बैंकिंग क्षेत्र में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन संबंधी कदमों का व्यापक प्रभाव पड़ा है। यदि हम पर्यावरणीय प्रभावों की बात करें, तो बैंकिंग क्षेत्र आज अपने भौतिक परिचालनों के पर्यावरणीय और जलवायु संबंधी प्रभावों का अध्ययन करते हुए उपचारात्मक कदम उठा रहा है। पर्यावरण - संरक्षण संबंधी गतिविधियों को बढ़ावा दे रहा है और इस हेतु विभिन्न सरकारी संगठनों, गैर-सरकारी संगठनों, निजी क्षेत्र के संगठनों और स्वयंसेवी-संस्थाओं के साथ मिलकर कार्य

कर रहा है। साथ ही कार्बन फुटप्रिंट्स को कम करने हेतु विभिन्न कदम उठा रहा है। बैंकिंग-क्षेत्र जोखिम-प्रबंधन के अंतर्गत अपने ऋण-पोर्टफोलियों में पर्यावरणीय एवं जलवायु-जोखिमों के प्रभावों का अध्ययन करते हुए वित्तपोषण कर रहा है। जहाँ तक सामाजिक प्रभावों का संबंध है, तो बैंकिंग क्षेत्र अपने कर्मचारियों को एक सुरक्षित और काम करने हेतु अनुकूल वातावरण प्रदान करने, मानव-संसाधन में निवेश करने, नैतिक और आचार संबंधी उत्तम प्रथाओं को अपनाने और ऐसे वित्तीय समाधान प्रस्तुत करने की कोशिश कर रहा है, जिनसे जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो तथा सामाजिक-आर्थिक विकास को गति मिल सके। अभिशासन (गवर्नेंस) के अंतर्गत बैंकिंग-क्षेत्र ऐसी सतत-कारोबार-रणनीतियों को अपना रहा है, जिनसे जोखिमों का बेहतर प्रबंधन किया जा सके। इसके अतिरिक्त हितधारकों के लिए सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता और नैतिक -व्यवहार की संस्कृति को बढ़ावा दिया जा रहा है। बैंकिंग-क्षेत्र अभिशासन की एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में गोपनीयता एवं साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में कार्य कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को हासिल करने की दिशा में भी बैंकिंग क्षेत्र में पर्यावरण, सामाजिक एवं अभिशासन संबंधी प्रभावों का महत्वपूर्ण योगदान है। समेकित रूप से कहा जाए तो बैंकिंग-क्षेत्र में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन के क्षेत्र में हुए कार्यों के सकारात्मक प्रभाव पड़े हैं और अंततोगत्वा आम आदमी लाभांविता हुआ है।

\*\*\*\*\*



Shreyas contest 2023  
English Poetry  
2nd prize

## Graceful Thanks Symphony



**Ankita Kumari**  
Officer  
CPC, Bhubaneswar

In the quiet whispers of dawn's embrace,  
I find a melody woven with grace.  
A symphony of moments, both big and small,  
In the dance of life, I stand enthralled.

"Gratitude," a word that echoes true,  
Through the tapestry of skies so blue.  
In every sunrise, a gift untold,  
A canvas painted in hues of gold.

Beneath the moon's soft, silvery glow,  
Gratitude blooms in the seeds we sow.  
A gentle nod to a helping hand,  
In the intricate web of life, we stand.

For every trial that shapes our soul,  
Gratitude is the compass, making us whole.  
In the laughter shared and tears we've shed,  
A river of thanks, forever fed.

So, let this poem be a humble ode,  
To the gratitude that in our hearts has flowed.  
In the tapestry of time, its threads align,  
A timeless masterpiece, both yours and mine.

In the symphony of moments, each note,  
Resounds with gratitude, a binding coat.  
With every heartbeat, a rhythm true,  
A celebration of life, both old and new.

In the whispers of the wind's sweet song,  
Gratitude lingers, steadfast and strong.  
Through seasons changing, a constant theme,  
A thread in the fabric of life's grand scheme.

Amid challenges faced and mountains climbed,  
Gratitude, an echo, endlessly chimed.  
In friendships forged and love that's pure,  
A melody that forever shall endure.

So, raise a glass to the year gone by,  
A journey marked with a grateful sigh.  
For lessons learned and paths unknown,  
Gratitude, a seed forever sown.

In the canvas of existence, vibrant and bright,  
Gratitude paints with colors of sheer delight.  
This ode extends beyond the page,  
A timeless celebration, gratitude's stage.



Shreyas contest 2023  
Hindi Poetry - 2nd prize

# मैं कृतज्ञ हूँ



मोनालिसा पंवार

एसडब्ल्यूओ-ए  
जोधपुर पाल रोड, एलआईसी सीए

मैं कृतज्ञ हूँ देश के उन किसानों के लिए  
जो बहाकर पसीना अपना  
धरती पर सोना उगाते हैं  
बंजर पड़ी धरती पर  
धानी चुनर ओढ़ाते हैं॥

मैं कृतज्ञ हूँ देश के उन जवानों के लिए  
जो मुस्कुराते हुए अपने सीने पर गोलियां खाते हैं  
माँ को छोड़, घर में अकेला अपनी  
धरती माँ का कर्ज चुकाते हैं  
अपने खून का कतरा-कतरा बहाते हैं॥

मैं कृतज्ञ हूँ इस प्रकृति के लिए  
जिसने जिंदगी जीने के साधन दिए  
मुस्कुराने की वजह दी, खुशहाल सौगातें दी  
खोकर खुद को, सबको खुशियां बांटते हैं  
देते हैं सबको सब कुछ,  
बदले में कुछ नहीं चाहते हैं॥

मैं कृतज्ञ हूँ उस मातृशक्ति की  
जो कहने को तो कमजोर बताई जाती है  
मगर उसके जितनी क्षमता किसी में नहीं पाई जाती है  
घर, परिवार, कार्य हर चीज में सामंजस्य बैठाती है  
हो चाहे जितनी थकी, फिर भी मुस्कुराती है॥

मैं कृतज्ञ हूँ उन महान गुरुजनों का  
जिसने देश का भविष्य बनाया है  
अपने पथ पर अडिग रहकर,  
गुरु कर्तव्यों को निभाया है  
नहीं मन में द्वेष भावना,  
अपने शिष्यों को सदैव समान ही पाया है॥

मैं कृतज्ञ हूँ उन सभी चिकित्सकों के लिए  
जो धरती पर ईश्वर रूप कहलाते हैं  
मुश्किलों में पड़े लोगों की जान बचाते हैं  
आए चाहें कोई भी परेशानी  
अपने कर्तव्य पथ से नहीं डगमगाते है॥

मैं कृतज्ञ हूँ अर्थव्यवस्था के उन सभी प्रहरियों  
का जो अपनी जान, मान और सम्मान  
की परवाह किए बिना  
हर विपरीत परिस्थितियों में  
देश के कोने-कोने में अपनी बैंकिंग सेवाएं देकर  
देश के हर नागरिक को आर्थिक  
रूप से संबल देने में  
अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं॥

सिर्फ कहने भर से कृतज्ञता का मूल्य नहीं चुकता है  
दिल से है आभार, हमारी नजरों में यह दिखाता है॥





Shreyas contest 2023  
English Short Story  
2nd prize

## Winged Salvation



**Gokilavani R.**  
Officer  
CRM Section, Trichy RO

"Sometimes, you will never know the value of a moment until it becomes a memory." - Unknown

With this quote resonating in my mind, I find myself penning down a real-life incident, a memory etched into the diverse ecosystem of the Western Ghats, within the Sathyamangalam forest, where my engineering college was nestled. Amidst the lush greenery, dedicated students immersed themselves in sincere study sessions, preparing for the upcoming semester exams. Among them, I found myself grappling with the intricacies of understanding the relationship between heat and energy for my thermodynamics paper.

My hostel roommates had gone to fetch some tea and biscuits from the hostel mess to shake off the midday slump. Unwilling to join them, as laziness had its firm grip on me, I opted to stay put in my 4th-floor room. While they maneuvered the stairs, I decided to immerse myself in the soothing combination of music and birdwatching.

Plugging in my earphones, I let the melodious tunes of my favorite A.R. Rahman song, "Ek Sooraj Nikla Tha," fill my ears.

"Ek Sooraj Nikla Tha

Kuchh Paara Pighla Tha

Ek Aandhi Aayi Thi

Jab Dil Se Aah Nikli Thi

Dil Se Re... dil se re..."

As I hummed along, I gazed out of the wide window in the corner of my room. A group of birds gracefully glided around the football net in our college's football court. Intrigued, I removed my headset and wiped the glass to get a clearer view. It was then that I noticed four or five

crows viciously pecking at another bird trapped in the net, which stood right beside the girls' hostel.

As I continued to observe the unfolding drama, the trapped bird struggled desperately, while the hungry crows relentlessly attempted to secure their unfortunate meal. I found myself unwittingly immersed in a live enactment of the biological balance I studied back in my 6th-grade science class-nature's intricate web of life and survival.

Realizing that I needed to focus on my impending thermodynamics studies, I reluctantly opened my book. However, the vivid image of the avian struggle lingered in my mind, making it impossible to concentrate on heat and energy equations. With a sigh, I decided to change my study location, seeking refuge in my friend's room.

But as fate would have it, I soon found myself back in my room, unable to resist the urge to check on the bird's fate. The clock mercilessly ticked towards 4 pm, leaving me with a mere seven hours to conquer the daunting task of completing 20 modules. Yet, the unsettling image outside my window persisted, disrupting my concentration.

In a moment of frustration, I impulsively grabbed a pair of scissors and a fruit-cutting knife, and tucked them in my pocket. Adjusting my spectacles and tying my loose hair, I envisioned myself as a makeshift firefighter, ready to embark on a daring mission to rescue the distressed bird.

With a determined spirit, I emerged from my hostel room, my breath heavy with anticipation. As I rushed downstairs towards the football court, a weathered hand intercepted my path. It was the elderly watchman of the girls' hostel, reminded me of the college's strict regulations. He firmly stated that venturing outside the girls' hostel at this hour was not permitted.

In my earnestness, I explained the dire situation, detailing the bird's plight and the failed attempts to enlist his help. However, the steadfast watchman, bound by his duty, declined my request to accompany me. Undeterred, I found myself caught in a heated debate with him.

Just in the nick of time, two of my friends, who had ventured to the mess for tea and biscuits, arrived at the scene. "Hey Vani, what's happening?" they inquired. After sharing the unfolding saga, they willingly joined forces, their youthful energy eager to embark on a mission to make things right.

Despite 20 minutes of struggle, arguments, and impassioned pleas, we failed to sway the elderly watchman. Faced with a seeming impasse, we decided to unleash our "Bramastram," our last and most powerful weapon—the weapon of tears. The prospect of three determined young girls in tears proved effective. Moved by our emotional appeal, the watchman relented, and we managed to persuade him to accompany us on our mission to rescue the distressed bird.

Filled with excitement, my friends and I hurried towards the football court. As we approached, the scene became clearer, and what unfolded before us left us momentarily astounded. The bird, initially perceived by me as small and distressed, had transformed into a majestic Indian Eagle Owl.

Cloaked in a blend of earthy tones-tawny browns and mottled grays-the intricate feather pattern of the Indian Eagle Owl allowed it to seamlessly blend into its natural habitat. Its large, vivid orange eyes not only added to its aesthetic allure but also served as powerful tools for nocturnal hunting, reflecting the prowess of this magnificent creature in adapting to its environment.

With a wingspan that commanded attention, the Indian Eagle Owl stood as a symbol of both elegance and prowess in the avian realm. Yet, here it was, entangled in the football net, wings spread towards the earth, and one leg tucked precariously between the nets, almost broken.

Reality struck me like a thunderbolt, but before I could fully comprehend the situation, two of my friends had already sprinted 100 meters away from me. My heart

pounded in my chest as I faced the grim reality—the silent, intelligent, and powerful predator, the Indian Eagle Owl, was under attack by a group of persistent crows.

Frozen in place, my legs seemingly tied to the ground with a heavy stone, I couldn't tear my eyes away from the owl. In that one-on-one gaze, I witnessed a brilliance that defied the common belief about owls' lower vision in bright light. The horned bird's eyes were like burning beacons, connecting with my soul in a way that felt almost extraterrestrial—a laser attack of alien origin.

As I stood there, entranced, I heard a plea echoing in my mind: "SAVE ME." My heart, overriding any doubts, declared its unwavering commitment to rescue the majestic creature. Meanwhile, my rational mind engaged in a silent debate about the intricacies of her preying techniques.

Despite the internal conflict, my heart prevailed. I inched forward, only to be met with the owl fanning her feathers, a clear warning to stay away without knowing my intention. Undeterred, I pressed on, determined to free her. My friends, worried for my safety, attempted to pull me back, but I remained focused on the task at hand.

Amidst the commotion, the watchman's whereabouts remained unknown. The sounds of the surroundings faded away as my scissors cut through the entangled net. After a ten-minute struggle, I successfully untangled the net, freeing the owl. With a broken leg, she stood for a moment, then turned her back to us. In an act of gratitude, she twisted her neck 135 degrees, fixing her gaze upon me.

Without a moment's hesitation, she spread her wings and soared toward the great Western Ghats, perhaps reuniting with her family. The adventures ended, and I returned to my room, refocusing on thermodynamics.

Two weeks later, my exam results arrived—only a passing grade in that subject. Yet, my heart brimmed with satisfaction and cherished memories. Over the years, life evolved with a career in Canara Bank and the responsibilities of a family. Still, the connection with that fateful day remained fresh in my heart—a cipher wing etched into the tapestry of my life.

\*\*\*\*



Shreyas contest 2023  
Hindi Short Story  
2nd prize

## पिता की सीख



धीरज जुनेजा

अधिकारी  
सूरत, क्षे.का.

“मेरे कंधों पर है जिम्मेदारियों का पहाड़  
मेरे बच्चे मुझे कभी, बूढ़ा होने नहीं देते...

अचानक पिता के कमरे की सफाई करते हुए, अजय पिता की मिली हुई डायरी में, ये पक्तियां पढ़ते हुए भावुक हो गया। अजय के पिता का सात दिन पहले ही निधन हुआ था। अजय अपने पिता के सबसे करीब था। उसके पिता नैतिकता और जिम्मेदारियों का ऐसा व्यक्तित्व थे, जिन्होंने अपने जीवन में कभी भी गम को हावी नहीं होने दिया था। अजय भी उसी प्रभाव से उपजा हुआ व्यक्ति था। पिता अपनी योग्यता के अनुरूप स्थान प्राप्त नहीं कर सके थे, जिसके वह वास्तव में उत्तराधिकारी थे। इसके बावजूद जीविका के तौर पर एक सरकारी बैंक में क्लर्क रहते हुए उन्होंने अजय को हर वह शिक्षा दिलाई जो एक समर्पित पिता अपने बेटे को दिला सकता है। इंजीनियरिंग करने के बाद अजय ने एक प्राइवेट कंपनी में जॉब शुरू कर दी, लेकिन कुछ समय बाद उसका मन वहां नहीं लगा। उसका लक्ष्य प्रशासनिक अधिकारी बनने का था। अतः, उसने यह इच्छा अपने पिता को बताई। पिता को बहुत अधिक प्रसन्नता हुई कि जो कार्य और लक्ष्य वह स्वयं न प्राप्त कर सके, वह उनका बेटा पूरा करके दिखाएगा। उन्होंने अविलम्ब अजय को अपनी बैंक में जमा राशि से दिल्ली के मुखर्जी नगर के एक प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थान में एडमिशन कराया तथा उसको हर माह पांच हजार रुपए खर्च भी भेजते थे।

एक साल के अन्दर ही मेहनत रंग लाई और अजय का चयन पहले ही प्रयास में उच्च रैंक के साथ हो गया। पिता का अपना सपना, बेटे के रूप में साकार हो गया था। आखिर

अजय ने अपने पिता को जीवन का सर्वश्रेष्ठ उपहार दे दिया था। समय बीतता गया और अजय ने परिवीक्षाधीन प्रशासनिक अधिकारी के तौर पर बिहार की एक छोटी सी तहसील में नौकरी प्रारंभ की, लेकिन यह क्या? जैसा सोचा था, वैसा जीवन में होता कहां है? अजय ने पाया कि पिता द्वारा दिए गए संस्कार, उसूल, ईमानदारी, समर्पण और सच्चाई के सबक यहां पर बेकार साबित हो रहे थे। यहां पर भ्रष्टाचार का बोलबाला था, जिसे राजनीतिक संरक्षण मिला हुआ था। कोई ऐसा दिन नहीं होता था, जब अजय को किसी भी नेता से बहस का सामना नहीं करना पड़ता था, क्योंकि वह ईमानदार था। यह तो निश्चित था कि बेईमानों में ईमानदारों से ज्यादा एकता होती है। सब मिलकर अजय को परेशान करते थे। यदि अजय किसी बात को सही रूप में अपने उच्चाधिकारी को अवगत कराता था तो उच्चाधिकारी तथा राजनीतिक प्रतिनिधित्व के नेता उससे बुरी तरह लड़ते थे। इन सब से अजय टूट सा गया था। उसने नौकरी छोड़ कर वापस प्राइवेट सेक्टर में जाकर नौकरी करने का मन बना लिया था।

उसी शाम उसने अपने पिता को फोन करके कहा – पिताजी आपने अपने जीवन का जो भी संघर्ष था, उसे नैतिकता, सच्चाई, ईमानदारी के मूल्य में पिरो कर मुझे सर्वश्रेष्ठ शिक्षा दिलाई, जिसका परिणाम था कि मुझे सफलता मिलती चली गई। मुझे लगा कि दुनिया ऐसी ही होती होगी। सब कुछ अच्छा होता होगा, सारी अच्छी चीजों का मूल्य तुरंत मिल जाता होगा। अच्छा करने के लिए अच्छे लोग होते होंगे। अच्छी परिस्थितियां होती होगी, अच्छी दिशा होती होगी, अच्छा वातावरण होता होगा। लेकिन मैं गलत था। लोग इतने

दूषित हो चुके हैं कि कोरोना जैसी महामारी में इतनी सारी मौतों के बाद भी उन्होंने अपना मूल दानव स्वभाव नहीं छोड़ा है। पैसे की लूट इतनी अधिक है कि इंसान निम्नतम स्तर से भी नीचे जा चुका है। कुछ अच्छा कार्य करना एक अपराध सा हो गया है। किताबों में लिखी हुई बातें जिस समाज में उतर के आती हैं तो समाज आप का सबसे बड़ा दुश्मन साबित होता है। बहुत कोशिश की, लेकिन जो एकता मूल्यों को तोड़ने के लिए है इतनी एकता मूल्यों को बनाए रखने के लिए दिखाई नहीं पड़ती।

अजय लगभग आधे घंटे तक अपनी बात फोन पर करता रहा, पिताजी चुपचाप सुनते रहे। उसके बाद उन्होंने एक लंबी सांस ली और बोले – “देखो बेटा! जीवन कभी भी इतना सरल नहीं था जिस दिन से आप जन्म लेते हो उस दिन से संघर्ष शुरू हो जाता है। अच्छे लोगों को बहुत कष्ट उठाना पड़ता है, लेकिन आगे परिणाम बहुत आनंददायक होते हैं। अभी तुम्हें प्रतीत हो रहा होगा कि बेईमानों की एकता ईमानदारों की एकता से अधिक है, लेकिन यह बात भी जानना चाहिए कि बेईमानों की एकता का एक कारण और सिर्फ एक कारण पैसा होता है जबकि ईमानदार बिना कारण अपने मार्ग पर चलते रहते हैं। मैं सिर्फ इतना ही कहूंगा कि तुमने मेरे सपने को साकार किया है। इसके लिए जीवन भर तुम्हारा ऋणी रहूंगा। बाकी जीवन तुम्हारा है तुम्हारा निर्णय है। मैं तुम्हारे हर निर्णय का सम्मान करता हूँ, जैसा उचित लगे, करना। बेटा! मैं तुम्हारे साथ हूँ और हमेशा साथ रहूंगा।”

अजय की आँखों में आँसू आ गए। अजय को उम्मीद नहीं थी कि पिता इतनी सरलता से उसकी बात को स्वीकार करेंगे उसने उसी रात इस्तीफा लिखा और अपनी फाइल में रखकर कार्यालय आ गया। आज मुख्य सचिव की मीटिंग होनी थी। उसकी तैयारी करने लगा। अचानक दोपहर में दो बजे के आसपास माता जी का फोन आया कि – “बेटा जल्दी घर चले आओ! पापा का बीपी काफी बढ़ गया है उन्हें चक्कर आ गया तो उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया

है।” अजय ने तुरंत यह बात अधिकारियों को बतायी, लेकिन कार्य के दबाव का हवाला देते हुए उन्होंने स्पष्ट मना कर दिया। काफी निवेदन करने पर मीटिंग खत्म होने के बाद उन्होंने जाने की अनुमति प्रदान की। अजय ने बुझे मन से, मीटिंग की तैयारी करनी शुरू कर दी। जैसे ही मीटिंग खत्म हुई अजय उड़ कर अपने पिता के पास पहुंच जाना चाहता था। उसकी आँखें आँसुओं से भरी हुई थी। जैसे ही वह अस्पताल पहुंचा। उसे ज्ञात हुआ कि उसके पिता को दिल का दौरा पड़ा है और स्थिति गंभीर है। उसने दिन-रात पिता की सेवा की तथा डॉक्टरों ने भी काफी प्रयास किया, लेकिन उनके शुगर और बीपी की बीमारी के साथ हार्ट अटैक की समस्या ने जीवन पर जीत प्राप्त कर ली। जीवन की साँसे समाप्त हो चुकी थी। अजय से जैसे कोई आसमान छिन लिया गया। उसे एकदम से अपने बड़े होने आभास हुआ। उसे लगा जिस सूरज से मुझे रोशनी मिल रही थी वह सूरज सदा के लिए अस्त हो गया है। उसे वह अपने जीवन में कुछ भी अच्छा होता हुआ महसूस नहीं हो रहा था।

पिता की मृत्यु के बाद उनके क्रियाकर्म करने हेतु उसने पंद्रह दिन का अवकाश ले लिया था। उसने निर्णय कर लिया था कि छुट्टी से लौटने के बाद वह अपनी नौकरी से इस्तीफा दे देगा। उसे वर्तमान परिस्थितियों, राजनीति से ग्रसित नौकरी और घर को उसकी आवश्यकता के मद्देनजर इस्तीफा देना ही ज्यादा उपयुक्त लग रहा था। उसे ऐसा लग रहा था कि यदि वह नौकरी से इस्तीफा दे देगा और एक नई जिंदगी की शुरुआत करेगा तो ज्यादा सहज हो सकेगा वरना इन परिस्थितियों में उसको अपनी स्थिति बिल्कुल वैसे ही लग रही थी जैसे लुढ़कते हुए पत्थर को कोई अपने दोनों हाथों से चोटी पर चढ़ाने का प्रयास कर रहा हो। उसे लग रहा था कि प्राइवेट नौकरी में वो भले पापा के सपनों पुरा ना कर पाए लेकिन पिता के दिखाए गए संस्कार और नीति को वह अवश्य ही अपनी कर्तव्य के साथ साबित कर सकेगा। इसी उधड़बुन में पिता की मृत्यु के बाद उनके बैंक संबंधी तथा जमीन संबंधी कार्यों को करने के लिए उसने कुछ दिन का अवकाश लिया था। जिसके दौरान वह कमरे की सफाई कर

रहा था।

सफाई करते समय उसे पिता की डायरी मिली इसमें हर वो बात लिखी थी जो वह किसी से नहीं कहते थे ना किसी को महसूस होने देते थे। एक पन्ने पर बिलकुल वैसे ही परिस्थिति का जिक्र था, जैसा वह इस समय महसूस कर रहा था, उसमें लिखा था- एक बार नौकरी के दौरान उन्हें जानबूझकर फसाया गया। उस समय पूरे घर की जिम्मेदारी उन पर थी। उन्होंने भी निर्णय किया था कि मैं इस्तीफा देकर कोई और कार्य कर लूंगा, लेकिन कुछ समय बाद उन्हें आभास हुआ कि विपत्ति से भागना उचित निर्णय नहीं होता है। आप पद, सरहद या कोई भी जिम्मेदारी बदल कर देख लो, सबसे अच्छा समाधान सिर्फ उसका सामना करना होता है। यह चीज जितनी जल्दी समझ में आ जाए। मनुष्य के जीवन के लिए उतना ही बेहतर होता है। प्रकृति किसी के साथ अन्याय नहीं करती है। यदि आप सही हैं तो आपके साथ न्याय ज़रूर होगा। चाहे वह आज हो या कुछ समय बाद डायरी के कुछ पन्नों के बाद यह जिक्र था कि जिसने उन्हें फंसाया था, उसे खुद एक बड़े घोटाले में जेल जाना पड़ा। कुछ समय बाद उनके नए कार्यालय प्रमुख स्थानांतरित होकर आए। उनके कार्यालय प्रमुख एक अच्छे व्यक्ति थे, जिन्होंने उनकी बहुत मदद की और उन्हें निर्दोष

साबित कराया। कुछ समय बाद उन्हें अच्छा कार्य करने हेतु प्रधान कार्यालय से प्रशंसा पत्र प्राप्त हुआ।

डायरी में आगे लिखा था कि "जब भी आपको अपनी जिंदगी में ऐसा लगने लगे जैसे कि आप एक पहाड़ पर लुढ़कते हुए बड़े से पत्थर को चोटी पर ले जाने का प्रयास कर रहे हैं तो समझ जाइए ईश्वर आपकी परीक्षा ले रहा है। आप अगर उस पत्थर को छोड़कर नीचे भागेंगे तो पत्थर आप को कुचल कर रख देगा बेहतर यह होगा। ईश्वर पर भरोसा रख कर पत्थर को चोटी तक धकेल कर ले जाएं। परिस्थितियों का सामना करें। जब आप पत्थर को चोटी के दूसरी तरफ लुढ़का देंगे तो चोटी पर सिर्फ आप और आपकी सफलता होगी और पहाड़ के दोनों तरफ उस पत्थर का नामो निशान न होगा।" बस जिंदगी ऐसे ही जी जाती है, भाग कर नहीं, बल्कि परिस्थितियों का सामना करके जी जाती है। परिस्थितियों के पत्थर को चोटी के दूसरी तरफ लुढ़का कर ही सफलता मिलेगी। यह जिंदगी में हमेशा याद रखना चाहिए। अजय की आँखों से आँसू बह रहे थे। उसे आज ही महसूस हो गया था कि मैं अब इस्तीफा नहीं दूंगा, बल्कि परिस्थितियों के पत्थर को चोटी तक अवश्य ले जाऊँगा। उसने सामना करने का निर्णय कर लिया था। डायरी का खुला हुआ पन्ना उसके आँसूओं से भीग गया था।

### Answers for the Fun Corner on page 22

#### SU-DO-KU

5	3	4	6	7	8	9	1	2
6	7	2	1	9	5	3	4	8
1	9	8	3	4	2	5	6	7
8	5	9	7	6	1	4	2	3
4	2	6	8	5	3	7	9	1
7	1	3	9	2	4	8	5	6
9	6	1	5	3	7	2	8	4
2	8	7	4	1	9	6	3	5
3	4	5	2	8	6	1	7	9

#### FIGURE-IT-OUT

$$5 + 4 + 7 - 9 = 7$$

$$6 + 4 + 2 - 4 = 8$$

#### RIDDLE- RIDDLE

1. Crowd – Crow
2. Paste – Past
3. Gravel - Grave



Shreyas contest 2023  
English Travelogue  
2nd prize

## A Wintery Adventure: Motorcycle Journey to Mount Abu



**Chitankumar Solanki**

Officer

Ahmedabad Vatva GIDC

### Introduction:

In the midst of a chilly December, my wife, Hetal, and I embarked on a thrilling expedition that would be lasting memories in our hearts. Our destination was Mount Abu, a charming hill station nestled in the Aravalli Range, and in the landscape of Rajasthan. The means of our journey was no ordinary one; it was a Royal Enfield Bullet, our motorcycle that had earned our trust through countless journeys. The adventure we were about to undertake had been a long-cherished dream. The anticipation had been building for months, fueled by stories of open roads and the allure of the hills. As we awoke to the soft, pre-dawn light filtering through the curtains of our bedroom in Ahmedabad, we knew the time had come to turn this dream into reality. Wrapped in layers of warm clothing, with helmets secure, we made our way to our loyal companion, the Royal Enfield Bullet. The motorcycle's reassuring thump echoed in the quiet morning streets of Ahmedabad as we embarked on our journey. The world was still asleep, and we were the sole witnesses to the birth of a new day and a new adventure. As the sun rose, we navigated through the city's streets, leaving behind the urban hustle. The motorcycle's engine hummed, the road stretched endlessly before us, and the sense of freedom was experienced. Each twist of the throttle brought us closer to the world of endless possibilities that lay on the horizon.

Our first stop was a humble tea stall, a sanctuary for early risers, where hot chai warmed our chilled fingers. The friendly vendor, with years etched into his weathered face, inquired about our journey. His stories and advice added a layer of authenticity to our adventure. Setting out again, we left behind the city and embraced the solitude of the open road. The Palanpur Highway unwound its serpentine path, leading us through fields of green and picturesque villages. The journey was

physically demanding, and every bump in the road reminded us of the terrain we were conquering. But it was all part of the experience. The road was a connection to the land beneath us, and the motorcycle was our steadfast guide. It was a long and challenging ride, but every mile brought us closer to the beauty of rural Gujarat and the foothills of the Aravalli Mountains.

As we approached Abu Road, the gateway to Mount Abu, the landscape changed dramatically. The plains gave way to the rugged hills. The ascent was a thrilling yet demanding experience, and the motorcycle's engine roared as it conquered the steep inclines. With each turn, we gained altitude, and the cool mountain air became crisper. It had us on the edge of our seats, quite literally. The anticipation of reaching Mount Abu was at its peak, and the beauty of the surrounding landscape was nothing short of breathtaking. The motorcycle had carried us to the doorstep of the enchanting hill station, where our adventure was set to continue.

### The Early Morning Departure:

The day began with a soft, pre-dawn light gently filtering through the curtains of our hotel room in Ahmedabad. The crispness in the air hinted at the adventure that lay ahead. Hetal and I had been looking forward to this motorcycle trip for months, and the excitement was palpable. Clad in layers of warm clothing and donning our helmets, we were determined to brave the winter chill.

With the soft purr of our Royal Enfield Bullet, we rolled out onto the quiet streets of Ahmedabad, its residents still wrapped in slumber. The darkened city streets provided a stark contrast to the vibrant scenes that awaited us on the road. The early morning was a mesmerizing blend of cool, misty air and the rising sun. As we rode further from the city, the roads stretched

endlessly before us, and the feeling of freedom was intoxicating. Our motorcycle became an extension of ourselves, carrying us through a world of new possibilities.

Our first stop was a quaint tea stall, where we sipped hot Chai to warm our chilled fingers. The local vendor, a warm smile on his face, inquired about our journey. His weathered face spoke of a lifetime spent in the company of travelers, and his stories added to the sense of adventure that hung in the air. We resumed our journey, and as the sun crested the horizon, the landscape began to reveal its splendor. Golden fields stretched to the horizon, and we could see the Aravalli Mountains looming in the distance, their grandeur beckoning us forth. Every twist and turn in the road seemed to lead to a new revelation, a new facet of the beautiful Indian countryside.

From time to time, we pulled over at scenic spots, unable to resist the urge to capture the stunning vistas on camera. The play of light and shadow on the landscape was a photographer's dream, and the photographs we took would serve as cherished memories of our journey. As the day progressed, the air grew warmer, and we could feel the sun on our backs. The journey was well underway, and the sense of adventure and anticipation only grew stronger. Each passing mile brought us closer to our destination and further into the embrace of nature. The road ahead was an open book, and we were eager to explore every page.

In this way, our early morning departure set the stage for the adventure of a lifetime. The open road beckoned, and with each passing moment, we felt more connected to the world around us. The thrill of the journey had only just begun, and the memories we were creating would last a lifetime.

### **The Long Ride to Mount Abu:**

The journey from Ahmedabad to Mount Abu was a test of both our endurance and the capabilities of our Royal Enfield Bullet. Leaving behind the bustling city of Ahmedabad, we embraced the solitude of the open road and the beauty of rural Gujarat. The Palanpur Highway unfurled before us, winding through the countryside.

Fields of emerald green stretched out in every direction, interspersed with quaint villages and the occasional herd of cattle. As we navigated the meandering roads, the sense of adventure deepened with every turn of the throttle. Riding a motorcycle for 230 kilometers isn't for the faint of heart. We felt every bump and undulation in the road, but it was part of the experience, connecting us to the terrain beneath us. The rhythmic thumping of the Bullet's engine provided a comforting soundtrack to our journey, a testament to the legendary endurance of this iconic motorcycle.

One of the most exhilarating moments of our journey was the approach to Abu Road, the gateway to Mount Abu. The landscape began to change dramatically as the flat terrain gave way to the foothills of the Aravalli Mountains. The ascent was both thrilling and challenging. The motorcycle's engine roared as it powered up the steep inclines, and the cool mountain air grew even crisper as we gained altitude. Each twist and turn in the road revealed a new, breathtaking view. The Aravalli Range, one of the oldest mountain ranges in the world, stood before us in all its majesty. The rugged terrain was dotted with lush forests and rocky outcrops, and the thrill of climbing these heights filled us with a sense of accomplishment.

As we neared Mount Abu, the anticipation grew. The road led us through dense forests, and the scent of pine trees filled the air. Finally, we reached our destination—the hill station of Mount Abu. Perched at an elevation of over 4,000 feet, it offered a welcome respite from the plains below. The sight of Mount Abu, with its cool climate and lush greenery, was a refreshing change from the arid landscapes of Rajasthan. The motorcycle had brought us to this enchanting hill station, where our adventure was set to continue. The journey had been long and demanding, but it was a testament to our determination and the indomitable spirit of the Royal Enfield Bullet. It had been a rollercoaster ride, quite literally. The experience of reaching Mount Abu by motorcycle had been a blend of excitement, challenges, and stunning natural beauty. It was a testament to the resilience of both the riders and the trusty machine that carried them through the journey.

### Thrilling Nights at the Top:

As the sun dipped below the horizon, the temperatures in Mount Abu plummeted. The chilly nights at this elevated hill station were the perfect setting for a memorable experience. Hetal and I had made arrangements for a campfire, and it turned out to be one of the most thrilling parts of our trip. Surrounded by the ethereal mist and silhouette of tall trees, our campfire crackled and popped, casting dancing shadows that seemed to leap and play among the fog. We huddled around the fire, wrapped in blankets, sharing stories and laughter as the night grew darker. The sparkling stars overhead shone with a brilliance that city dwellers rarely see.

The silence of the mountains, broken only by the occasional hoot of an owl or the distant call of a wild animal, enveloped us. The sense of tranquility and remoteness was profound. As the night wore on, the cold crept in, but the warmth of the fire and our shared moments kept us comfortable. It was all about the magic of the misty nights at Mount Abu. The campfire had been a connecting point, where we were immersed in the beauty and serenity of the natural world, far removed from our daily routines.

### Exploring Mount Abu:

Our two-day stay in Mount Abu was filled with exploration. We couldn't wait to discover the beauty and culture of this hill station. One of our first activities was a serene boat ride on Nakki Lake. Surrounded by rugged hills and dense vegetation, the lake's placid waters mirrored the surrounding landscape, creating a sense of serenity that was hard to match. A visit to Gurushikhar, the highest peak in the Aravalli Range, allowed us to feel on top of the world. The panoramic views of the lush green hills, distant valleys, and the town of Mount Abu below were awe-inspiring. The tranquility of this spot was palpable, and we took some time to absorb the beauty of our surroundings.

Another highlight was watching the sunset at "sunset point." The sky transformed into a canvas of vibrant oranges and pinks, casting an enchanting glow over the landscape. We joined fellow travelers in quiet admiration, the beauty of the moment leaving us in a

state of wonder. In the local market, we explored the vibrant stalls and sampled the delectable street food. The market's bustling energy, the aroma of various spices, and the vibrant colors of the textiles and handicrafts made it a memorable visit. We couldn't resist indulging in local dishes and sweets, leaving with a taste of Mount Abu's rich culture. It captured our exploration of Mount Abu, where each experience allowed us to connect with nature and immerse ourselves in the local culture. The variety of activities in this charming hill station left us with a deep appreciation for the uniqueness of this destination.

### Embracing the Local Flavors:

One of the joys of travel is savoring the local cuisine, and in Mount Abu, we made it a point to indulge in the street food offerings. The local market was a culinary treasure trove, and we couldn't resist the allure of the vibrant stalls. The air was thick with the aromas of street food, and our senses were overwhelmed by the delicious scents. We tried various local specialties, from piping hot pakoras to sweet jalebis and rabdi. Each bite was a burst of flavor, and our taste buds reveled in the rich and diverse culinary offerings of Mount Abu. Our culinary adventure continued as we sampled street vendors' spicy chaat, aloo tikki, and delectable sweets. The food was a testament to the region's unique blend of flavors and spices. We were warmly welcomed by the local vendors, who shared stories and secrets of their craft, making the experience even more special. We embraced the flavors of Mount Abu and enjoyed the warm hospitality of the locals. The street food offerings added a delightful and flavorful dimension to our trip, leaving us with cherished memories of both the cuisine and the people we met along the way.

### The Return Journey:

Our return journey was bittersweet, marked by the warmth of good memories and the desire to revisit Mount Abu. The ride back to Ahmedabad was a reflective one, filled with gratitude for the moments we had shared on this journey. We took the same route for our Return Journey to Ahmedabad. Riding Motorcycle or 500Kms was really a breathtaking experience. Mount Abu had left an indelible mark on our hearts, a testament to the beauty of travel and the bonds it forges.





Shreyas contest 2023  
Hindi Travelogue  
2nd prize

## नयनाभिराम नानेघाट: उल्टा झरना



प्रकाश माली

वरिष्ठ प्रबंधक  
क्षेत्रीय कार्यालय, मधुरा

चरन् वै मधु विन्दति, चरन् स्वादुमुम्बरम् ।  
सूर्यस्य पश्य श्रेमाणं, यो न तन्द्रयते चरंश्चरैवेति ॥  
(ऐतरेय ब्राम्हण 7.15)

“जो व्यक्ति सदा श्रमशील एवं गतिशील है, वही सदा मधुपान (शहद / अमृत / परिश्रम का सुफल) करते हैं। कर्मयोगी को सदा श्रेष्ठ कर्म का श्रेष्ठ परिणाम मिलता है। सूर्य की कर्मठता तथा सृजनशीलता देखिए, वह क्षण भर भी दूसरों के कल्याण के लिए अपने श्रम से विमुख नहीं होता”।

भ्रमणशीलता के बारे में हमारे शास्त्रों में उल्लेखित उपर्युक्त सुभाषित मुझे भ्रमण के प्रति प्रोत्साहित करता है। वैसे तो आज की भाग-दौड़ भरी जिंदगी में भ्रमण के लिए समय निकाल पाना, हम सभी के लिए मुश्किल-सा होता जा रहा है, लेकिन हम फिर भी मौके ढूँढ़ ही लेते हैं। इस बार भी कुछ ऐसा ही हुआ और हमें पुणे जाने का अवसर मिला। बारिश का अंतिम महीना, यानि सितंबर-2023 का माह था, हम तीन दोस्तों ने यूट्यूब पर पुणे के आसपास के पर्यटक स्थलों के बारे में जानकारी एकत्रित करना आरम्भ किया। सबसे पहले हमें महाबलेश्वर के बारे में जानकारी मिली। लेकिन मालूम हुआ कि महाबलेश्वर बारिश के मौसम में ही घूमना ज्यादा अच्छा रहता है और चूँकि बारिश अपने अंतिम दिनों में थी, तो हमने वहाँ जाने का विचार त्याग दिया। अंततः हमें नानेघाट रिवर्स वॉटरफॉल के बारे में पता चला और सभी वहाँ जाने के लिए सहमत हुए। बारिश के मौसम को ध्यान में रखते हुए, हमारे एक बुद्धिमान दोस्त ने रैनकोट अपने साथ ले लेने का सुझाव दिया, जिसे हमने सहर्ष स्वीकार कर लिया। हम सभी अलग-अलग जगह से चलकर हवाई मार्ग से सुबह 6 बजे पुणे पहुँचे। जब हम यहाँ (उत्तर भारत) से गये थे, तब यहाँ बारिश हो रही थी, लेकिन पुणे पहुँचे तो,

मौसम साफ था और पता चला कि वहाँ बारिश हुए कई दिन हो गये हैं। यह देखकर हमारा उत्साह ठंडा पड़ गया। लेकिन हमारे पास कोई चारा नहीं था। हमें जाना तो था ही। पुणे में होटल पहुँचने के कुछ समय पश्चात ही निर्धारित समयानुसार टैक्सी आ गई और हम तीनों भारी मन से नानाघाट के लिए खाना हो गए।

हमारे साथ जो टैक्सी ड्राइवर था, वह मराठी भाषी था, लेकिन वह हिंदी भाषा भी भलीभाँति समझ सकता था। वह बहुत ही मिलनसार था। हमने उसे पहले ही नानाघाट के रास्ते में आने वाले सभी दर्शनीय स्थलों पर हमें घुमाने के लिए बोल दिया था। इसी क्रम में सबसे पहले उसने पुणे शहर में ही देहु-येलवाडी रोड पर इंद्रायणी नदी पर बने जगद्गुरु संत श्री तुकाराम महाराज मंदिर के पास टैक्सी रोकी। पवित्र इंद्रायणी नदी पर बना मंदिर बेहद सुंदर लग रहा था। बहुत सारे लोग पवित्र नदी में स्नान कर नदी के घाट पर पूजा-अर्चना कर रहे थे। हम स्नान तो नहीं कर सकते थे, इसलिए हमने भी पवित्र नदी में जल-आचमन किया और संत तुकाराम को नमन किया। हम सभी ने संत तुकाराम के अनुयाईयों के जैसा पारंपरिक चंदन का तिलक लगवाया तथा कई सारे फोटो क्लिक किए और अपने गंतव्य की ओर बढ़ गए।

बारिश तो नहीं हो रही थी, लेकिन बारिश जैसा मौसम जरूर बना हुआ था। रास्ते में आने वाले सभी नदी नाले, पर्वत, पठार हरियाली से परिपूर्ण थे। ऐसा लग रहा था मानो प्रकृति हरे रंग की चुनरी ओढ़कर नृत्य कर रही हो। इन्हीं मनोरम नजारों को आनंद लेते हुए अब हम देश के महान क्रांतिकारी और शहीद भगत सिंह-राजगुरु-सुखदेव की तिकड़ी में से एक नाम- राजगुरु के गाँव राजगुरु नगर पहुँच गए। राजगुरु

नगर को पहले खेड़ गाँव के नाम से जाना जाता था। यहीं 1908 में राजगुरु का जन्म हुआ था। लेकिन राजगुरु के सम्मान में अब इसका नाम बदलकर राज गुरुनगर कर दिया गया है। उल्लेखनीय है कि भगत सिंह-राजगुरु और सुखदेव ने लाला लाजपत राय पर हुए लाठीचार्ज का बदला लेने के लिए साण्डर्स की हत्या कर दी थी। जिसके कारण इन तीनों को 23 मार्च, 1931 को शाम 7 बजे लाहौर सेंट्रल जेल में फाँसी दे दी गई थी। हमने गाड़ी से उतरकर महान सपूत राजगुरु की जन्मदात्री धरती को नमन किया और आगे बढ़ गए।

गाड़ी में बज रहा कर्णप्रिय संगीत, बाहर के मनोरम दृश्यों के साथ हमें और अधिक मधुर लग रहा था। थोड़ी दूर और यात्रा करने के बाद, अब हमें भूख भी लगने लगी थी। हमने चालक महोदय से किसी अच्छे से भोजनालय पर नाश्ता करवाने का अनुरोध किया। कुछ दूर चलने के बाद उसने एक ठेठ महाराष्ट्रीयन रेस्त्रां के सामने ले जाकर गाड़ी खड़ी कर दी। वहाँ हमने महाराष्ट्रीयन स्वाद से भरपूर विभिन्न मराठी मिसलों (प्रसिद्ध मराठी व्यंजन) का आनंद लिया। किसी ने बड़ा पाव खाया, तो किसी ने मिसल का चस्का लिया। उसके बाद हमने एक-एक चॉकलेट ली और गाड़ी में बैठकर यात्रा के साथ-साथ चॉकलेट का आनंद लिया। जहाँ भी कोई फोटो के लिए कोई उपयुक्त स्थान मिलता, हम वहीं गाड़ी रोकते और फोटो क्लिक करने के बाद रवाना हो जाते।

यहाँ से लगभग 45 मिनट के सफर के बाद हम खडकुम्बे नामक उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ सड़क के किनारे, पठार से बहकर नागिन की तरह बलखाती हुई एक छोटी-सी, श्वेतवर्णी नदी की अजस्र जल-धारा, नीचे की तरफ बह रही थी। इस नैसर्गिक सौन्दर्य ने हमें इस नदी पर रुकने के लिए विवश कर दिया। इस नदी के पथरीले तट पर एक युगल कपड़े पखार रहा था। नदी का पानी एकदम स्वच्छ था। नदी के दोनों ओर धान के खेत लहलहा रहे थे। नदी के ऊपर का हरा-भरा पठारी क्षेत्र भी पृष्ठभूमि में बेहद मनोरम लग रहा था। हमने कुछ देर नदी के पानी के साथ अठखेलियाँ की। हम नदी के पानी की बहती जल-धारा में आधे घंटे तक पाँव लटकाकर बैठे रहे। इससे मिले सुकून को, शब्दों में बयाँ कर पाना नामुमकिन है।

हमारे साथ जो ड्राइवर था, उसने विभिन्न कोणों से हमारे कई शानदार फोटो और वीडियो बनाए। इन वीडियो और फोटो में हमारे मस्ती भरे पलों की याद हमें आज भी तरोंताजा कर जाती है। लगभग एक घंटा इस स्थान पर बिताने के बाद, हम अंततः अपने इच्छित गंतव्य नानेघाट पहुँच गये।

नानेघाट भारत के पश्चिमी घाट पर स्थित एक पर्वतीय दर्रा है, जो कोंकण समुद्रतट और 'जुन्नार' नामक प्राचीन नगर के बीच स्थित है। यह महाराष्ट्र के जुन्नार जिले में स्थित है। महाराष्ट्र के पुणे शहर से इसकी अवस्थिति लगभग 120 किमी उत्तर की ओर है, जबकि मुंबई शहर से इसकी दूरी लगभग 177 किमी उत्तर-पूर्व की ओर है। नानेघाट एक अद्भुत जगह है। यह उल्टे झरने (रिवर्स वाटरफॉल) के लिए जाना जाता है। यह झरना गुरुत्वाकर्षण के नियम के विरुद्ध उल्टी दिशा में बहता है। यह स्थान बारिश के दिनों में (जुलाई से सितंबर) के दौरान पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र होता है।

जैसे ही हम नानेघाट पहुँचे, हमें सामने दो पहाड़ों के बीच एक दर्रा दिखाई दिया। हम उस दर्रे पर पहुँचे और और जैसे ही हमने उस दर्रे के पार का दृश्य देखा, तो मन मयूर-नृत्य कर उठा। दर्रे के पार, नीचे की तरफ उर्ध्वाधर (एक दम खड़ी) घाटी थी, जो सघन रूप से हरी-भरी थी। असल में यह दर्रे के उस तरफ से लगभग 5-6 किलोमीटर का एक ट्रेकिंग प्वाइंट था। हमें वहाँ दो यूट्यूबर मिले, जो उसी ट्रेक से चढ़कर ऊपर आए थे। दर्रे के दोनों किनारों पर सातवाहनकालीन गुफाएँ थी, जिनमें ब्राह्मी लिपि में कुछ लिखा हुआ था। इस दर्रे से नीचे का दृश्य नयनाभिराम था। कुछ पल उस दर्रे में बिताने के बाद हम बाहर आ गये। मौसम अभी भी साफ था। हम सोच रहे थे कि काश! बारिश हो जाए, तो बात बन जाए। फिर हमने दर्रे के बाईं ओर वाली चोटी पर चढ़ने का निर्णय लिया। हम एक-दूसरे का हाथ पकड़कर ऊपर की ओर चढ़ रहे थे। पहले तो लग रहा था कि चोटी पास ही है। लेकिन जैसे-जैसे आगे बढ़ते गये, हमें ऐसा लगने लगा कि चोटी हमसे दूर होती जा रही है। अंततः हम चोटी पर पहुँच ही गये और वहाँ से हमें दूसरी एक और घाटी का और भी अधिक विहंगम-दृश्य दिखाई दिया। सघन हरियाली के बीच बसे गाँव बेहद खूबसूरत नज़र आ रहे थे। अभी हम चोटी पर ही थे कि अचानक बादलों का एक झुण्ड

आया और उसने पागल प्रेमी की तरह पूरी चोटी को अपने आगोश में लपेट लिया। यह अद्भुत नज़ारा देखकर हृदय-कोकिल कूक उठा और गाने लगा... आज मौसम बड़ा बेईमान है... आज मौसम..... अब तो हल्की-हल्की बारिश भी होने लगी और हमें लगा ईश्वर ने हमारी मुराद पूरी कर दी। सघन बादलों और हल्की बारिश के मिलन से आस-पास का सारा वातावरण मनोहारी हो गया था। हमने चोटी से ही उस मनोरम परिदृश्य का काफी देर तक आनंद लिया। अब ये बादल और बारिश नानेघाट के उस जीरो प्वाइंट की ओर बढ़ रहे थे, जहाँ रिवर्स वॉटरफॉल बनता है। हमने भी उस जीरो प्वाइंट पर जाने का निश्चय किया। यह जीरो प्वाइंट मुख्य सड़क से लगभग दो किलोमीटर अंदर था, जहाँ केवल पैदल ही जाया जा सकता था। हमने ड्राइवर को गाड़ी सड़क के किनारे ही खड़ी रखने का निर्देश दिया और जीरो प्वाइंट की ओर बढ़ गए।



बारिश अब रुक चुकी थी। हल्की-सी धूप भी खिलने लगी थी, इसलिए हमने अपने रैनकोट गाड़ी में ही छोड़ दिए थे और नानेघाट के मुख्य प्वाइंट (जीरो प्वाइंट) की ओर चल दिए। अब हम नानेघाट के जीरो प्वाइंट पर पहुँच चुके थे। हमें जीरो प्वाइंट पर कुछ बंदर और कुत्ते दिखाई दिए। वे शायद पर्यटकों द्वारा दी जाने वाली खाने-पीने की वस्तुओं के कारण वहाँ हमेशा मौजूद रहते हों। हमें वे दोनों यूट्यूबर साथी भी उसी प्वाइंट पर मिल गये। वे अपने चैनल के लिए वीडियो शूट कर रहे थे और लाइव दे रहे थे। यहाँ भी दूसरी ओर उध्वाधर गहरी खाई थी, जिसमें झरना गिरता है। साथ ही यहाँ से नीचे की ओर का दृश्य भी बेहद सुहावना लग रहा

था। ये क्या... अचानक बादलों का एक और विशालकाय झुण्ड जीरो प्वाइंट की चोटियों की ओर उमड़ने लगा। उसने देखते ही देखते उन चोटियों का आलिंगन कर लिया था। इसे देखकर मुझे कालीदास के कालजयी काव्य मेघदूत की याद आ गई। अब तेज हवा के झोंखों के साथ बारिश भी होने लगी। हमने अपने मोबाइल फोन उन यूट्यूबरों से माँगी हुई एक पॉलीथिन की थैली में रख दिए थे। हम सभी बारिश में भीगने लगे। तेज हवा के साथ झरने का पानी उल्टी दिशा में उड़ने लगा और इससे जिस नज़ारे का निर्माण हुआ, वही रिवर्स वॉटरफॉल/उल्टा झरना था। इसी नयनाभिराम नज़ारे का आकर्षण हमें वहाँ खींच लाया था। अचानक बने इस मौसमी मिजाज ने हमारा यहाँ आना सार्थक कर दिया था। अब हमें पैसे-वसूल होने वाली फीलिंग आ रही थी। हम सभी इस खूबसूरत नज़ारे का दीदार कराने के लिए ईश्वर का धन्यवाद करने लगे।

दरसल नानेघाट के पहाड़ों से पानी जिस दिशा की तरफ गिरता है, उससे उल्टी दिशा में वहाँ हवा का रुख रहता है, जिसके कारण पानी हवा के दबाव में हल्की-हल्की बूँदों और वाष्प बनकर उल्टी दिशा में ऊपर की ओर उड़ने लगता है और पानी के उल्टी दिशा में ऊपर की ओर उड़ने का यही दृश्य, नयनाभिराम होता है, जो प्रकृति के नैसर्गिक नियमों को चुनौती देता प्रतीत होता है।

हमें पहले तो बारिश में भीगने में आनंद आ रहा था, लेकिन जैसे-जैसे हवा लगने लगी, हमें सर्दी महसूस होने लगी। हम काँपने लगे। अब हमने वापस आने का निश्चय किया। रिवर्स वाटरफॉल के उस नयनाभिराम नैसर्गिक दृश्य को आखों में संजोए, भीगे बदनो से हम वापस गाड़ी के पास लौट आए। वहाँ कपड़े बदलने का कोई स्थान नहीं था। इसलिए गीले कपड़ों से ही गाड़ी में बैठकर लगभग दो घंटे की यात्रा की। फिर लगभग चार बजे एक रेस्त्रां पहुँचकर उसके बाथरूम में स्नान कर कपड़े बदले। उस रेस्त्रां में एक बार फिर महाराष्ट्रीयन भोजन का जायका लिया और शाम 6 बजे तक हम वापस होटल पहुँच चुके थे।

\*\*\*\*\*



Shreyas contest 2023  
Painting - 1st prize



**Sankernath S**  
SWO-A  
Kunnumpuram



Shreyas contest 2023  
Painting - 2nd prize



**Murugan G**  
SWO-A  
Trivandrum Muttada



Shreyas contest 2023  
Sketch - 1st prize



**Seema Sharma**  
Officer  
Kolkata –III RO



Shreyas contest 2023  
Sketch - 2nd prize



**Rasika N**  
Officer  
Srirangam



Shreyas contest 2023  
Color Photography  
1st prize



**Arjun K R**  
SWO-A  
Punalur



Shreyas contest 2023  
Color Photography  
2nd prize



**Rochak Dixit**  
Manager  
Service Units Section  
Bengaluru, HO

## “Karnataka Special” Hagalakayi Ennegayi (Bitter Gourd Curry)



**S Vijaya**

CSA  
HML Section  
HO, Bengaluru



### INGREDIENTS :

- ◆ Bitter Gourds -2
- ◆ Groundnut-8 to 10 tsps
- ◆ Garlic- 8 Cloves
- ◆ Onion (medium Sized) - 2
- ◆ Grated coconut-1 cup
- ◆ Tamarind – small lemon size soaked in ½ cup of water for about 10 mins
- ◆ Jaggery powder- 5 tsps
- ◆ Red chilli (Guntur)- 4 nos
- ◆ Red chilli (Byadagi)- 5 nos
- ◆ Green chilli (small)-2 nos
- ◆ Mustard seeds- ½ tsp
- ◆ Turmeric – 1 Tsp
- ◆ Refined Oil – 2 tbsp
- ◆ Water – 1 cup
- ◆ Salt to taste

### Method of preparation :

- Wash the Bitter gourd and cut it into whole round pieces, 2 inches each.
- Deseed and marinate with ½ teaspoon turmeric and salt and let it rest for 20 - 25 mins.

- Wash the bitter gourd (this helps in reducing the bitterness of the bitter gourd)

### For the Stuffing :

In a pan dry roast 2 types chillies, green chilli, groundnut and garlic for a minute and allow it to cool. Grind the grated coconut, roasted mixture and salt in a mixer without adding water. Now stuff the Bitter gourds with the above mixture.

- In a frying pan add 2 tbsp of oil. Once hot temper with mustard seeds and allow it to crack. Add the chopped onions, and ½ tsp of turmeric powder, sauté till golden brown.
- Add the stuffed bitter gourd in the frying pan and remaining mixture(stuffing) to the pan, mix it well and cover with a lid. Cook it for about 10 mins in low flame stirring occasionally.
- After 10 mins, add a glass of water, jaggery powder, and the strained tamarind water. Mix gently, close and allow to simmer for five minutes till the oil gets separated.
- Finally, garnish with coriander leaves.

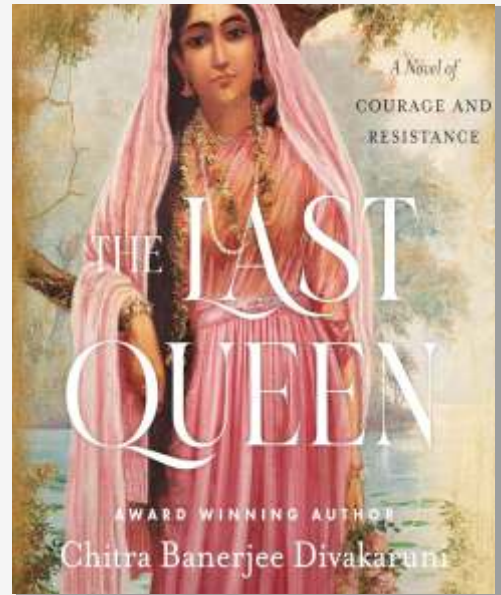
**Bitter Gourd Ennegai** is ready to serve. Enjoy this delicious dish with hot chapatti or Rice.

\*\*\*\*\*

# The Last Queen

— Chitra Banerjee Divakaruni

“The Last Queen” is about the untold story of Rani Jindan and many facets of her life, her decisions, emotions as a child, bride, queen and then a rebel, and moreover her longing as a mother. The author Chitra Banerjee Divakaruni has everything ornately described in words that seemed to flow seamlessly. Divakaruni, known for her richly detailed and evocative storytelling, brings to life the dramatic and tumultuous period of the mid-19th century in India. Rani Jindan did not take perfect decisions with respect to matters of the state and the author very well narrates her flaws too. Her journey from a village girl to a powerful queen, and eventually to a fiercely protective mother fighting for her son's rights, is portrayed with emotional depth and historical accuracy.



MRP: ₹450 | Pages: 380  
Language: English | Genre: Historical Novel

The narrative is well-researched, shedding light on lesser-known aspects of Indian history and the significant yet often overlooked role of women in that era. The reader gets to visualise the entire era in which the events happened. “The Last Queen” explores themes of love, betrayal, and the enduring fight for justice, making it not only a historical recount but also a universal tale of human strength and spirit. Critics have appreciated Divakaruni's ability to blend historical facts with compelling storytelling, making the novel both educational and engaging. For readers interested in historical fiction and powerful female protagonists, “The Last Queen” offers a gripping and enlightening read.

In conclusion, “The Last Queen” weaves a rich tapestry of Indian history through the compelling story of Rani Jindan. The novel's pacing ensures that the readers remain engaged, while the prose paints a vivid picture of the landscape, culture and societal dynamics of the time. The novel leaves you in awe, parking curiosity about the palaces of that era and the lifestyle of the time. You will find yourself searching the web to discover how the real Rani Jindan looked and what the Sheesh Mahal was like. Delving into a piece of history is always fascinating, providing a thrilling glimpse into how our forefathers lived on the same soil we inhabit today. This novel resonates with the contemporary readers too, making it a valuable addition to the literary canon.



By Winnie Panicker



**Shreyas, in homage to Canbank's departed souls,  
 pray that they rest in bliss, in eternal peace.**

**Death, said Milton, is the golden key  
 that opens the palace of eternity.**

Name	Staff No	Designation	Branch	Expired on
MALATHI. P.	109023	CSA	SIVAGIRI	14-02-2024
YOGRAJ	92556	SR MANAGER	HEAD OFFICE BENGALURU	22-02-2024
JOGYESWAR KALITA	68093	SR OFF ASST	SIBSAGAR	08-03-2024
BAPPY KUMAR	100703	HK CUM OFF ASST	GODDA	08-03-2024
DEEPAK BAPANA	77206	SR MANAGER	CHENNAI PERAMBUR	09-03-2024
GAYATHRI DEVI.P	81550	SR MANAGER	RETAIL ASSETS HUB CHENNAI-1 (ANNA SALAI)	13-03-2024
ANIL G.KUKUDKAR	76945	DVR-CUM OFF ASST	MUMBAI PALIHILL	16-03-2024
NARESH BASFORE	538763	OFFICE ASSISTANT	GUWAHATI LOKHRA CHARALI	16-03-2024
ANIKET KUMAR	834983	OFFICER	KHAIRA	19-03-2024
M. ROBERT	741372	HK CUM OFF ASST	CHITTOOR DARGA JUNCTION	27-03-2024
ASHISH KUMAR	104264	OFFICER	AURAIYA	02-04-2024
POONAM	606163	HK CUM OFF ASST	DELHI HARSH VIHAR	05-04-2024
G. MAHESH KUMAR	108631	OFFICER	MALUR	08-04-2024
SRINIVASA MURTHY N.V	59616	SR OFF ASST	BENGALURU TINDLU	11-04-2024
RAGHUNATH C PATTAR	73308	SR OFF ASST	SPL SME BRANCH VIJAYAPURA ASHRAM RD	13-04-2024
ARJUN K RAJPUT	101061	HK CUM OFF ASST	BIJAPUR MAIN	13-04-2024
RASIKLAL MANJIBHAI SOLANKI	652940	CSA	DHRANGADHRA	24-04-2024
CHANDRAHASA	68706	SSR OFF ASST	MANGALURU CUR CHEST	27-04-2024
SURESH KRISHNAN	60206	OFFICER	CBD BELAPUR NAVI MUMBAI	30-04-2024
RAJENDRA PRASAD	519638	OFFICE ASSISTANT	KAILY	02-05-2024
VIKAS KUMAR	94897	SR MANAGER	RETAIL ASSETS HUB MATHURA	04-05-2024
BHANWAR SINGH RATHORE	603320	ARD GRD/SEC GRD	BIKANEER GAJNER RD	11-05-2024
KORAGAPPA NAIK	606314	HK CUM OFF ASST	BALPA	17-05-2024



प्रधान कार्यालय, बेंगलूरु में दिनांक 02.04.2024 को आयोजित नए उत्पाद लॉन्च कार्यक्रम में स्वामी श्री सुखबोधानंद का स्वागत करते हुए प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री के सत्यनारायण, राजु। कार्यपालक निदेशक श्री देबाशीष मुखर्जी, श्री अशोक चंद्र, श्री हरदीप सिंह अहलूवालिया एवं श्री भवेंद्र कुमार भी तस्वीर में नजर आ रहे हैं।

MD & CEO Sri. K Satyanarayana Raju welcoming Swami Sri. Sukhabodhananda to the New Product Launch Event held on 02.04.2024 at HO Bengaluru. EDs Sri. Debashish Mukherjee, Sri. Ashok Chandra, Sri. Hardeep Singh Ahluwalia, and Sri. Bhavendra Kumar also seen in the picture.



दिनांक 14.04.2024 को प्रधान कार्यालय बेंगलूरु में आयोजित डॉ. आंबेडकर जयंती समारोह के अवसर पर प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री के. सत्यनारायण राजु और अन्य गणमान्य व्यक्ति।

"MD & CEO Sri. K Satyanarayana Raju and other dignitaries on the occasion of Dr. Ambedkar Jayanti Celebration held at HO Bengaluru on 14.04.2024"

केनरा बैंक  
Canara Bank  
A Government of India Undertaking  
Together We Can

Canara's Healing Touch  
Your Health — Our Priority

Canara  
**HEAL**  
HEALTHCARE LOAN

- Meets shortfall of hospitalization expenditure while settling through TRA health insurance claims of self and/or dependents
- Quantum: up to ₹ 5 lakh
- No branch visit. 24x7 end-to-end digital processing
- Repayment: up to 36 months
- Direct remittance to hospital for hassle-free discharge

90760 30001 | 1800 1030

केनरा बैंक  
Canara Bank  
A Government of India Undertaking  
Together We Can

Term Loan  
Against Deposit  
Through Digital Platform

₹ Canara  
MYMONEY  
Instant Term Loan Against Deposit

- Loan, overdraft & term loan
- Complete digital processing
- Zero paperwork
- 24x7x365 availability

90760 30001 | 1800 1030

केनरा बैंक  
Canara Bank  
A Government of India Undertaking  
Together We Can

EMPOWERING WINGS  
OF LIFE'S ANGELS

Canara  
*Angel*  
Dream beyond boundaries

Women's  
Savings  
Bank Account

**Special Features**

- Cancer Care Insurance upto ₹10 Lakhs
- Personal Accident Insurance upto ₹26 Lakhs\*
- Free NEFT/RTGS/IMPS
- Unlimited free Locker Operations
- Discount upto 15% on Locker Rental Charges

**CANCER CARE & ACCIDENT COVER**

**Unique Features**

- Card based free health check up
- Free Platinum Rupay Card
- Family banking services with complementary zero balance for upto 3 family members (Spouse or Children)
- Free SMS alerts
- Exclusive Card offers from Top Brands like Urban Company, Myntra, Amazon, Swiggy, Book My Show

Offers Galore

90760 30001 | 1800 1030

केनरा बैंक  
Canara Bank  
A Government of India Undertaking  
Together We Can

Monument ticket booking  
using Canara UPI123PAY

Canara  
**UPI**  
123PAY  
ASI  
Instant Tickets  
for all ASI Monuments

- Dial 70224 59111
- Select Language (Hindi/English)
- Enter Monument ID
- Enter Number of Adults
- Enter Number of Children
- Confirm Final Amount
- Enter UPI PIN to Pay
- Monument Ticket & Booking details will be sent to your Registered Mobile No.

90760 30001 | 1800 1030

केनरा बैंक  
Canara Bank  
A Government of India Undertaking  
Together We Can

YOUR LOAN  
IS JUST A TOUCH AWAY...

Canara  
**READYCASH**  
PRE-APPROVED PERSONAL LOAN

- Existing Canara Bank salaried customers are eligible
- Loan Amount: Min: ₹ 50,000 Max: ₹ 10 Lakh
- Tenure: Minimum - 12 months Maximum - 60 months
- Repayment: Monthly
- Low and attractive rate of interest

90760 30001 | 1800 1030